

C O N T E N T S

**Sixteenth Series, Vol. XVIII, Ninth Session, 2016/1938 (Saka)
No. 4, Thursday, July 21, 2016/ Ashadha 30, 1938 (Saka)**

<u>S U B J E C T</u>	<u>P A G E S</u>
ORAL ANSWERS TO QUESTIONS	
*Starred Question Nos. 61 to 63 and 73	12-71
WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS	
Starred Question Nos. 64 to 72 and 74 to 80	72-119
Unstarred Question Nos. 691 to 920	120-613

* The sign + marked above the name of a Member indicates that the Question was actually asked on the floor of the House by that Member.

PAPERS LAID ON THE TABLE 614-619

STATEMENTS BY THE MINISTER

Status of implementation of the recommendations contained in the 7th and 11th Reports of the Standing Committee on Coal and Steel

Shri Piyush Goyal 620

ELECTION TO COMMITTEES 621-625

(i) Committee on Estimates 621

(ii) Committee on Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes 622

(iii) Committee on Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes 623

(iv) Committee on Welfare of Other Backward Classes 624

(v) Committee on Welfare of Other Backward Classes 625

DISCUSSION UNDER RULE 193

Situation arising out of recent violence in Kashmir Valley resulting in threat to peace and security of people of the State

Shri Rajnath Singh 627-638

SUBMISSION BY MEMBER

Re: Disparaging remarks made by BJP State Vice-President, U.P. against BSP Leader 644-645

MATTERS UNDER RULE 377

(i) Need to ensure regular meeting of district committees for monitoring the progress of rural electrification in the States particularly in Sant Kabir Nagar district, Uttar Pradesh

Shri Sharad Tripathi 675

- (ii) Need to implement scheme of labour - material ratio to 49:51 under Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Scheme (MGNREGS) and also include fencing work in the list of works approved under MGNREGS
- Shri Om Birla
- 676
- (iii) Need to appoint teachers in 'Zila School' - the alma mater of the first President of India in Chhapra district of Bihar and develop it as a model school
- Shri Om Prakash Yadav
- 677
- (iv) Need to introduce online system of booking appointment with doctors and also provide online medical facilities in state and district hospitals
- Dr. Manoj Rajoria
- 678
- (v) Need to run Muzaffarpur - Anand Vihar Garib Rath Express train on daily basis
- Shri Satish Chandra Dubey
- 679
- (vi) Need to impress upon Government of Uttar Pradesh to provide irrigation facilities to farmers in Nanauta block in Saharanpur district of the State
- Shri Raghav Lakhanpal
- 680
- (vii) Need to ensure payment of compensation to farmers who lost their crops to hailstorms and excess rain in Bundelkhand region of Uttar Pradesh particularly in Jalaun parliamentary constituency
- Shri Bhanu Pratap Singh Verma
- 681

- (viii) Need to provide clean and safe drinking water to people in Kairana parliamentary constituency, Uttar Pradesh
- Shri Hukum Singh 682
- (ix) Need to set up a procurement centre of FCI at Farrukhabad in Uttar Pradesh
- Shri Mukesh Rajput 683
- (x) Need to frame a comprehensive policy for education and rehabilitation of child labour in the country
- Dr. Virendra Kumar 684
- (xi) Need to launch a special drive for recruitment of youth of Jammu and Kashmir in Defence and para-military forces of the country
- Shri Jugal Kishore 685
- (xii) Need to extend Shivganga express upto Singrauli via Robertsganj and Prayagraj Express upto Daltonganj
- Shri Chhote Lal 686
- (xiii) Need to provide compensation to farmers who lost their crops to drought in Uttar Pradesh
- Shri Bhairon Prasad Mishra 687
- (xiv) Need to solve the problems relating to establishment of Railway Junction at Oorukere in Tumakuru taluk of Karnataka
- Shri S.P. Muddahanume Gowda 688

- (xv) Need to establish a Division Level Post Office at Chamarajanagar district headquarters in Karnataka
Shri R. Dhruvanarayana 689
- (xvi) Need to construct a new dam at the site of Mullaperiyar dam
Shri Anto Antony 690
- (xvii) Need to ensure adequate availability of water in Palar River in Tamil Nadu and also expedite Pennayar - Palar Link Canal Project
Shri B. Senguttuvan 691
- (xviii) Regarding holding of Jallikattu events in Tamil Nadu
Shri R. Parthipan 692
- (xix) Regarding evolving a mechanism for sharing cess on coal with the coal bearing State
Shri Bhartruhari Mahtab 693
- (xx) Need to look into the implementation of Modified Flexible Complementing Scheme in Indian Meteorological Department
Shri Arvind Sawant 694-95
- (xxi) Need to honour K.D. Jadhav, the renowned Olympic wrestler with Padma Award
Shri Raju Shetty 696

NATIONAL INSTITUTES OF TECHNOLOGY, SCIENCE EDUCATION AND RESEARCH (AMENDMENT)BILL, 2016	697-828
Motion to Consider	697
Shri Prakash Javadekar	697-701, 815-827
Dr. Shashi Tharoor	702-711
Dr. Kambhampati Haribabu	712-716
Shri S. Selvakumara Chinnaiyan	717-719
Prof. Sugata Bose	720-725
Shri Baijayant Jay Panda	726-731
Shri Muthamsetti Srinivasa Rao(Avanthi)	732-738
Shri Chandrakant Khaire	739-741
Shri Konda Vishweshwar Reddy	742-744
Shri P. K. Biju	745-749
Shrimati Butta Renuka	750-753
Shri Jai Prakash Narayan Yadav	754-756
Shri Ninong Ering	757-760
Dr. Udit Raj	761-763
Shri Prem Das Rai	764-766
Dr. Arun Kumar	767-768
Shri Badruddin Ajmal	769-772
Shri Rattan Lal Kataria	773-775
Shri Santosh Kumar	776-777
Shri Dushyant Chautala	778-780
Shri Rajesh Ranjan	781-784
Shri Hukum Singh	785-788
Shri Adhir Ranjan Chowdhury	791-794

Dr. Kirit P. Solanki	795-798
Shri N.K. Premachandran	799-814
Clauses 2 and 1	828
Motion to Pass	828

ANNEXURE – I

Member-wise Index to Starred Questions	829
Member-wise Index to Unstarred Questions	830-835

ANNEXURE – II

Ministry-wise Index to Starred Questions	836
Ministry-wise Index to Unstarred Questions	837

OFFICERS OF LOK SABHA

THE SPEAKER

Shrimati Sumitra Mahajan

THE DEPUTY SPEAKER

Dr. M. Thambidurai

PANEL OF CHAIRPERSONS

Shri Arjun Charan Sethi

Shri Hukmdeo Narayan Yadav

Shri Anandrao Adsul

Shri Pralhad Joshi

Dr. Ratna De (Nag)

Shri Ramen Deka

Shri Konakalla Narayana Rao

Shri Hukum Singh

Shri K.H. Muniyappa

Dr. P. Venugopal

SECRETARY GENERAL

Shri Anoop Mishra

LOK SABHA DEBATES

LOK SABHA

Thursday, July 21, 2016/Ashadha 30, 1938 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[HON. SPEAKER *in the Chair*]

...(व्यवधान)

DR. P. VENUGOPAL (TIRUVALLUR): Madam we have given notice...
(Interruptions)

HON. SPEAKER: I know it. I will allow everybody to speak during 'Zero Hour'.

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : जीरो ऑवर में मौका मिलेगा।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : सभी को जीरो ऑवर में मौका मिलेगा।

...(व्यवधान)

श्री रमेश बिधुड़ी (दक्षिण दिल्ली) : महोदया, दिल्ली में बहुत सेन्सिटिव मुद्दा है।...(व्यवधान) दिल्ली के अन्दर अराजक सरकार चल रही है।...(व्यवधान) दिल्ली के आप पार्टी के विधायकों के खिलाफ महिलाओं के हरैस्मेंट के मुकदमें दर्ज हो गए हैं।...(व्यवधान) एक महिला ने परसों सुसाइड किया।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप बैठिए। आपको शून्य काल में मौका दे दूँगी। अब आप बैठिए।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपको शून्य काल में मौका दे दूँगी।

...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Now, Question Hour.

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : कृपया, आप बैठ जाइए। शून्य काल में आपको मौका मिलेगा।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : क्वेश्चन नम्बर 61, श्री हरीश मीना जी।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपको भी मौका दे दूँगी, आपका प्राइस राइज का मुद्दा है, मायावती जी का कुछ बोल रहे हैं।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप बैठ जाइए। अभी रिकॉर्ड में नहीं जा रहा है। आप शून्य काल में बोलिए। अगर आप अभी बोलोगे तो वह रिकॉर्ड पर नहीं जाएगा।

...(Interruptions)... *

* Not recorded.

11.01 hours**ORAL ANSWERS TO QUESTIONS****HON. SPEAKER:** Question No. 61, Shri Harish Meena.**(Q.61)**

श्री हरीश मीना : महोदया, आपने मुझे प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न उठाने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। जब यह योजना बनी थी तो इसके पीछे उद्देश्य यह था कि गाँव का, गरीब का, किसान का जो जीवन है, वह सरल हो जाएगा और उसको सहूलियत मिलेगी। मंत्री जी ने जो जवाब दिया है, उसे मैंने देखा है, उसमें उन्होंने बताया है कि इतने लाख रूपए खर्च हो गए, इतने किलोमीटर सड़क बन गई।

महोदया, यह रूपया खर्च तो हुआ है, इसका उपयोग तो हुआ है, लेकिन इसका सदुपयोग हुआ है या दुरुपयोग हुआ है, इसका कोई ब्यौरा मुझे इसमें नहीं मिला है। इसी तरह से इतने हजार किलोमीटर सड़क बनी। यह सड़क गाँव वालों की आवश्यकतानुसार बनी है या किसी की सुविधानुसार बनी है या किसी की मेहरबानी से बनी है, इसका भी कहीं इसमें ब्यौरा नहीं है। मेरा मंत्री जी से यह सवाल है कि जब सड़क बनाते हैं तो उसका उद्देश्य क्या होता है, उसका उद्देश्य यह होता है कि गाँव को स्कूल की सुविधा मिले, जो निकटतम हायर सेकेण्डरी स्कूल है, उसे सड़क से जोड़ा जाए, जो निकटतम प्राइमरी हेल्थ सेन्टर है, उसको सड़क से जोड़ा जाए या गाँवों के बीच में से जो नेशनल हाइवेज गुजर रहे हैं, उनको छोटे-छोटे गाँवों से जोड़ा जाए। क्या मंत्री जी प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत कोई मापदण्ड तय करने का विचार रखते हैं या नहीं रखते हैं? धन्यवाद।

श्री राम कृपाल यादव : महोदया, माननीय सदस्य ने चिन्ता जाहिर की है, खास तौर पर प्रधान मंत्री ग्रामीण सड़क योजना के अन्तर्गत गाँव के अन्तिम इलाके को जोड़ने के लिए। प्रधान मंत्री ग्रामीण सड़क योजना का मूल उद्देश्य यही है कि गाँव तक सड़कों को जोड़ना, उनके जीवन स्तर को उठाना और उसी मार्ग निर्देशन के अनुसार प्रधान मंत्री ग्रामीण सड़क योजना का कार्य कार्य योजना बनाकर के धनराशि आवंटित करके उनके जीवन स्तर को उठाने का भरपूर प्रयास किया गया है।

अब तक जो कार्यक्रम प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के अंतर्गत चलाए गए हैं, उनके बारे में मैंने विस्तार से अपने उत्तर में दिया है, मैं उसे दोहराना नहीं चाहता।

महोदया, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य से निवेदन करना चाहता हूँ कि आपने जो चिन्ता जाहिर की है कि प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना का मूल उद्देश्य क्या है तो प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के मूल उद्देश्य की मैंने चर्चा की है। गाँवों के स्तर से सड़कों को जोड़ने के अलावा भी गाँवों में जो

पंचायत भवन हैं, सामुदायिक भवन हैं, खेल सेन्टर हैं, श्मशान हैं, स्कूल भवन हैं, इन सबको भी जोड़ने की चिंता आपने ज़ाहिर की है। मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य को यह आश्वस्त करता हूँ कि अभी हाल के दिनों में जो एडवाइज़री ज़ारी की गयी है, उसमें यह कहा गया है कि गांव के अंतिम छोर पर, चाहे वह स्कूल का भवन हो, पंचायत भवन हो, आंगनबाड़ी सेविका के लिए बनने वाला भवन हो, श्मशान घाट हो या हिल सेन्टर हो, सब सड़कों को जोड़ने के लिए निर्देशिका ज़ारी कर दी गयी है। अब मैं माननीय सदस्य को आश्वस्त करना चाहता हूँ कि अगर आपको लगता है कि कोई विशेष परियोजना आपके क्षेत्र में है तो उसे आप दें। मैं उसे जोड़वाने का प्रयास करूंगा।

श्री हरीश मीना : मैडम, मैं राजस्थान से आता हूँ। राजस्थान की आबादी का घनत्व और प्रदेशों के मुकाबले कम है। इसमें जो मापदंड तय किए गए हैं कि वर्ष 2001 की जनगणना में जिन गांवों की जनसंख्या 500 से ज्यादा हैं तो अभी तो वर्ष 2011 की जनगणना की रिपोर्ट भी आ गयी है। अब राजस्थान की आबादी, जैसे हम लोग हैं तो हमारी आबादी बढ़ने में टाइम लगेगी। जो प्रिमियम हैं, जो ज्यादा आबादी बढ़ाते हैं, उनके यहां तो सड़कें जल्दी बनेंगी। हमारे राजस्थान में गांवों का सिस्टम नहीं है, ढाणियों का सिस्टम है। हर आदमी अपने खेत में रहता है। वहां बड़े गांव नहीं हैं।

मैं मंत्री महोदय से रिक्वेस्ट करूंगा कि कृपया राजस्थान के लिए कुछ रिलैक्सेशन दें ताकि हमें भी इस विकास का लाभ मिल सके।

श्री राम कृपाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदया, माननीय सदस्य को मैं अवगत कराऊंगा कि वर्ष 2001 की जनगणना के आधार पर प्रथम फेज की जो सड़क का निर्माण किया गया है, उसमें अभी तक राजस्थान की 351 ऐसी परियोजनाएं हैं, जिनका डी.पी.आर. बन कर नहीं आया है। आपने जो चिंता ज़ाहिर की है कि आपकी आबादी बढ़ रही है तो समस्या भी निश्चित तौर पर बढ़ेगी। इस बात से मैं बिल्कुल सहमत हूँ।... (व्यवधान) मैं समझता हूँ कि माननीय सदस्य ने जो चिंता की है तो इसकी जो गाइडलाइन है, उस गाइडलाइन के अनुसार तो सड़कों का निर्माण हो रहा है। राजस्थान में काफी राशि भी गयी है और काफी सड़कों का निर्माण भी हुआ है।

मैं यह बताना चाहूंगा कि देश के पैमाने पर कुछ एक गाइडलाइन है, उसमें राजस्थान भी आ रहा है। कुछ सड़कों के चयन में हम प्राथमिकता दे रहे हैं। राजस्थान में 15 ऐसे जिले और 89 ऐसे ब्लॉक्स हैं जहां डी.पी.पी. योजना के तहत 89 ब्लॉक्स में 250 से 499 की आबादी वाले टोले, ढाणियों में पी.एम.जी.एस.वाई. के तहत सड़कों के निर्माण के लिए योजना मांगी गयी है। उसके लिए डी.पी.आर. बनाया जा रहा है। यही नहीं, डी.डी.पी. योजना के अंतर्गत, जिसकी चर्चा मैं कर रहा हूँ, उसमें जो ब्लॉक्स

हैं, उनमें बीकानेर के 14, नागौर के 11, जोधपुर के 10, पाली के 10, सीकर के 8, और जालौर के 8 ब्लॉक्स हैं। ये तमाम जो आबादी है, उसको जोड़ने के लिए गाइडलाइन दे दी गयी है। डी.पी.आर. मांगे जा रहे हैं। डी.पी.आर. आते ही राशि स्वीकृत हो जाएगी और उन गांवों को सड़कों से जोड़ने का काम किया जाएगा।

श्री प्रेम सिंह चन्दूमाजरा: अध्यक्ष महोदया, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का उद्देश्य है, जो फॉर्मर प्राइम मिनिस्टर श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने इस देश के सामने लाया, मैं समझता हूँ कि उनके हम आभारी हैं, क्योंकि गांवों को शहरों से जोड़ने से कृषि में बढ़ावा होता है, जिसकी जरूरत थी। मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से एक निवेदन करना चाहता हूँ कि अमली रूप में इसमें कुछ प्रैक्टिकल खामियां हैं। जैसे दस मीटर की जो चौड़ाई रखी गयी है तो पंजाब जैसे बहुत सारे प्रदेश हैं जिनमें कोई रास्ता आठ मीटर से ज्यादा नहीं है। वहां ज़मीन एक्वायर नहीं कर सकते तो वहां हम सड़कें बना नहीं पाते। ऐसे ही रिपेयर के लिए, समाचार-पत्रों में आया कि पी.एम.जी.एस.वाई. की 70% रोड्स खराब पड़ी हैं। उनमें खड्डे पड़े हैं। उसे स्टेट गवर्नमेंट रिपेयर नहीं कर पाती है। ऐसे ही अनयूज्ड लैंड जो बच जाती है, उसको कोई काम में नहीं लाया जाता है। मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूँ कि क्या कुछ गाइडलाइन चेंज हो सकती है, जिससे प्रैक्टिकली यह काम आ पाए? जब चौधरी देवीलाल जी हरियाणा के मुख्यमंत्री थे, उन्होंने 50 पर्सेंट, जो साथ का किसान था, उसको देने की बात की थी, वह उससे पेट पालता था। ऐसे ही यह 8 मीटर हो जाए तो अच्छा है।

माननीय अध्यक्ष : आप प्रश्न पूछिए।

श्री प्रेम सिंह चन्दूमाजरा: महोदया, हमारी पंजाब सरकार ने प्रपोजल भेजा है, जो सारे देश में हो सकता है। नहरों के किनारे पक्के हो जाएं, तो इसमें नहरें बच सकती हैं, जमीन भी बच सकती है। ऐसे ही हमारी जो नई प्रपोजल दो हजार किलोमीटर की हैं, जैसे बार्डर स्टेट्स हैं, उनको कंसीडर करना चाहिए। मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से यही जानना चाहता हूँ कि जो गाइडलाइंस हैं, जिससे प्रैक्टिकल तौर पर लोगों को उसका फायदा हो पाए, इसमें जो दिक्कतें आ रही हैं, क्या उसको दूर करने के लिए सरकार कोई नई गाइडलाइन तैयार कर रही है?

श्री राम कृपाल यादव : माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य को आश्वस्त करना चाहता हूँ कि हमारी जो गाइडलाइन है, उसके अनुसार सड़कों के निर्माण के लिए पहले की अपेक्षा हमने ज्यादा धनराशि आबंटित की है। ...(व्यवधान) मैडम, जो गाइडलाइन है, उसके अनुसार समय-समय पर सड़कों के निर्माण के लिए धनराशि पर्याप्त मात्रा में दी जा रही है। निश्चित तौर पर सरकार की यह

प्राथमिकता है कि हमारे जो पहले के मापदण्ड हैं, उनके अनुसार अगर सड़क निर्माण में कोई बाधा आ रही है तो निश्चित तौर पर माननीय सदस्य के माध्यम से, वहां की सरकार के माध्यम से अगर कोई प्रस्ताव आता है तो अगर वह विचारणीय होगा तो हमारी गाइडलाइन के अनुसार हम उस पर विचार करने का काम करेंगे।

ग्रामीण विकास मंत्री, पंचायती राज मंत्री तथा पेयजल और स्वच्छता मंत्री (श्री नरेन्द्र सिंह तोमर): माननीय अध्यक्ष महोदया, चन्दूमाजरा जी ने निश्चित रूप से बड़ी व्यवहारिक समस्या का जिक्र किया है। मैं समझता हूँ कि सदन के अधिकांश सदस्य जानते हैं कि वर्ष 2000 में जब वाजपेयी जी के समय इस योजना का आरम्भ हुआ, तो मुख्य रूप से उद्देश्य यह था कि डामरीकृत सड़क से बसावट को जोड़ा जाए। बसावट हजार प्लस की हो, बसावट पांच सौ प्लस की हो और विशेष क्षेत्र में ढाई सौ तक की जनसंख्या के गांव इस योजना के अंतर्गत आ रहे हैं। उस योजना के अंतर्गत सारे देश में सफलतापूर्वक काम चल रहा है। इसका लाभ पूरे देश के जनजीवन को मिला है। जहां सड़क पहुंची है, वहां लोगों के जीवनस्तर में बदलाव भी आया है। पंजाब में भी बड़ी मात्रा में सड़कें बनी हैं। अभी भी 781 करोड़ रुपए के काम पंजाब राज्य में चल रहे हैं। पीएमजीएसवाई का जो सेकेंड फेज है, उसमें निश्चित रूप से कुछ मानदण्ड दिए गए हैं, जिसमें राज्य की, जिले की और क्षेत्र की आवश्यकता के अनुसार उन सड़कों को लेंगे। भारत सरकार ने तय किया है कि पचास हजार किलोमीटर नई सड़कों का निर्माण करेंगे। मैं समझता हूँ कि उससे चन्दूमाजरा की बात का समाधान सम्भव हो सकता है।

माननीय अध्यक्ष : आर. धुवनारायण जी, क्वेश्चन शार्ट में पूछिए। बहुत से सदस्य इस पर पूछना चाहते हैं।

SHRI R. DHRUVANARAYANA: The hon. Minister in the reply has given the details of the State-wise allocation. The State of Karnataka is facing shortage of funds. In the current year, the Government has allocated only a sum of Rs. 333 crore as against a requirement of Rs. 552 crore. Government has accorded a total sanction of Rs. 1117 crore, but they have not released the money.

So, my question to the hon. Minister is this. What is the action that the Government is taking for releasing the money, especially to the State of Karnataka? We are facing severe problems. Even for the on-going projects, money has not been released by the Government of India.

श्री नरेन्द्र सिंह तोमर : माननीय अध्यक्ष महोदया, राज्य सरकारों से जिस प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रोजेक्ट आते हैं, केन्द्र सरकार मानदण्डों के अन्तर्गत उन पर विचार करती है और समय पर सारी राशि को रिलीज करती

है। कई राज्य ऐसे हैं, जिन राज्यों में बड़ी मात्रा में अप्रयुक्त राशि होती है। अप्रयुक्त राशि का भी प्रयोग हो जाए और उसके कारण उनका कोई काम न रुके, इस दृष्टि से हम चिन्ता करते हैं। लेकिन कर्नाटक राज्य में इस प्रकार की कोई तकलीफ नहीं आएगी, मैं माननीय सदस्य को आश्वस्त करना चाहता हूँ।

श्री अनूप मिश्रा : अध्यक्ष महोदया, यह बहुआकांक्षी परियोजना है जिसे श्रद्धेय अटल जी ने शुरू किया था। बीच में इसमें गड़बड़ हुई और इसके नॉर्म्स बदले गए। लोड बियरिंग कैपेसिटी और उसकी निगरानी की पिछले दस सालों में यूपीए गवर्नमेंट में गुणवत्ता खराब हुई। उसके कारण स्टेट की सड़कों की स्थिति बिगड़ी। उसी समय कुछ सड़कें जहां एक हजार की बसावट थी, छोड़ दी गईं। उन सड़कों को अभी भी यह मानकर नहीं लिया जा रहा है कि गलती हो गई है, अब हम इसे कैसे सुधारें। मेरा निवेदन है कि मध्य प्रदेश में ऐसी कई सड़कें हैं जहां एक हजार से ऊपर की बसावट है। उसके बावजूद सैन्सस के अनुसार उन सड़कों को अभी नहीं जोड़ा गया है। कुछ सड़कें ऐसी हैं जिनकी गुणवत्ता खराब थी। बार-बार उनके बारे में चर्चा हुई, लेकिन उस समय के नॉर्म्स में कुछ शिथिलता लाई गई थी। मैं जानना चाहता हूँ कि वह शिथिलता क्या है? दूसरा, ऐसी सड़कें जो उस समय बसावट के आधार पर नॉर्म्स के अंतर्गत आती थीं और वे छूट गई हैं, क्या उन सड़कों को पुनः लिया जाएगा?

श्री राम कृपाल यादव : मैडम, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य को आश्वस्त करना चाहता हूँ कि भारत सरकार गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए तीन स्तरीय निगरानी रखती है। पहला पीआईयू - वह प्रयोगशाला स्थायी तौर पर बनी हुई है। उसमें व्यक्ति कार्य स्थल पर जाता है। उसकी क्वालिटी मौनीटरिंग करता है, चैक करता है। दूसरा, राज्य स्तर पर योजनाओं को मौनीटरिंग करने का प्रावधान है। तीसरा, राष्ट्रीय स्तर पर एनआरआरडीए द्वारा औचक निरीक्षण किया जाता है। फिर नैशनल क्वालिटी मौनीटर के लिए व्यक्ति की नियुक्ति की जाती है। अगर कोई रिपोर्ट आती है तो उसके आधार पर सख्त कार्यवाही की जाती है। सरकार का स्पष्ट मानना है कि हम गुणवत्ता में कोई समझौता नहीं करेंगे। अगर विशेष परिस्थिति में माननीय सदस्य किसी विशेष योजना की चर्चा करेंगे या बताएं तो हम अपने स्तर पर उसकी जांच करवाएंगे। अगर ऐसी कोई योजना है तो आप हमें बताएं। अगर हजार प्लस की कोई सड़क छूट गई है तो उसकी सूची दें। हम उन सबकी स्वीकृति देने का काम करेंगे।...(व्यवधान)

SHRI MD. BADARUDDOZA KHAN: Madam Speaker, I thank you for giving me this chance to put an important question.

From the reply of the hon. Minister, I find that Rs. 2,623 crore has been allotted to West Bengal for implementation of PMGSY but it is a matter of great regret that neither a single rupee has been allotted to my constituency for the

implementation of the programme nor has anybody consulted me in this regard. Nobody consulted me for the implementation of the programme in my constituency. I have written two letters to the hon. Minister of the Government of India. I have requested the District Magistrate for it. I have raised this question in the general meeting of the Zila Parishad also but nothing has been done for the last two years. Two years have passed.

My straight question is this. Who will protect our democratic right and in what way will it be protected? I want to know this from the hon. Minister.

श्री राम कृपाल यादव : अध्यक्ष महोदया,...(व्यवधान)

HON. SPEAKER : If you want, you can have an Half-an-Hour discussion or something like that. लेकिन आज इतना नहीं होगा। आप बैठिए।

...(व्यवधान)

श्री राम कृपाल यादव : अध्यक्ष महोदया, मैं माननीय सदस्य को आश्वस्त करना चाहता हूँ कि यदि आपको किसी सड़क की गुणवत्ता के विषय में कोई शिकायत है ...(व्यवधान) हम उस पर निश्चित तौर पर विचार करेंगे, जैसा मैंने पहले कहा कि कहीं से भी गुणवत्ता में कोई समझौता नहीं किया जाएगा ...(व्यवधान) यह हमारी सरकार की प्राथमिकता है। ...(व्यवधान) मैं माननीय सदस्य को आश्वस्त करना चाहता हूँ ...(व्यवधान) हम आपकी समस्या के निदान के लिए प्रतिबद्ध है और निश्चित तौर पर उसका निदान होकर रहेगा।

माननीय अध्यक्ष : उनका कहना है कि सदस्यों को भी विश्वास में लेना चाहिए। प्लीज सुनिए।

...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र सिंह तोमर : माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से सदस्यों से अनुरोध करना चाहता हूँ कि वह शांति से प्रश्न पूछें, हम लोग जवाब देने के लिए तैयार हैं लेकिन प्रश्न ध्यान में आना चाहिए।
...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : डॉ. हिना विजयकुमार गावीत जी

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : बदरुद्दोज़ा खान का जो प्रश्न था इसमें संसद सदस्य की भूमिका के बारे पूछा था।

श्री नरेन्द्र सिंह तोमर : माननीय सदस्य ने जो प्रश्न किया था उसका जवाब राम कृपाल जी दे रहे थे।
...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : नहीं ऐसा नहीं होता, प्लीज बैठिए। मैं दुबारा कर रही हूँ इसका मतलब यह नहीं है, प्लीज बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र सिंह तोमर : अधीर रंजन जी कृपा करके सुनिए। माननीय सदस्य ने जो बात कही, वह अपने अधिकार और जानकारी के विषय में की। यह सच है कि प्रधानमंत्री सड़क योजना केन्द्र द्वारा प्रत्यायोजित योजना है और इसलिए इसमें प्रारंभ से ही सांसद का महत्व है। अगर किसी भी राज्य में ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : ऐसा नहीं होता है, आपको घर पर पूछने नहीं आएंगे। आपको सुझाव देना होता है। अधीर रंजन जी बैठिए।

...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Nothing will go on record.

... (Interruptions) ... *

HON. SPEAKER: I will name Shri Adhir Ranjan Chowdhury. Write his name.

... (Interruptions)

HON. SPEAKER: Please, Please, sit down.

... (Interruptions)

श्री नरेन्द्र सिंह तोमर : इसमें पहले से भी प्रावधान है कि सांसद को लेकर सड़क योजना में ... (व्यवधान)
आप बात तो सुनिए, दस सालों तक आपकी ही सरकार थी। हम तो आज आए हैं, पहला प्रावधान बता रहे हैं ... (व्यवधान)।

माननीय अध्यक्ष : अधीर रंजन जी, बैठ जाइए, नहीं, ऐसा नहीं होता है।

...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र सिंह तोमर : अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से आग्रह करना चाहता हूँ कि प्रधानमंत्री सड़क योजना में ऐसा प्रावधान है कि जिस राज्य में यह योजना चल रही है उस राज्य में उस क्षेत्र के सुप्रीन्टेंडेंट इंजीनियर स्तर के अधिकारी सांसद से संपर्क करेंगे और सांसद को साथ में लेकर निरीक्षण करेंगे।
...(व्यवधान)

*Not recorded.

माननीय अध्यक्ष : यदि ऐसा नहीं हो रहा है तो ये देखेंगे, बहुत से लोगों का कहना है।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय मंत्री जी, प्लीज बैठ जाइए, सब लोगों का सब तरफ से हाथ उठ रहे हैं, बात केवल इतनी है कि यहां के निर्देश तो हैं लेकिन कहीं न कहीं इसमें गैप है, आप उसे देख लें, कहीं सतर्कता समिति की बैठकें भी नहीं होती है। आप इतना बोलें कि इसे हम देखेंगे।

...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र सिंह तोमर : माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं भी एक निर्वाचित सांसद हूँ और सांसद की व्यथा को भलीभांति जानता हूँ। जो प्रावधान हैं अगर राज्यों में ठीक प्रकार से पालन नहीं हो रहा है तो केन्द्र सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि राज्यों द्वारा इसका पालन किया जाए।

DR. HEENA VIJAYKUMAR GAVIT : I represent Nandurbar constituency, which is a tribal and hilly area. Even I had received many complaints of poor quality roads of PMGSY. When we actually did a field visit, we found that roads were not only of poor quality but also the length of the road constructed was way less than what was sanctioned. I would like to mention an example. The road that I saw, which was sanctioned for 10 km but the actual construction was only of four km and we could not find 10 km road.

There are few roads like SH3 Shirve-Aalivihir-Khurchimal-Nendvan, which is in Taluka Akalkuan. This road was shown completed on record in 2012. A sum of Rs.10 crore was spent on construction of this road, but the road is not yet constructed.

Also there is a road – MDR 11- to Khumbri, which is in Taluka Dhadgaon, which is completely in a hilly area. Even this road was shown completed on record in 2009 but only WBM work was done.

Madam, in my constituency, out of 216 roads and bridges, there are 33 roads which are not constructed according to the length sanctioned. They were way less than the sanctioned length. Also, there are 28 roads, which despite of spending crores of rupees, which are of substandard quality.

Through you, Madam, I would like to know from the hon. Minister as to why such type of serious complaints are there and also what action the hon. Minister will initiate. Is he going to fix the time frame for taking action on these complaints?

श्री नरेन्द्र सिंह तोमर: माननीय अध्यक्ष महोदया, माननीय सदस्य ने अपने क्षेत्र की काफी लम्पसम बात कही है, लेकिन मैं आपके माध्यम से सदस्य और सदन को अवगत कराना चाहता हूँ कि 'प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना' के अन्तर्गत सड़कों का निर्माण पूरे देश में हो रहा है। इनकी गुणवत्ता ठीक हो और जितनी मंजूर है, उतनी सड़क बने, यह सुनिश्चित करने की कोशिश की जाती है।

महोदया, गुणवत्ता को चेक करने के लिए त्रिस्तरीय मॉनीटरिंग सिस्टम है। जिले और पी.आई.ओ. स्तर पर इसकी मॉनीटरिंग होती है। स्टेट क्वालिटी मॉनीटर इसकी मॉनीटरिंग करता है और नेशनल क्वालिटी मॉनीटर भी इनकी मॉनीटरिंग करते हैं। अभी जब मैं पिछले दिनों मंत्रालय का काम संभाल रहा था, तो देखने में आया कि कुछ सड़कें ऐसी हैं, जो 10 किलोमीटर बनने के लिए मंजूर हुईं, लेकिन वहां की जो भी परिस्थितियां रही हों, वे केवल नौ किलोमीटर ही बनी दिखाई दे रही हैं। मंत्रालय ने ऐसी सड़कों की जानकारी मंगाकर उन्हें चिह्नित किया है। इस मामले में हम निश्चितरूप से विचार कर रहे हैं कि आखिर एक किलोमीटर सड़क नहीं बनी, तो उसका पैसा हमें लेना चाहिए। माननीय सदस्य के क्षेत्र में यदि ऐसी कोई विशेष स्थिति है और जिस प्रकार से उन्होंने यहां कहा, उससे उनकी बातचीत में कुछ गड़बड़ दिखाई दी है। उस हिसाब से यदि कोई शिकायत है, तो वे हमें देंगी, तो हम लोग निश्चितरूप से उसकी जांच कराएंगे।

माननीय अध्यक्ष : इस प्रश्न पर बहुत सारे लोग सवाल पूछना चाहते हैं। यदि आप हॉफ एन ऑवर या ऐसे ही किसी अन्य रूल के अंतर्गत नोटिस देंगे, तो हम इस विषय पर सदन में विस्तृत रूप से चर्चा कराएंगे। यदि आप चाहें, तो नियम 193 में भी हम चर्चा कर सकते हैं।

अभी इस प्रश्न पर मैंने लगभग आधा घंटा अनुपूरक प्रश्न पूछने के लिए समय दिया है। इस पर बहुत सारे माननीय सदस्य अनुपूरक प्रश्न पूछने के लिए हाथ उठा रहे हैं और मेरे पास इस प्रश्न के ऊपर अनुपूरक प्रश्न पूछने वालों की एक लम्बी लिस्ट है, लेकिन मैं इससे ज्यादा समय इस प्रश्न पर और पूरक प्रश्न पूछने के लिए नहीं दे पाऊंगी। आप इस पर डिसकशन के लिए प्रार्थना कीजिए। इस पर एक विस्तृत डिसकशन किया जा सकता है। कृपया आप लोग बैठिए।

मेरा भी कई सालों का अनुभव है। मैं एक बात माननीय सदस्यों को अपने अनुभव से बताना चाहती हूँ। मैं रूरल डैवलपमेंट मिनिस्ट्री की संसदीय स्टैंडिंग कमेटी की चेयरमैन थी। आप जो बात कह रहे हैं, वैसा कई जगह पर होता है, लेकिन हम लोगों की सतर्कता समिति बनी हुई है। अपेक्षा यह की जाती है कि हर तीन महीने में सतर्कता समिति की बैठक हो। सांसद को वह बैठक लेनी होती है। आप मीटिंग करते होंगे, मगर जिस मात्रा में उसकी बैठकें होनी चाहिए, वे नहीं होती हैं। मैं केवल सूचना दे रही हूँ। उस मीटिंग में आप अधिकारियों के साथ बैठकर इस बात का परीक्षण कर सकते हैं और प्रदेश तथा केन्द्र तक आपकी बात आ सकती है। आप उस शस्त्र का अच्छी तरह से उपयोग करें।

पी.एम.जी.वाई. की बराबर चर्चा होनी चाहिए, यदि आप सब चाहते हैं, तो कृपया आप इस विषय पर नोटिस दे दीजिए। हम इस पर जरूर एक अच्छी चर्चा करेंगे और हमारे माननीय मंत्री जी वास्तव में अनुभवी और अच्छे मंत्री हैं। वे गम्भीरता से काम करने वाले हैं। वे आपकी भावनाओं को जरूर ध्यान में रखेंगे।

माननीय अध्यक्ष : प्रश्न नं. 62, श्री सुशील कुमार सिंह।

(Q.62)

श्री सुशील कुमार सिंह: माननीय अध्यक्ष जी, मंत्री जी ने जवाब में स्वीकार किया है कि देश में बाढ़ से बचाव के लिए 11वीं और 12वीं पंचवर्षीय योजना में जो योजनाएं स्वीकृत हुईं, अभी तक कुल 519 परियोजनाओं का अनुमोदन हुआ है जिनमें से मात्र 297 योजनाएं ही पूरी हुई हैं। देश भर में 45.5 लाख हेक्टेयर संभावित बाढ़ प्रभावित क्षेत्र आंका गया है। आजादी के 70 साल बाद भी दुखद स्थिति यह है कि सरकारों ने अभी तक मात्र 19.59 लाख हेक्टेयर तक ही बाढ़ से बचाव का इंतजाम किया है, यह स्थिति असंतोषजनक है। 1954 में पहली कमेटी बनी, उसके बाद रंगाचारी कमेटी बनी, सारी समितियों की रिपोर्ट आई, एक सोच यह बनी कि बाढ़ से बचाव के लिए स्थायी परियोजनाओं का निर्माण न करके उन पर खर्च न करके सूचना देने की प्रणाली को विकसित किया जाए, लोगों को आगाह किया जाए, सचेत किया जाए। बाढ़ आती है, सरकारी और निजी संपत्तियों का नुकसान होता है और पानी सब कुछ बहाकर ले जाता है। न तो उस पानी का बाढ़ में सदुपयोग होता है और न हम उसे बचाकर या रोककर रख पाते हैं ताकि वह पानी पीने या सिंचाई के काम आ सके। अभी तक की स्थिति संतोषजनक नहीं है। नेपाल में जब भारी बारिश होती है तो बिहार प्रभावित होता है। मंत्री जी ने स्वीकार भी किया है कि नेपाल सरकार के साथ बातचीत चल रही है। अभी तक की स्थिति असंतोषजनक है।

महोदया, 45.5 लाख हेक्टेयर भूमि बाढ़ से प्रभावित भूमि आंकी गई है। मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि क्या इस पंचवर्षीय योजना में एक निश्चित समय सीमा के तहत कार्य योजना बनाकर इसके पक्के इंतजाम की कोई व्यवस्था करेंगे या नहीं? अगर करेंगे तो कब तक?

डॉ. संजीव बालियान: माननीय अध्यक्ष जी, यह सच बात है कि यह प्रोजेक्ट काफी पेंडिंग है। धन का जितना आबंटन 11वीं और 12वीं योजना में होना चाहिए था, नहीं हो पाया है। धन का आबंटन न होने की वजह से ये प्रोजेक्ट समय पर पूरे नहीं हो पाए हैं।

जहां तक बिहार की बात है, नेपाल से बातचीत जारी है। ज्वाइंट इंस्पेक्शन टीम बनी है, सप्तकोशी पर डैम बनाने के लिए नेपाल से बातचीत जारी है। नेपाल के साथ एक और योजना पंचेश्वर डैवलपमेंट अथारिटी बनाई गई है। वहां डैम का निर्माण होगा, यह करीब 30,000 करोड़ रुपए का प्रोजेक्ट है जिसमें 5040 मेगावाट एनर्जी मिलेगी। यह बात जरूर है कि इतने संसाधन, इतना धन सब योजनाओं को पूरा करने के लिए एक साथ नहीं है इसलिए योजनाएं धीरे-धीरे चल रही हैं। इसमें समय आने पर निर्णय लिया जाएगा। जैसे-जैसे धन का आबंटन होगा, उसी के हिसाब से निर्णय लिया जाएगा।

श्री सुशील कुमार सिंह: माननीय अध्यक्ष जी, बाढ़ पर नियंत्रण और बचाव के लिए धन खर्च करेंगे तो उसका बहुत सदुपयोग होगा क्योंकि सरकारी परिसंपत्तियों और निजी संपत्तियों बचेंगी। मेरा निवेदन है कि बाढ़ नियंत्रण, बाढ़ की सुरक्षा के लिए अधिक धन सरकार आबंटित करे।

मैं माननीय मंत्री जी को बताकर जानना चाहता हूँ कि बिहार के भागलपुर जिले के रंगड़ा चौक प्रखंड में मदरौनी गांव कोसी नदी के किनारे है। इस गांव के दोनों तरफ रेल लाइन हैं। एक रेल लाइन पटना से गुवाहाटी जाती है, दूसरी लाइन डिफंक्ट है, जो पहले हुआ करती थी। दोनों रेल लाइनों के बीच कोसी नदी के किनारे यह गांव है, जिसका अस्तित्व समाप्ति की ओर है। जो स्थिति है, उसे देखते हुए कुछ वर्षों में वह गांव ही नहीं रहेगा। पिछले वर्षों में एकाध बार सौ करोड़ रुपये खर्च हुए। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप ज्यादा वर्णन न करते हुए पर्टिकुलर प्रश्न पूछिये।

श्री सुशील कुमार सिंह: मैं पर्टिकुलर प्रश्न ही पूछ रहा हूँ। ... (व्यवधान) अभी इस गांव का सड़क सम्पर्क कट चुका है। बोल्टर पिचिंग का काम हुआ है, जिसमें 14 करोड़ रुपये खर्च हुए लेकिन गांव को बचाया नहीं जा सका।

अध्यक्ष महोदया, आज के अखबार में खबर छपी है कि लोग नाव पर क्षमता से अधिक सवार हो रहे हैं। मैं जानना चाहूंगा कि केन्द्र सरकार बाढ़ सुरक्षा के लिए जो धन देती है, क्या उसकी मौनीटरिंग की भी कोई व्यवस्था है? इसके साथ-साथ गांव मदरौनी को बचाने के लिए केन्द्र सरकार क्या राज्य सरकार को कोई एडवाइजरी या निर्देश देगी?

डॉ. संजीव बालियान: अध्यक्ष महोदया, किसी गांव को बचाने के लिए केन्द्र सरकार की तरफ से कोई नहीं जाता। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : गांव को बचाने के लिए आदेश की क्या आवश्यकता है? उसे बचाना ही है।

... (व्यवधान)

श्री सुशील कुमार सिंह: यह काम प्रदेश सरकार का है। अगर बाढ़ आयेगी, तो निश्चित रूप से जो गांव नदियों के किनारे हैं, उनमें कहीं न कहीं समस्या आयेगी। अगर आप एक जगह तटबंध लगायेंगे, तो दूसरी तरफ से समस्या आ जायेगी। केन्द्र का यह काम है कि सही समय पर सूचना जाये कि बाढ़ आने वाली है। यह हमारा सबसे बड़ा काम है। चूंकि बाढ़ का सारा विषय प्रदेश सरकार का है या फिर होम मिनिस्ट्री के तहत नेशनल डिजास्टर का है। हमारा बेसिकली काम यह है कि पहले प्रबंध करना और सूचनाएं देना।

अध्यक्ष महोदया, जहां तक विशेष रूप से किसी प्रोजेक्ट की बात है, तो केन्द्र की तरफ से उस पर निगरानी की जाती है। सदस्य महोदय ने जो अवगत कराया है कि 14 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं, तो उस प्रोजेक्ट के बारे में सारी सूचनाएं एकत्रित करके सदस्य तक पहुंचा दी जायेंगी।

श्री ताम्रध्वज साहू: अध्यक्ष महोदया, मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि बाढ़ आपदा प्रबंधन के तहत दो काम किये जाते हैं। पहला, जो फसल का नुकसान होता है, उससे बचाव और दूसरा गांव तट, जैसे अभी हमारे सदस्य कह रहे थे और मंत्री जी उत्तर दे रहे थे कि कुछ नदियां गांव तक रहती हैं इसलिए उनके तट के कटाव को रोकने के लिए प्रबंधन का काम किया जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य में तांदूला, खरखरा, शिवनाथ आदि बड़ी नदियां हैं। वहां ऐसी हालत है कि एक आदमी जा रहा है और उधर से कोई जानवर आ रहा है, तो वह आगे नहीं जा सकता, यानी बस्ती तक इतना कटाव चला गया है। छत्तीसगढ़ सरकार को कटाव रोकने के लिए केन्द्र सरकार से राशि स्वीकृत होती थी। अभी उनका कहना है कि बजट में लेने के बाद हम केन्द्र को भेज देते हैं, लेकिन केन्द्र से राशि नहीं मिलती। केन्द्र से राशि मिलने के बाद ही हम तटबंध निर्माण या बाढ़ नियंत्रण का काम करेंगे।

अध्यक्ष महोदया, माननीय मंत्री जी ने प्रश्न का जो लिखित जवाब दिया है, उसमें अनुलग्नक एक-दो में स्वीकृत तीन प्रकरण पूरे नहीं हुए। इसी तरह अनुलग्नक तीन में 21 प्रकरण आपके पास आये, जिसे आपने बिना स्वीकृति के लौटा दिया।

अध्यक्ष महोदया, मैं मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि तटबंध से जो बस्ती डूबने के कगार पर हैं, उसे बचाने के लिए हमारे राज्य से जो प्रकरण आते हैं, क्या आप उसे स्वीकृति देंगे? अगर हां, तो फिर हम उसकी सूची आपको उपलब्ध करा देंगे। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपने अपना प्रश्न पूछ लिया है, इसलिए आप बैठ जाइये।

डॉ. संजीव बालियान : माननीय अध्यक्ष महोदया, फ्लड मैनेजमेंट प्रोग्राम में बजट का आबंटन पहले के मुकाबले इस बार कम हुआ है, क्योंकि 14वें वित्त कमीशन की सिफारिशें लागू होनी थीं। जहां तक कुछ प्रकरण लौटाए जाने की बात है, तो वह सही है। सी.डब्ल्यू.सी., जो नोडल एजेंसी इसे देखती है, अगर उसे लगता है कि जो प्रपोजल्स प्रदेश सरकार ने भेजे हैं, वे उपयुक्त नहीं हैं या जो भी धन वहां खर्च होगा, उसका सदुपयोग नहीं हो पायेगा, तो मात्र वे प्रपोजल्स वापिस लौटाए जाते हैं। कुछ प्रपोजल्स लौटाए गए हैं, जिनमें कुछ टेक्नीकल या इस तरह की कमियां थीं। कुछ प्रपोजल्स पास भी हुए हैं और कुछ लौटाए भी गए हैं। अगर माननीय सदस्य किसी विशेष प्रपोजल के बारे में कहना चाहते हैं, तो वे मुझे बता दें। मैं उस पर जरूर विचार करूंगा।

SHRIMATI K. MARAGATHAM : Madam, the better solution for the flood management is the interlinking of rivers so that water resources of the country can be optimally utilized. Our hon. Chief Minister, Dr. Puratchi Thalaivi Amma has been urging the Government to implement the interlinking of the Mahanadi-Godavari-Krishna-Pennar-Cauvery-Vaigai rivers with the Gundar river and also the diversion of surplus waters of the west flowing Pamaba and Achankovil rivers to Vaippar in Tamil Nadu... *(Interruptions)*

SHRI KODIKUNNIL SURESH: No, Madam... *(Interruptions)*

SHRI K.C. VENUGOPAL: No... *(Interruptions)*

SHRIMATI K. MARAGATHAM: Therefore, I would like to know from the hon. Minister about the action taken by the Government based on the proposal of our hon. Chief Minister, Dr. Puratchi Thalaivi Amma... *(Interruptions)*

HON. SPEAKER: Let her say something.

... *(Interruptions)*

माननीय अध्यक्ष : यहां स्टेट का झगड़ा ऐसे लेकर नहीं आते। कृपया आप सब बैठ जाएं।

...*(व्यवधान)*

HON. SPEAKER: Hon. Members, please cooperate. Let the Minister answer.

... *(Interruptions)*

माननीय अध्यक्ष : मंत्री जी, आप अपनी बात रखिए।

...*(व्यवधान)*

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री (सुश्री उमा भारती) : माननीय अध्यक्ष महोदया, तमिलनाडु की माननीय सदस्या ने ...*(व्यवधान)*

माननीय अध्यक्ष : आप लोग बैठ जाइए। आप लोग आपस में झगड़ा क्यों करते हैं, क्या आप लोग डिसाइड करने वाले हैं? मंत्री जी कुछ कह रही हैं, उनकी बात सुनिए।

सुश्री उमा भारती : माननीय अध्यक्ष महोदया, तमिलनाडु की माननीय सदस्या ने बहुत महत्वपूर्ण राष्ट्रीय विषय की ओर अपना प्रश्न इंगित किया है। माननीय सुप्रीम कोर्ट ने रिवर इंटरलिंकिंग के बारे में जो ऑब्जर्वेशन दी है, उसमें माननीय सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि ये योजनाएं राष्ट्रीय हित में हैं। तमिलनाडु ने

इसमें हमेशा सहयोगी की भूमिका निभाई है। केरल राज्य को इस योजना पर कुछ कारणों से आपत्ति रही है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने हमें यह निर्देश दिया है कि जिन राज्यों को आपत्ति हो, वहां की परियोजनाओं के बारे में अभी विचार नहीं करना है। इसलिए हम उन्हीं राज्यों की रिवर इंटरलिकिंग परियोजनाओं पर विचार कर रहे हैं, जिनसे संबंधित राज्यों की पूर्णतया सहमति होती है। इसलिए मैं सबसे पहले केरल राज्य के माननीय सदस्यों से कहूंगी कि जब तक उनकी सहमति नहीं होगी, तब तक केरल से जुड़ी हुई नदियों की इंटरलिकिंग के बारे में हम विचार नहीं करेंगे क्योंकि यही हमें प्रधानमंत्री जी का निर्देश है। दूसरी बात यह है कि अभी हमें इंटरनेशनल बाउण्डरीज को भी टच नहीं करना है, हम उसका भी एहतियात बरत रहे हैं।

तमिलनाडु और पूरे देश में फ्लड का जो सबसे बड़ा समाधान है, वह नदियों की इंटरलिकिंग है। अभी फ्लड मैनेजमेंट पर लगभग 5000 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं, लेकिन यह सच्चाई कि फ्लड इस देश को बहुत बड़ी मात्रा में नुकसान पहुंचाता है। यह वह पैसा है जो हम फ्लड के लिए थोड़ा-बहुत खर्च करते हैं, अन्यथा फ्लड से बहुत ज्यादा नुकसान होता है। धनहानि की कुछ पूर्ति हो सकती है, लेकिन जनहानि की पूर्ति भी नहीं हो पाती है। इसलिए वास्तव में इसका मूल समाधान वही है जो माननीय सदस्या ने इंगित किया है कि जो अतिरिक्त पानी है, जो मॉनसून वाटर है, जो फ्लड में बदल जाता है, हम अपनी रिवर इंटरलिकिंग परियोजनाओं के अंतर्गत उस पानी का उपयोग करें। अभी 31 लिंक हमने प्रस्तावित किए हैं। इस देश में एक तरफ बाढ़ होती है और दूसरी तरफ सूखा होता है। इसका संयोजन इसी तरीके से होना है और अगर हमने ये सभी 31 लिंक पूरे कर लिए, ... (व्यवधान) इसके लिए हमारी सरकार प्रतिबद्ध है, यह विषय हमारे मैनिफेस्टो में था, राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण में था और हमारे मंत्रालय की प्रायरीटी-फ्लैगशिप योजनाओं में से एक है। हम इन 31 लिंक्स को पूरा करेंगे। देश के फ्लड का असली समाधान रिवर मैनेजमेंट ही होगा और उसे हम पूरा करेंगे। इससे 33 मिलियन हेक्टेअर जमीन सिंचित होगी, 34,000 मेगावाट बिजली जेनरेट होगी, अर्थात् फ्लड भी कंट्रोल में आएगा, देश की जीडीपी बढ़ेगी और साथ ही इस देश में पावर जेनरेशन भी होगी। ... (व्यवधान) आपके माध्यम से, यहां प्रमुख विरोधी दल कांग्रेस के नेताओं से मेरा हाथ जोड़कर निवेदन है कि हमारी एक योजना केन-बेतवा लिंक किसी भी समय शुरू होने वाली है, लेकिन हमारी पांच अन्य योजनाएं हैं, जिनमें पंचेश्वर, दमनगंगा-पिंजाल, पार-तापी-नर्मदा शामिल हैं। पार-तापी-नर्मदा के बारे में महाराष्ट्र और गुजरात के बीच समझौता होना है, दोनों राज्य सरकारों के बीच आधिकारिक लेवल पर बातचीत चल रही है। आपके माध्यम से मेरा निवेदन यह है कि पार-तापी-नर्मदा परियोजना के बारे में जो दुष्प्रचार अभियान कांग्रेस ने महाराष्ट्र में छेड़ा हुआ है, उसके कारण दमनगंगा-पिंजाल परियोजना के लिए भी दिक्कत आ रही है। अगर हम दमनगंगा-पिंजाल परियोजना को पूरा कर सकें तो वर्ष 2060 तक मुंबई शहर में पीने के पानी की समस्या खड़ी नहीं होगी। इसे हम किसी भी समय शुरू

कर सकते हैं, हमें इसमें पूरे सदन का और सभी राजनैतिक दलों का सहयोग चाहिए। फ्लड का असली समाधान नदियों की इंटरलिंग है और इसे हम करके रहेंगे। इसके लिए हमारी सरकार कटिबद्ध है।

SHRI FEROZE VARUN GANDHI : Madam, only 18 per cent of rainwater in our country is harvested and 48 per cent of rainwater enters the rivers and through then goes to the oceans. My question is very straightforward. Have flood management projects been devised in such a way that rain water can be harvested more efficiently? I read in a newspaper in the morning that in Maharashtra, which is extremely water starved, 22,000 cusecs of water have been released into the Godavari River simply because of lack of storage capacity. So, for my question, which has already been answered partially by the hon. Minister, I just want a more detailed answer.

सुश्री उमा भारती : माननीय अध्यक्ष जी, यह बहुत ही गंभीर सवाल है जो माननीय सदस्य ने पूछा है। मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य को और माननीय सदन के अन्य सदस्यों को भी जो इसमें रुचि रख रहे हैं, उनको इस जानकारी से अवगत कराना चाहती हूँ कि बरसते हुए पानी को रोकने के लिए हम ग्राउंड-वॉटर रीचार्ज मैनेजमेंट के पहले एक्वाफर जो पूरे देश में है, वह हम एक्वाफर मैपिंग कर रहे हैं, उसके बाद हम फिर उनको रीचार्ज करें और पानी को भू-जल गर्भ में ले जाएं। इसके अलावा पूरे देश में 99 प्रोजेक्ट्स एक करोड़ हेक्टेअर भूमि सिंचित करने के लिए हमने शॉर्टलिस्ट किये हैं, वे कुछ आधे बने थे और कुछ 75 प्रतिशत बने थे। हमने तय किया है कि वर्ष 2017 में, 2018 में और 2020 में हम वे प्रोजेक्ट्स पूरे करेंगे। उसके कारण भी बहुत बड़ी मात्रा में रेन वॉटर रुकेगा। इसके अलावा नदियों के बारे में भी हमारे विभाग के अंदर एक विचार चल रहा है और वह फ्लड-प्लेन-ज़ोनिंग का विचार है। अगर हमने यह तय करके बता दिया कि यह नदियों का फ्लड प्लेन है तो आज जो जनहानि और धनहानि होती है, उसका कारण यह भी है कि नदियों के फ्लड प्लेन में भी बसाहट की अनुमति दे दी गई है। राज्य सरकारों ने, प्रशासनिक व्यवस्थाओं में लगे हुए व्यक्तियों ने लोगों को बसने से पहले चेतावनी नहीं दी और उसी का दुष्परिणाम केदारनाथ में फ्लड के कारण देखा था। उसी का दुष्परिणाम है जो कई राज्यों में आ जाता है। इसके लिए राज्यों की सहमति भी हो गई है कि हम फ्लड प्लेन ज़ोनिंग का एक बिल लेकर आएँ और उसमें सभी की सहमति हो जाए तो हम जनहानि और धनहानि दोनों को रोक सकेंगे। लेकिन रेन वॉटर को रोकने के कई प्रकार के उपयोग हैं जिसमें तमिलनाडु ने भी एक उपयोग किया है। एक ग्राउंड के अंदर भी रेन वॉटर को रोकने का उपाय है, एक बांध की परियोजना को पूरा करके, सिंचाई की परियोजनाओं को पूरा करके रोकने से भी एक उपाय

है। रिवर इंटरलॉकिंग का भी एक उपाय है। मैंने एक चिट्ठी देश के सभी माननीय मुख्य मंत्री महोदयों को लिखी थी कि किसी भी प्रकार से बरसते हुए पानी को ग्राउंड वॉटर के नीचे, भू-गर्भ में उसको ले जाया जाए। उसके लिए सभी मुख्य मंत्रियों ने कहा है कि हम अपनी योजनाओं को इस प्रकार से बनाएंगे। मैं माननीय सदस्यों से भी एक निवेदन करूंगी कि रेन वॉटर हार्वेस्टिंग के जितने प्रकार के तरीके हो सकते हैं, वे अपनी सांसद विकास निधि से भी अपनाएं और हमारा भी मार्गदर्शन करें कि हम इसे किस प्रकार से कर सकते हैं, बाकी हमारा प्रयत्न तो इस विषय पर हो ही रहा है, हम जरूर करेंगे।

माननीय अध्यक्ष : बहुत डिटेल में उत्तर आया है।

श्री मुलायम सिंह यादव: माननीय अध्यक्ष जी, मैं केवल सलाह दे रहा हूं। आपके प्रयास तो अच्छे हो रहे हैं लेकिन पानी स्टोर करने का केवल एक ही तरीका है। उसके अलावा कोई तरीका इससे बेहतर नहीं है। गांवों-गांवों में बड़े-बड़े तालाब खोदे जाएं और तालाब खोदने से वॉटर लैवल नीचे नहीं जाएगा।... (व्यवधान) यह कोशिश मैंने यू.पी. में की है। आप सबको पता है, काफी तालाब खुद गये हैं। गांव-गांव में बड़े-बड़े तालाब खोदे जाएं, उनमें पानी स्टोर किया जाए तो वॉटर लैवल नीचे नहीं जाएगा और गांव-गांव की पानी की समस्या इससे हल होगी।... (व्यवधान)

सुश्री उमा भारती : माननीय अध्यक्ष महोदया, माननीय सदस्य ने जो सुझाव के रूप में कहा है, उसमें एक प्रश्न भी है। मुलायम सिंह जी वरिष्ठतम सदस्य हैं, मैं उनका सम्मान करती हूं। अगर आपकी अनुमति मिल जाए तो मैं उनकी जानकारी में एक बात लाना चाहता हूं कि गंगा में पानी की बहुत कमी है, इसलिए फ्लड वॉटर को, रेन वॉटर को गंगा में हम किस प्रकार से ले आए, इसके लिए प्रतापगढ़ में, कुंडा में एक प्रयोग हुआ था जिसको नद्यताल कहते हैं। यानी बरसात का पानी रोक देना और जब नॉन-मानसून पीरिएड आया तो उस पानी का चैनल गंगा की तरफ खोल देना ताकि गंगा का पानी कम न हो। हमने उत्तर प्रदेश की सरकार को लिखा है कि ऐसे जितने पुराने नद्यताल हैं, उनकी सूची हमें दे दीजिए ताकि हम उनको रिपेयर कर दें और हम गंगा में पानी बढ़ा सकें। मैं माननीय सदस्य से निवेदन करूंगी कि आप राज्य के मुख्य मंत्री जी से इस संबंध में बात कर लीजिए क्योंकि हमें अभी तक वह सूची मिली नहीं है।

श्री मुलायम सिंह यादव: माननीय अध्यक्ष जी, गांव-गांव तालाब खुदने चाहिए। वे लोग इधर-उधर नाले खोदकर चले जाते हैं। उस पानी को अगर रोक दिया जाएगा तो ठीक रहेगा। मैंने अपने मुख्यमंत्री रहते हुए

बड़े-बड़े एक्सपर्ट्स लोगों की मीटिंग की है और बहुत लोगों से राय ली है और सबसे बेहतर उपाय यही है कि गांव-गांव में तालाब होने चाहिए।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप दोनों बाद में इस पर बात कर लीजिएगा।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : प्रश्न सं.63 और प्रश्न सं. 73 को हम क्लब कर रहे हैं। दोनों विषय एक हैं।

(Q.63 & 73)

SHRI RAHUL SHEWALE : My first supplementary question is this. I want to know whether the Government has reviewed the financing structure and performance of the Mumbai International Airport Private Limited to examine the project cost of development, upgradation work of terminal which is reported to be doubled due to inordinate delays, funding gap and recovery of such extra cost in the form of levying development fee on passengers. If so, the details and outcome therefore and if not, the reasons for this.

SHRI ASHOK GAJAPATHI RAJU: There has been a delay in Chatrapati Shivaji Airport in Mumbai and there are a lot of reasons for delay. We have continuously interacted with everybody and tried to overcome these delays. We can always gather the details and reach out to the hon. Member. This whole question is over-encompassing. So, it becomes a little difficult to give an immediate answer on individual airports.

SHRI RAHUL SHEWALE: Madam Speaker, my second supplementary question is, whether it is a fact that the Government has not monitored the public private partnership project effectively leading to undue benefit of at least Rs. 5,087 crore to the Mumbai International Airport Private Limited during the modernization and upgradation of the Mumbai Airport that started in 2006. If so, give the details therefor along with the reaction of the Government for this delay.

SHRI ASHOK GAJAPATHI RAJU: There was a delay in the Mumbai project. In fact, even the Public Accounts Committee has also gone into all these things. It is also a fact that the Government monitors these regularly. It is not left unmonitored. It is monitored and attention is being given and no person will be allowed to loot the State.

श्री संजय धोत्रे: माननीय अध्यक्ष जी, माननीय वित्त मंत्री अरुण जेटली जी ने जो चालू वित्तीय वर्ष के बजट में 160 हवाईअड्डों के मॉडर्नाइजेशन करने का जो उद्देश्य रखा, उसके लिए मैं उनका स्वागत करता हूँ। माननीय नागर उड्डयन मंत्री जी ने जो छोटे और मध्यम हवाई अड्डे हैं, वहां पर हवाई यात्रा शुरू करने

के बारे में जो अभी अभी एक महीना पहले अनाउंसमेंट किया है, उसका भी मैं स्वागत करता हूँ। इसके साथ ही मैं उनका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि अकोला हवाई अड्डा जो आजादी के पहले 1943 में बना था, उसके विकास के लिए महाराष्ट्र सरकार ने 60 हेक्टेअर की जमीन भी हस्तांतरित की है। मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूँ कि अकोला हवाईअड्डे के आधुनिकीकरण के लिए क्या कोई कदम उठाया जा रहा है और वहां पर जो 30 साल पहले एयर सर्विस थी, क्या वह पुनः शुरु कर दी जाएगी क्योंकि आप भी अकोला में कई बार आई और माननीय नितिन जी तो दो तीन महीने में एक बार अकोला आते हैं, वहां पर एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी भी है। धन्यवाद।

SHRI ASHOK GAJAPATHI RAJU: In Annexure II and Annexure III, the details have been given as to what is happening in the country. With regard to Akola, the runway belongs to AAI. The dimensions are 1400 x 45 metres, runway with base strip of 75 metres on either side of the runway suitable for operation of ATR 42 type of aircraft with VF car operations.

At present, no scheduled flights are operating from the Akola Airport. AAI has requested the State Government for 174.67 acres of land for upgradation of the Akola Airport. The State Government has handed over 149.95 acres of land on 23.05.2016. However, it is found that the land handed over by the State Government is excess land at some location in comparison to the request made by AAI whereas certain pockets of land necessary to meet the DGCA's car requirements of 300 metres, basic strip for IA car operations, is yet to be acquired, and handed over to AAI. AAI has further informed the State Government for acquisition of balance of 34.10 hectares of land to AAI to meet the basic requirements. The AAI is initiating the process of surveying the acquired land and surveying to identify the obstruction limited surfaces for planning of runway expansion work, construction of boundary wall etc. This is the status of Akola airport.

HON. SPEAKER: Shri Balbhadra Majhi – not present.

Shri R. Dhruvanarayana.

SHRI R. DHARUVANARAYANA: Madam, the Government of India has spent crores of rupees to construct an airport at Mysore. But Mysore airport is not operational. Madam, you know Mysore city is a cultural and heritage city. It is also a clean city. The airport is not operational. Now, my question to the hon. Minister is this. What steps have you taken to make it operational?

SHRI ASHOK GAJAPATHI RAJU: Madam, we have about 31-32 airports which are not operational. The infrastructure is readily available. The hon. Members are agitated that these things should be connected. We consistently put it to the airlines. The airlines are like a horse. We can take it to water. We cannot make it drink. So, similarly, we motivate the airlines and if these two get together, we are hopeful that Mysore, which is a beautiful city about which India is very proud, will get connected shortly.

SHRI DEEPENDER SINGH HOODA : Madam, I thank the Minister for laying a detailed statement on all the airports which are under consideration for modernization and upgradation. My question pertains to three proposed upgradations and a construction of Greenfield airport in Haryana, which is under active consideration of the Ministry and the status of those.

The first two are upgradation of existing airstrips at Hisar and Karnal into low cost domestic airports. This was approved by the Cabinet Committee on Economic Affairs (CCEA) in August, 2013. Subsequently, a joint feasibility study by the Airport Authority of India and Government of India conducted in 2012 provided the approval for this airport. Then, the Haryana Government offered to provide the land, and, subsequently, an MoU was signed. Now, my question is, what is the status of this as well as the status of the proposed Greenfield international cargo airport at Meham in Rohtak for which the Airport Authority of India has conducted a feasibility study? The feasibility study came out positive, and an NOC was also provided by the Ministry of Defence because this airport is close to Delhi. So, the Air Force and the Ministry of Defence were also asked to provide an NOC and that NOC has also been provided.

My point is that Haryana remains one State in the country, which does not have a single airport, either domestic or international, on its own. We are relying on the Delhi airport and the Chandigarh airport. Within Haryana there is not a single airport. So, what is the status of these three proposed airports?

SHRI ASHOK GAJAPATHI RAJU: Madam, I can do one thing. I can gather that information and reach it out to the hon. Member.

HON. SPEAKER: All right.

SHRI ASHOK GAJAPATHI RAJU: Our effort is to increase the number of airports and to provide regional connectivity throughout our country.

श्री अजय मिश्रा टेनी: देश में अंतरराज्यीय व अंतरराष्ट्रीय विमानन सेवाओं में प्रतिस्पर्धा के कारण अच्छी व समयबद्ध सेवाओं को उपलब्ध कराने हेतु, एयरपोर्ट्स के आधुनिकीकरण के साथ-साथ प्रशिक्षित व जानकार जनशक्ति की भी आवश्यकता महसूस की जा रही है। युवाओं की एक बड़ी संख्या अनुसूचना व प्रचालन में प्रशिक्षित होने के बावजूद बेरोजगार है।

अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूँ कि विमानन क्षेत्र में 20 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि को देखते हुए, क्या सरकार ने इस क्षेत्र में प्रशिक्षित जनशक्ति की आवश्यकता का आकलन किया है, यदि हाँ, तो क्या सरकार ने ऐसे प्रशिक्षित युवाओं को रोजगार प्रदान करने की कोई योजना बनाई है या बनाने का प्रस्ताव किया है?

SHRI ASHOK GAJAPATHI RAJU: Madam, there are lots of mismatches in the aviation sector, particularly in skills.

HON. SPEAKER: I know.

SHRI ASHOK GAJAPATHI RAJU: We are addressing ourselves to that. In fact, the Ministry of Skill Development in-charge of skilling has also made reference to us. We are working in close coordination with them, and we intend to provide skilled manpower because we have the highest growth in the world. So, we need skilled manpower if we have to sustain it and the Government is at it.

12.00 hours

श्रीमती दर्शना विक्रम जरदोश : अध्यक्ष महोदया, एयरपोर्ट के एक्सपेंशन के लिए कई बार बहुत कम राशि आबंटित की जाती है। सूरत एक ऐसा शहर है जिसने पीपीपी मॉडल पर एयरपोर्ट का डेवलपमेंट किया है।

जो लोकल सर्विस प्रोवाइडर होते हैं उनके साथ कोर्पोरेशन से मिलकर एयरपोर्ट पर जो सुविधाएं दी गईं, इसके लिए हमने भी राशि दी है क्योंकि कोर्पोरेशन ने चार करोड़ रुपए एयरपोर्ट आथोरिटी के बचा लिए है। इसमें केबल कनेक्शन की भी बात है। इसके लिए मोनिटरिंग कमेटी भी बनाई है, जिसके लिए सुझाव आते हैं।

मैं मंत्री जी से पूछना चाहती हूं कि क्या पीपीपी मॉडल पर सूरत को ऐसी परमिशन मिलनी चाहिए, जहां हम आपकी राशि के बगैर भी एयरपोर्ट एक्सपेंशन का जो भी प्लान है, वह पूरा कर सकें?

SHRI ASHOK GAJAPATHI RAJU: Expansion and upgradation of equipment is a continuous process at all airports. As traffic increases, these are done. Surat is no exception. It is a good town; it is a commercial town and it deserves better. We are working on it.

माननीय अध्यक्ष: प्रश्न काल समाप्त हुआ।

12.01 hours**PAPERS LAID ON THE TABLE**

HON. SPEAKER: Papers to be laid on the Table. Dr. Sanjeev Balyan.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF WATER RESOURCES, RIVER DEVELOPMENT AND GANGA REJUVENATION (DR. SANJEEV BALYAN): On behalf of Dr. Mahesh Sharma, I beg to lay on the Table:-

- (1)
 - (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the National Council of Science Museums, Kolkata, for the year 2014-2015, alongwith Audited Accounts.
 - (ii) A copy of the Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the National Council of Science Museums, Kolkata, for the year 2014-2015.
- (2) Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (1) above.
[Placed in Library, See No. LT 4892/16/16]
- (3)
 - (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the Allahabad Museum, Allahabad, for the year 2014-2015, alongwith Audited Accounts.
 - (ii) A copy of the Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the Allahabad Museum, Allahabad, for the year 2014-2015.
- (4) Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (3) above.
[Placed in Library, See No. LT 4893/16/16]

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF ROAD TRANSPORT AND HIGHWAYS AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF SHIPPING (SHRI PON RADHAKRISHNAN): I beg to lay:-

- (1) A copy each of the following Notifications (Hindi and English versions) under Section 50 of the Control of National Highways (Land and Traffic) Act, 2002:-
- (i) S.O.375(E) to S.O. 380(E) published in Gazette of India dated 5th February, 2016, regarding delegation of powers of Highway Administration to the officials, mentioned therein.
 - (ii) S.O.486(E) to S.O.494(E) published in Gazette of India dated 16th February, 2016, regarding delegation of powers of Highway Administration to the officials, mentioned therein.
 - (iii) S.O.1301(E) and S.O.1302(E) published in Gazette of India dated 4th April, 2016, regarding delegation of powers of Highway Administration to the officials, mentioned therein..
 - (iv) S.O.574(E) published in Gazette of India dated 24th February, 2016, appointing the Executive Engineers of State Public Works Department and Project Directors of National Highways Authority of India to exercise the powers and functions under Sections 24, 25, 26, 27 and 43 of the said Act.

[Placed in Library, See No. LT 4894/16/16]

(2) A copy each of the following Notifications (Hindi and English versions) under Section 10 of the National Highways Act, 1956:-

- (i) S.O.3200(E) published in Gazette of India dated 30th November, 2015, making certain amendments in the Notification No. S.O. 1096(E) dated 4th August, 2005.
- (ii) S.O.3382(E) published in Gazette of India dated 15th December, 2015, containing corrigendum to the Notification No. S.O. 3162(E) dated 12th December, 2014.
- (iii) S.O. 3383(E) published in Gazette of India dated 15th December, 2015, making certain amendments in the Notification No. S.O. 976(E) dated 9th April, 2015.
- (iv) S.O. 3384(E) published in Gazette of India dated 15th December, 2015, making certain amendments in the Notification No. S.O. 1096(E) dated 4th August, 2005.
- (v) S.O.3554(E) published in Gazette of India dated 31st December, 2015, making certain amendments in the Notification No. S.O. 539(E) dated 17th February, 2015.
- (vi) S.O.3555(E) published in Gazette of India dated 31st December, 2015, making certain amendments in the Notification No. S.O. 1096(E) dated 4th August, 2005.
- (vii) S.O.183(E) published in Gazette of India dated 20th January, 2016, making certain amendments in the Notification No. S.O. 689(E) dated 4th April, 2011.
- (viii) S.O.184(E) published in Gazette of India dated 20th January, 2016, making certain amendments in the Notification No. S.O. 1096(E) dated 4th August, 2005.
- (ix) S.O.186(E) published in Gazette of India dated 20th January, 2016, making certain amendments in the Notification No. S.O. 1096(E) dated 4th August, 2005.

- (x) S.O.188(E) published in Gazette of India dated 20th January, 2016, making certain amendments in the Notification No. S.O. 1096(E) dated 4th August, 2005.
- (xi) S.O.413(E) to S.O.415(E) published in Gazette of India dated 9th February, 2016, making certain amendments in the Notification No. S.O. 1096(E) dated 4th August, 2005.
- (xii) S.O.417(E) published in Gazette of India dated 9th February, 2016, making certain amendments in the Notification No. S.O. 1096(E) dated 4th August, 2005.
- (xiii) S.O.418(E) published in Gazette of India dated 9th February, 2016, declaring highways, mentioned therein, as new National Highways.
- (xiv) S.O.419(E) published in Gazette of India dated 9th February, 2016, making certain amendments in the Notification No. S.O. 1096(E) dated 4th August, 2005.
- (xv) S.O.420(E) published in Gazette of India dated 9th February, 2016, making certain amendments in the Notification No. S.O. 689(E) dated 4th April, 2011.
- (xvi) S.O.641(E) published in Gazette of India dated 2nd March, 2016, declaring highways, mentioned therein, as new National Highways.
- (xvii) S.O.1098(E) published in Gazette of India dated 15th March, 2016, making certain amendments in the Notification No. S.O. 1096(E) dated 4th August, 2005.

[Placed in Library, See No. LT 4895/16/16]

(3) A copy each of the following Notifications (Hindi and English versions) under Section 37 of the National Highways Authority of India Act, 1988:-

- (i) S.O. 185(E) published in Gazette of India dated 20th January, 2016, entrusting Highway Nos. 82 and 102 in the State of Bihar to National Highway Authority of India.
- (ii) S.O. 187(E) published in Gazette of India dated 20th January, 2016, rescinding Notification No. S.O.94(E) dated 31st January, 2007.
- (iii) S.O. 416(E) published in Gazette of India dated 9th February, 2016, entrusting Highway No. 202 (Yadgiri-Warangal) in the State of Telengana to National Highway Authority of India.

[Placed in Library, See No. LT 4896/16/16]

(4) A copy each of the following Notifications (Hindi and English versions) under sub-section (3) of Section 458 Merchant Shipping Act, 1958:-

- (i) G.S.R.455(E) in Gazette of India dated 27th April, 2016 rescinding the Lifeboatmen's (Qualification and Certificates) Rules, 1963.
- (ii) G.S.R.456(E) in Gazette of India dated 27th April, 2016 rescinding the Merchant Shipping (Distress Messages and Navigational Warnings) Rules, 1964.
- (iii) G.S.R.457(E) in Gazette of India dated 27th April, 2016 rescinding the Merchant Shipping (Pilot Ladder) Rules, 1967.
- (iv) G.S.R.458(E) in Gazette of India dated 27th April, 2016 rescinding the Merchant Shipping (Musters) Rules, 1968.
- (v) G.S.R.459(E) in Gazette of India dated 27th April, 2016 rescinding the Merchant Shipping (Safety Convention Certificates) Rules, 1968.
- (vi) G.S.R.460(E) in Gazette of India dated 27th April, 2016 rescinding the Merchant Shipping (Radio Direction Finders) Rules, 1968.

[Placed in Library, See No. LT 4897/16/16]

12.02 hours**STATEMENTS BY MINISTER****Status of implementation of the recommendations contained in the 7th and 11th Reports of the Standing Committee on Coal and Steel***

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF POWER, MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF COAL, MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF NEW AND RENEWABLE ENERGY AND MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF MINES (SHRI PIYUSH GOYAL): I beg to lay the following statements regarding the:-

- (1) Status of implementation of the recommendations contained in the 7th Report of the Standing Committee on Coal and Steel on Demands for Grants (2015-16), pertaining to the Ministry of Coal.
- (2) Status of implementation of the recommendations contained in the 11th Report of the Standing Committee on Coal and Steel on 'Prevention of Illegal coal mining and theft', pertaining to the Ministry of Coal.

*Laid on the Table and also placed in Library, See No. LT 4898/16/16 and LT 4899/16/16 respectively

12.03 hours**ELECTION TO COMMITTEES****(i) Committee on Estimates**

डॉ. मुरली मनोहर जोशी (कानपुर) : महोदया, मैं प्रस्ताव करता हूँ :

“कि इस सभा के सदस्य लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमों के नियम 311 के उप-नियम (1) के साथ पठित नियम 254 के उप-नियम (3) द्वारा अपेक्षित रीति से श्री अर्जुन राम मेघवाल के मंत्री के रूप में नियुक्त होने के कारण उनके स्थान पर प्राक्कलन समिति की शेष अवधि हेतु उक्त समिति के सदस्य के रूप में कार्य करने के लिए अपने में से एक सदस्य निर्वाचित करें। ”

HON. SPEAKER: The question is:

“That the members of this House do proceed to elect in the manner required by sub-rule (3) of Rule 254 read with sub-rule (1) of Rule 311 of the Rules of Procedure & Conduct of Business in Lok Sabha, one member from among themselves to serve as a member of the Committee on Estimates for the un-expired portion of the term of the Committee vice Shri Arjun Ram Meghwal appointed as Minister.”

The motion was adopted.

(ii) Committee on Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes

डॉ. किरिट पी. सोलंकी (अहमदाबाद) : महोदया, मैं प्रस्ताव करता हूँ :

“कि इस सभा के सदस्य लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमों के नियम 331ख के उप-नियम (1) के साथ पठित नियम 254 के उप-नियम (3) द्वारा अपेक्षित रीति से श्री फग्गन सिंह कुलस्ते, श्री रमेश सी. जिगाजिनागि और श्री अजय टम्टा के मंत्रियों के रूप में नियुक्त होने के कारण उनके स्थान पर अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के कल्याण संबंधी समिति की शेष अवधि हेतु उक्त समिति के सदस्य के रूप में कार्य करने के लिए अपने में से तीन सदस्य निर्वाचित करें। ”

HON. SPEAKER: The question is:

“That the members of this House do proceed to elect in the manner required by sub-rule (3) of Rule 254 read with sub-rule (1) of Rule 331B of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha, three members from amongst themselves to serve as members of the Committee on the Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes for the un-expired portion of the term of the Committee vice Shri Faggan Singh Kulaste, Shri Ramesh C. Jigajinagi and Ajay Tamta appointed as Ministers.”

The motion was adopted.

(iii) Committee on Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes

डॉ. किरिट पी. सोलंकी (अहमदाबाद) : महोदया, मैं प्रस्ताव करता हूँ :

“कि यह सभा राज्य सभा से सिफारिश करती है कि राज्य सभा श्री रामदास अठावले के मंत्री के रूप में नियुक्त होने और श्रीमती विजयलक्ष्मी साधो के राज्य सभा से सेवानिवृत्त होने के कारण उनके स्थान पर अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के कल्याण संबंधी समिति की शेष अवधि हेतु समिति के साथ सहयोजित होने के लिए राज्य सभा के दो सदस्यों को नामनिर्दिष्ट करने के लिए सहमत हो और राज्य सभा द्वारा इस प्रकार नामनिर्दिष्ट किए गए सदस्यों के नाम इस सभा को सूचित करे।”

HON. SPEAKER: The question is:

“That this House do recommend to Rajya Sabha that Rajya Sabha do agree to nominate two members from Rajya Sabha to associate with the Committee on the Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes of this House for the un-expired portion of the term of the Committee *vice* Shri Ramdas Athawale appointed as Minister and Smt. Vijaylaxmi Sadho retired from Rajya Sabha and do communicate to this House the names of the members so nominated by Rajya Sabha.”

The motion was adopted.

(iv) Committee on Welfare of Other Backward Classes

श्री गणेश सिंह (सतना) : माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं प्रस्ताव करता हूँ :

“कि इस सभा के सदस्य श्री राजेन गोहेन, श्रीमती अनुप्रिया पटेल और डॉ. सुभाष रामराव भामरे के मंत्रियों के रूप में नियुक्त होने के कारण नियम 254 के उप-नियम(3) के अंतर्गत उनके स्थान पर अन्य पिछड़े वर्गों के कल्याण संबंधी समिति की शेष अवधि हेतु उक्त समिति के सदस्यों के रूप में कार्य करने के लिए अपने में से तीन सदस्य निर्वाचित करें।”

HON. SPEAKER: The question is:

“That the members of this House do proceed to elect under sub-rule (3) of Rule 254, three members from amongst themselves to serve as members of the Committee on Welfare of Other Backward Classes for the un-expired portion of the term of the Committee vice Shri Rajen Gohain, Shrimati Anupriya Patel and Dr. Subhash Ramrao Bhamre appointed as Ministers.”

The motion was adopted.

(v) **Committee on Welfare of Other Backward Classes**

श्री गणेश सिंह (सतना) : माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं प्रस्ताव करता हूँ :

“कि यह सभा राज्य सभा से सिफारिश करती है कि राज्य सभा श्री वी. अनुमंत राव, श्री अशक अली टाक, श्री विशम्भर प्रसाद निषाद और श्री राजपाल सिंह सैनी के राज्य सभा से सेवानिवृत्त होने के कारण उनके स्थान पर अन्य पिछड़े वर्गों के कल्याण संबंधी समिति की शेष अवधि हेतु समिति में शामिल होने के लिए राज्य सभा के चार सदस्यों को नामनिर्दिष्ट करने के लिए सहमत हो और राज्य सभा द्वारा इस प्रकार नामनिर्दिष्ट किए गए सदस्यों के नाम इस सभा को सूचित करे।”

HON. SPEAKER: The question is:

“That this House do recommend to Rajya Sabha that Rajya Sabha do agree to nominate four members from Rajya Sabha to join the Committee on Welfare of Other Backward Classes of this House for the un-expired portion of the term of the Committee vice Shri V. Hanumantha Rao, Shri Ashk Ali Tak, Shri Bishamber Prasad Nishad and Shri Rajpal Singh Saini retired from Rajya Sabha and do communicate to this House the names of the members so nominated by Rajya Sabha.”

The motion was adopted.

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, मुझे सर्वश्री एडवोकेट जोएस जॉर्ज, के. सुरेश, जयप्रकाश नारायण यादव, एन.के. प्रेमचन्द्रन, पी. करुणाकरन, दुष्यंत चौटाला, ज्योतिरादित्य सिंधिया, के.सी. वेणुगोपाल, तारीक अनवर, गौरव गोगोई, जी. हरि, बी. सेनगुट्टुवन तथा भगवंत मान से विभिन्न विषयों पर स्थगन प्रस्ताव की सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं।

यद्यपि ये मामले महत्वपूर्ण हैं तथापि इनके लिए आज के कार्य में व्यवधान डालना अनिवार्य नहीं है। ये मामले अन्य अवसरों के माध्यम से उठाये जा सकते हैं। अतः मैंने स्थगन प्रस्ताव की सूचनाओं को अनुमति प्रदान नहीं की है।

...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Shri Rajnath Singh Ji.

...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: I will allow you to speak after the reply of hon. Minister, not now.

... (Interruptions)

12.07 hours**DISCUSSION UNDER RULE 193 ...Contd.****Situation arising out of recent violence in Kashmir Valley resulting in threat to peace and security of people of the State**

गृह मंत्री (श्री राजनाथ सिंह) : माननीय अध्यक्ष महोदया, हम लोगों ने कल कश्मीर के मौजूदा हालात पर चर्चा की। मुझे खुशी है कि इस चर्चा में इस सदन के 28 सदस्यों ने हिस्सा लिया था। जिन सदस्यों ने इस सदन में कश्मीर के मुद्दे पर चर्चा में हिस्सा लिया था, मैं उनके नाम का उल्लेख यहाँ पर करना चाहूँगा। वे हैं - सर्वश्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, अनुराग सिंह ठाकुर, ए. अनवर राजा, कल्याण बनर्जी, तथागत सतपथी, मुलायम सिंह यादव, अरविन्द गणपत सावंत, थोटा नरसिंहम, डॉ. बूरा नरसैय्या गौड, मोहम्मद सलीम, वाराप्रसाद राव वेलगापल्ली, तारीक अनवर, प्रेम सिंह चन्दूमाजरा, एम.जे. अकबर, जयप्रकाश नारायण यादव, भगवंत मान, डॉ. अरुण कुमार, मुज़फ्फर हुसैन बेग, बदरुद्दीन अजमल, दुष्यंत चौटाला, कौशलेन्द्र कुमार, ई.टी. मोहम्मद बशीर, सी.के. संगमा, असदुद्दीन ओवैसी, अधीर रंजन चौधरी, जुगल किशोर शर्मा, एन.के. प्रेमचन्द्रन, प्रो. सुगत बोस और राजेश रंजन।

महोदया, मैं यह कहना चाहूँगा कि जिन माननीय सदस्यों ने इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किये हैं, मैं सबसे पहले उनके प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। इसके पहले राज्य सभा में भी कश्मीर के मौजूदा हालात पर चर्चा हुई है। राज्य सभा में इस पर हुई चर्चा के बाद लोक सभा में इस मुद्दे पर जो चर्चा हुई है, उससे मुझे बहुत ही सुखद अनुभूति हुई। मैं यह कह सकता हूँ कि जो मेरा विश्वास और भरोसा था, मेरा वह विश्वास और भरोसा मजबूत हुआ है। जब भी कोई बड़ी चुनौती हमारे देश के सामने खड़ी होगी, तो लोग अपने सारे मतभेदों को भुलाकर उस चुनौती का मुकाबला करने के लिए एकजुट होकर खड़े होंगे। यह विश्वास और भरोसा मेरे अंदर पैदा हुआ है। एक विश्वास और भरोसा मेरे अंदर यह पैदा हुआ है। मैं जानता हूँ कि कश्मीर में जिस प्रकार के इस समय हालात हैं, उसको लेकर इस समय सब के मन में पीड़ा हुई है। सभी की पीड़ा के साथ मैं अपनी पीड़ा को भी सम्बद्ध करना चाहता हूँ।

जहाँ तक हमारे प्रधानमंत्री जी का प्रश्न है, कल चर्चा के दौरान यह बात आयी थी कि उस समय हमारे प्रधानमंत्री जी विदेश यात्रा पर थे। लेकिन मैं सदन को यह जानकारी देना चाहता हूँ कि विदेश यात्रा पर होने के बावजूद प्रधानमंत्री जी ने बराबर मुझ से सम्पर्क बनाकर रखा। कश्मीर के हालात के बारे में उन्होंने मुझ से जानकारी हासिल की और वहाँ के हालात को सुधारने के लिए आवश्यक सुझाव भी वह बीच-बीच में देते रहे। मैंने यह महसूस किया कि उनके अंदर भी कश्मीर के मौजूदा हालात को लेकर एक बेहद तकलीफ़ थी और उसको लेकर वह चिंतित थे। वह विदेश से 12 तारीख को लौटे और पहली बैठक

हमारे प्रधानमंत्री जी ने की है तो वह कश्मीर के हालात का जायज़ा लेने के लिए उन्होंने की है। क्या-क्या हमें करना चाहिए, इन सारे सवालों पर उन्होंने विस्तारपूर्वक बातचीत की है।

महोदया, चर्चा में जो भी बातें निकलकर आयी हैं, मैं उन सभी बातों पर विस्तार में जाकर चर्चा नहीं करना चाहूंगा, लेकिन मैं यह कहना चाहूंगा कि भारत का एक विशिष्ट चरित्र है और भारत का वह विशिष्ट चरित्र है, 'विविधता में एकता - Unity in diversity'. चाहे वह राज्य सभा हो या लोक सभा हो या चाहे हमारा यह देश हो, यहां विभिन्न प्रकार की भाषा बोलने वाले लोग, विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग, विभिन्न प्रकार की बोलियां बोलने वाले लोग और विभिन्न प्रकार के खान-पान वाले लोग भारत देश में मौजूद हैं और उनके प्रतिनिधि के रूप में भारत की संसद में हम सब लोग मौजूद हैं। लेकिन जब देश में कोई संकट खड़ा होता है तो अध्यक्ष महोदया मैं कहना चाहूंगा कि सारे भेदभावों को भुलाकर सारा देश एकजुट होकर उसका मुकाबला करने के लिए खड़ा हो जाता है। वहीं, हम सभी के विचारों में भिन्नता होने के बावजूद हमारी पूरी संसद भी एकजुट होकर खड़ी हो जाती है।

महोदया, जहां तक जम्मू-कश्मीर का सवाल है, हम लोग यह मानते हैं कि जम्मू-कश्मीर भारत का मुकुट है। जम्मू-कश्मीर के संबंध में मैं यहां अमीर खुसरो साहब की एक उक्ति का उल्लेख करना चाहूंगा। उन्होंने कहा था कि इस दुनिया की ज़मीं पर सचमुच में स्वर्ग के समान यदि कोई जगह है, तो उस जगह का नाम कश्मीर है। उन्होंने कहा था-

‘गर फिरदोस बर-रू-ए-जमीन अस्त,
हमीन अस्त-ओ, हमीन अस्त-ओ, हमीन अस्त-ओ।’

यानी दुनिया की जमीन पर सचमुच स्वर्ग के समान कोई धरती है तो वह कश्मीर की धरती है। यह बात अमीर खुसरो साहब ने कही है।

अध्यक्ष महोदया, इस सच्चाई को भी कोई नकार नहीं सकता है कि हमारे एक पड़ोसी की बुरी नजर हमारे कश्मीर पर है जो कि स्वर्ग के समान है, उस पर लग गयी है। लेकिन मैं संसद के दोनों सदनों के माननीय सदस्यों के मूड को देखने के बाद पूरी तरह से आश्वस्त हूँ कि हमारे कश्मीर का जो पुराना गौरव रहा है, जो कश्मीर की एक शोहरत रही है, उस गौरव और शोहरत को पुनः बहाल करने में हम निश्चित रूप से कामयाबी हासिल करेंगे।

इस हकीकत को कोई नकार नहीं सकता है कि आज कश्मीर के जो हालात हैं, उनको बिगाड़ने में यदि किसी की अहम भूमिका है तो हमारे पड़ोसी की भूमिका है। हमारा वह पड़ोसी, जो मज़हब के नाम पर भारत से अलग हुआ था, उस समय हम लोगों ने सोचा था कि मज़हब के नाम पर भारत के विभाजन की मांग की जा रही है, शायद मज़हब के आधार पर भारत का विभाजन हो जाएगा तो सब अपनी-अपनी तरह

से अपनी जिंदगी जीएंगे और जो भी मुल्क मिलेगा, उस मुल्क के विकास के लिए जो कुछ भी हो सकता है, वह करेंगे। वैसे, मैं जानता हूँ कि उस समय की हिन्दुस्तान की मैजोरिटी यह नहीं चाहती थी कि यह विभाजन होना चाहिए, लेकिन भारत का विभाजन हुआ। लेकिन उसके बावजूद आज हमारा पड़ोसी देश किस प्रकार की नापाक हरकतें कर रहा है। भारत को डीस्टेबिलाइज करने की कोशिश कर रहा है। मैं दो दोटूक शब्दों में कहना चाहता हूँ कि भारत में यदि आतंकवाद है तो वह पाकिस्तान द्वारा स्पॉन्सर्ड आतंकवाद है। वह पाकिस्तान जो मजहब के नाम पर बना था, हमसे अलग हुआ था, वह अपने मजहब के लोगों को भी एक साथ नहीं रख पाया और उस पाकिस्तान के दो टुकड़े हो गये। आज पाकिस्तान की हालत ऐसी है कि वहां की हर तंजीमों के बीच हर इलाके में बराबर घमासान चलता रहता है। आज अपने हालात को सुधारने की बजाय पाकिस्तान अपनी तरफ से भारत को डीस्टेबिलाइज करने की बराबर कोशिश कर रहा है। शायद उसकी यह कोशिश है कि उसकी जो विफलताएं हैं, उन विफलताओं की ओर से वह सारी दुनिया का अटेंशन डाइवर्ट कर सके।

मैं बतलाना चाहता हूँ कि भारत में रहने वाले जो हमारे मुस्लिम भाई हैं, इस्लाम को मानने वाले जो लोग हैं, पाकिस्तान को उनकी चिंता करने की जरूरत नहीं है। मैं कह सकता हूँ कि जब भी कोई संकट की घड़ी आई है तो हिंदुस्तान का चाहे हिन्दू रहा है, मुस्लिम रहा हो, ईसाई रहा हो या सिख रहा हो, सब एकजुट होकर उसका मुकाबला करने के लिए खड़े हुए हैं और उन्होंने कामयाबी भी हासिल की है। मैं पहले भी कह चुका हूँ कि भारत दुनिया में एक ऐसा इकलौता देश है, दुनिया में इस्लाम के जितने फिरके होते हैं, ये कुल 72 फिरके माने गये हैं, वे 72 फिरके यदि दुनिया के किसी एक देश में मिलते हैं तो वह हमारा सौभाग्यशाली देश भारत है, जहां 72 के 72 फिरके मिलते हैं। मैं समझता हूँ कि दुनिया के किसी देश को भारत के इस्लाम को मानने वाले लोगों की रक्षा करने का दावा नहीं करना चाहिए, मैं अपने पड़ोसी को यह भी कहना चाहता हूँ। मैं सदन को अटल जी की एक कविता की याद दिलाना चाहता हूँ -“चिंगारी का खेल बुरा होता है, औरों के घर में आग लगाने का सपना अपने ही घर में अक्सर खरा होता है, चिंगारी का खेल बुरा होता है।” यह श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था।

मैं पूरी संजीदगी के साथ यह भी कहना चाहता हूँ कि जिन लोगों ने भी कश्मीर में अपनी जान गंवाई है अथवा जो भी घायल हुए हैं, उसका हम सभी को बेहद अफसोस है। इसी कश्मीर के बारे में आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने तीन सूत्र दिये थे। उन्होंने कहा था - कश्मीरियत, जम्मूरियत और इंसानियत। ये तीन सूत्र श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने दिये थे। लेकिन आज क्या हो रहा है, कश्मीरियत की जम्मूरियत में यदि किसी का स्थान हो सकता है तो इंसानियत का हो सकता है। कश्मीरियत की

जम्हूरियत में हैवानियत का कभी कोई स्थान नहीं हो सकता है। लेकिन आज कभी-कभी कुछ इस प्रकार के हालात देखने को मिलते हैं कि हमारे सिक््युरिटी फोर्सों के जवान यदि मारे जाते हैं तो कुछ लोग ऐसे हैं, जो उस पर जश्न मनाने का काम करते हैं। क्या इसे इंसानियत कहेंगे? यह हैवानियत नहीं है तो क्या है, इसे और क्या कहा जाए।

महोदया, मैं यह मानता हूँ कि हमारा कश्मीर का रहने वाला नौजवान भी देशभक्त है। हमारे कश्मीर के नौजवानों को कुछ लोगों ने बरगलाने की कोशिश की है। लेकिन यह हम लोगों की जिम्मेदारी है कि हमारे जिन नौजवानों को कश्मीर में बरगलाने की कोशिश की गई है, हम उससे उन नौजवानों को अलग करें। क्योंकि उनकी भी राष्ट्रभक्ति और देशभक्ति पर मैं कोई संदेह नहीं करना चाहता। यह एक मानसिकता होती है, जो नौजवानों के अंदर भारत की व्यवस्था के खिलाफ एक अनावश्यक और आधारहीन आक्रोश से भरने का काम करती है और उन्हें बरगलाती रहती है। सिर्फ कश्मीर ही नहीं, बल्कि मैं यहां छत्तीसगढ़ की भी चर्चा करना चाहता हूँ कि वहां भी यही होता है। चाहे वह बस्तर हो, चाहे दंतेवाड़ा हो, हमारे हिंदुस्तान के कुछ और ऐसे क्षेत्र हैं, जहां सिक््युरिटी फोर्सों के मारे जाने पर कुछ ऐसी विकृत मानसिकता के लोग हैं, जो उनके मरने पर जश्न मनाने का काम करते हैं। मैं समझता हूँ कि बहके हुए लोग, जिनकी मानसिकता को विकृत करने का काम किया गया है कि न्यायालय से भी यदि कोई आतंकवादी दोषी करार दिया जाता है, उसके बाद भी यदि उसकी मौत होती है तो उसे ज्युडिशियल क्लिंग की संज्ञा देने का काम करते हैं, ऐसे भी लोग यहां पर हैं।

अध्यक्ष महोदया, मैं इतना जरूर कहना चाहता हूँ कि हमारे नौजवानों की आज जो यह विकृत मानसिकता है, उसमें बदलाव लाना होगा, व परिवर्तन करना होगा, उसे सुधारना होगा तो हम सभी लोगों को मिल-जुलकर इसे सुधारना होगा। कश्मीर के हालात को सुधारने का काम अकेले सरकार नहीं कर सकती है। कश्मीर के हालात को सुधारने के लिए सभी को मिल जुल कर काम करने की आवश्यकता है। ऐसा मैं महसूस करता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि जब से कश्मीर बना है, कोई भी सरकार रही हो और कोई भी प्रधान मंत्री रहा हो, मैं उसको दोषी नहीं ठहराना चाहता कि उसने कश्मीर के हालात को बिगाड़ने का काम किया है। कश्मीर के हालात को सुधारने की जितनी कोशिश हो सकती है, सबने अपने-अपने तरह से कोशिश की है। इसमें कहीं दो मत नहीं है। लेकिन कोई यह कह सकता है कि बराबर लगातार कोशिश की है तो क्या आपको कामयाबी हासिल होगी? मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि कश्मीर के हालात को सुधारने में हमको निश्चित रूप से कामयाबी हासिल होगी। ऐसा मुझे पूरा विश्वास है, पूरा भरोसा है। चाहे अपनी कितनी भी नापाक हरकतें हमारा पड़ोसी क्यों न करता रहे।

अध्यक्ष महोदया, अब यह कैसी विडंबना है कि यदि एक आतंकवादी यहां पर मारा जाता है तो उसको ले कर हमारा पड़ोसी पाकिस्तान में ब्लैक-डे मनाने का काम करता है। भारत के आंतरिक मामलों में उसे हस्तक्षेप करने का क्या अधिकार है?

अध्यक्ष महोदया, जम्मू-कश्मीर में जो भी घटना घटित हुई है, बहुत ही संक्षेप में उसकी जानकारी सदन को देना मैं आवश्यक मानता हूँ। पाकिस्तान अपनी तरफ से भरपूर यह कोशिश कर रहा है कि कश्मीर में घुसपैठ में तेज़ी आए। लेकिन सचमुच मुझे अपने नौजवानों पर नाज़ है, मैं उनकी बहादुरी को भी सल्युट करना चाहता हूँ कि वहां के सुरक्षा बलों ने जवाबी कार्यवाही की है। जिसके परिणामस्वरूप 86 आतंकवादियों को न्युट्रलाइज़ करने में कामयाबी हासिल हुई है। यह मैं इस वर्ष की जानकारी आपको दे रहा हूँ। अनंतनाग के कोकरानाग में आठ जुलाई, 2016 को दो-तीन आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में खुफिया जानकारी मिली थी। इस आधार पर सुरक्षा बलों द्वारा इलाके की घेरेबंदी कर दी गई। मुठभेड़ के दौरान तीन आतंकवादियों को न्युट्रलाइज़ किया गया। पहचान करने के बाद पाया गया कि यह हिज्बुल मुजाहिदीन के कुख्यात आतंकी बुरहान मुज्ज़फ़र वानी, सरताज़ अहमद शेख और परवेज़ अहमद डार थे। जहां तक बुरहान वानी का सवाल है, वह एक कुख्यात आतंकवादी संगठन हिज्बुल मुजाहिदीन का कमांडर था, इसमें कहीं दो मत नहीं है, जो कि पाकिस्तान स्थित युनाइटेड जिहाद काउंसिल का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। युनाइटेड जिहाद काउंसिल, विभिन्न आतंकी संगठनों, जैसे कि लश्कर-ए-तैय्यबा, जैश-ए-मोहम्मद का एक युनाइटेड ग्रुप है, जो कि पाकिस्तान की हिदायत पर भारत में आतंकवादी घटनाओं को अंजाम देता है। आतंकी संगठन हिज्बुल मुजाहिदीन का मुख्यालय पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद, रावलपिंडी में स्थित है। इसका सरगना सैयद सलाउद्दीन है। इसका बेस कैंप पाक अधिकृत कश्मीर के मुज्ज़फ़राबाद में स्थित है। बुरहान वानी हिज्बुल मुजाहिदीन का कुख्यात आतंकवादी था और दक्षिण कश्मीर में हिज्बुल मुजाहिदीन का कमांडर था। उसके खिलाफ 15 मुकदमें हत्या, हत्या के प्रयास, स्थानीय लोगों को गंभीर चोट पहुंचाने के और सुरक्षा बलों से हथियार और गोला-बारूद छीनने के, अवैध हथियार और गोला-बारूद रखने के और इस प्रकार के कई गंभीर आरोप हैं और उसकी एफ.आई.आर. भी दर्ज थी। कुल लगभग इस प्रकार के 15 मुकदमें उसके विरुद्ध दर्ज हैं। निश्चित रूप से वह एक टेक्नोलॉजी सेवी, नई पीढ़ी को रेडिक्युलराइज़ कर उन्हें आतंकवादी गतिविधियों की ओर प्रेरित करता रहा है। सोशल मीडिया जैसे फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सअप पर नियमित रूप से स्टेटमेंट, वीडियो मैसेजेज और पिक्चर अपलोड कर युवाओं को हथियार उठाने के लिए उकसाता था। बुरहान वानी सहित इन आतंकवादियों के मारे जाने की खबर सोशल मीडिया पर फैली है।

महोदया, मैं सदन को यह भी जानकारी देना चाहता हूँ कि अभी हाल में ही हाफिज सईद जो कि पाकिस्तान में कुख्यात आतंकवादी है, उसने भी कहा कि कुछ दिन पहले ही हमारी बुरहान वानी से बातचीत हुई है। इसकी भी चर्चा उन्होंने की है। अब सिक्युरिटी फोर्सज को इंटेलिजेंस इनपुट हासिल हुआ था, उस इंटेलिजेंस इनपुट के आधार पर सिक्युरिटी फोर्सज ने इस प्रकार का आपरेशन किया था। उसके बाद जिस प्रकार के सूरते-हालात कश्मीर के अन्दर पैदा हुए, बहुत सारे लोग सड़कों पर निकल आए, स्टोन पेल्टिंग हुई। वैसे जहाँ तक सिक्युरिटी फोर्सज का सवाल है, मैंने भी स्पष्ट निर्देश दिया था, आने पर प्रधान मंत्री जी ने भी स्पष्ट निर्देश दिया था, जितनी मैक्सिमम रिस्ट्रेंट एक्सरसाइज की जा सकती हो, सिक्युरिटी फोर्सज को वह रिस्ट्रेंट एक्सरसाइज करनी चाहिए। यह हमारे प्रधान मंत्री जी ने भी कहा और मैंने बार-बार स्वयं सिक्युरिटी फोर्सज के जो सीनियर ऑफिशियल्स थे, उनसे मैंने यह कहा। जो कुछ भी चार-छह दिनों के अन्दर हुआ, उसकी भी मैं आपको यहाँ पर जानकारी देना चाहता हूँ। लॉ एंड ऑर्डर इंडेडेंट्स पूरे कश्मीर के अन्दर 576 हुए और सिविलियन्स जिनकी मृत्यु हुई है, उनका नम्बर 38 है। जो सिविलियन्स घायल हुए थे, उनका नम्बर 2,180 है। अस्पताल से डिस्चार्ज किए गए सिविलियन्स 2,055 हैं और जो अस्पताल में अभी भी इलाज प्राप्त कर रहे हैं, ऐसे सिविलियन्स का नम्बर 125 है। सुरक्षा बलों के कार्मिकों की जो मृत्यु हुई है, उसमें एक की मृत्यु हुई है और यह भी सच है कि जो हमारी सिक्युरिटी फोर्सज के अधिकारी और जवान घायल हुए हैं, उनका भी नम्बर कोई कम नहीं है, उनका नम्बर 1,739 है। इतने सिक्युरिटी फोर्सज के जवानों के घायल होने के बावजूद जितना अधिकतम प्रिकॉशन लिया जा सकता था, जितना अधिकतम पेशेंस रखा जा सकता था, सिक्युरिटी फोर्सज ने किया। हो सकता है कि कहीं न कहीं किसी से कोई गलती हो गई हो, इस सच्चाई को भी नकारा नहीं जा सकता है।

चर्चा के दौरान यह बात आई कि पैलेट गन का प्रयोग किया गया। मैं यह मानता हूँ कि क्राउड को रोकने के लिए नान लीथल वेपन का ही पहले प्रयोग किया जाना चाहिए और हमारे देश में यह परम्परा भी रही है। बताया गया कि नान लीथल वेपन्स में बहुत लोग घायल हुए। यह बात सच है, मैं उस नम्बर का भी यहाँ पर उल्लेख करना चाहूँगा। लोग घायल हुए, इसमें कहीं दो मत नहीं है, लेकिन जो मृत्यु हुई है नान लीथल वेपन के माध्यम से, वह केवल एक की हुई है और घायल जो हुए हैं, जिनकी आँखों में चोट लगी है, उनका नम्बर लगभग 53 है, जिनमें से 23 लोग हैं, जिनकी एक आँख में चोट लगी है। यह पैलेट गन का प्रयोग पहली बार हुआ हो, ऐसा नहीं है। इसके पहले भी पैलेट गन्स का प्रयोग क्राउड को रोकने के लिए हुआ है। यह वर्ष 2010 में हुआ है। मैं किसी सरकार पर आरोप नहीं लगाना चाहता हूँ, लेकिन उस समय भी इसका प्रयोग हुआ था। उस समय जो मृत्यु हुई थी, वह 6 लोगों की मृत्यु हुई थी और 98 लोगों की आँखों में गहरी चोट लगी थी। पाँच लोग उसमें पूरी तरह से ब्लाइंड हो गए हैं। यह वर्ष 2010 में हुआ

है। मैं सदन को यह बतलाना चाहता हूँ कि नान लीथल वेपन्स का जहाँ तक सवाल है, हमारा यह मानना है कि जहाँ तक हो सके क्राउड को रोकने के लिए टीयर गैस का प्रयोग करना चाहिए, जहाँ तक हो सके हमें वाटर कैनन से क्राउड को रोकने की कोशिश करनी चाहिए। वैसे नान लीथल वेपन्स की श्रेणी जो बनी है, उसमें पैलेट गन्स भी आती हैं। मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि मैं एक एक्सपर्ट्स की कमेटी बनाऊँगा, जो कि यह देखे कि नान लीथल वेपन के रूप में पैलेट गन का जो प्रयोग किया जाता है तो इसके दूसरे अल्टरनेटिव क्या हो सकते हैं। इसके दूसरे ऑप्शंस क्या हो सकते हैं ताकि यदि कहीं पर क्राउड हो और यदि हम उसे रोकना चाहते हैं, तो उसका एक अल्टरनेटिव, जो इस नॉन पेलेट गन का नॉन लेथल वेपन हो सकता है, उसके माध्यम से वह कर सकें। इसलिए हमने फैसला किया है कि हम एक एक्सपर्ट कमेटी बनाएंगे, जो इस संबंध में अपनी रिपोर्ट दो महीने के अंदर देगी ताकि भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो सके।

जम्मू-कश्मीर में कुछ आतंकवादी घटनाओं की भी चर्चा मैं यहां पर जरूर करना चाहूँगा क्योंकि कल यह बात आई थी, कई माननीय सदस्यों ने यह सवाल खड़ा किया था कि टेररिस्ट इंसीडेंट्स बढ़े हैं। लेकिन, मैं उसके आंकड़ों को भी सदन के समक्ष रखना चाहूँगा। जहां तक इंसीडेंट्स का सवाल है, वर्ष 2012 में टेररिस्ट इंसीडेंट्स 220 हुए थे। वर्ष 2015 में यह 208 हुए हैं और उसके बाद अब तक 152 टेररिस्ट इंसीडेंट्स हुए हैं। सिविलियंस जो मारे गए, वर्ष 2012 में उनकी संख्या 15 थी, वर्ष 2014 में 28 थी और वर्ष 2015 में 17 थी और उसके बाद अब तक जो सिविलियंस मारे गए हैं, उनकी संख्या 5 है। यह मैं इस घटना के पहले की टेररिस्ट इंसीडेंट्स के बारे में बता रहा हूँ। अब तक जो मिलिटेंट्स मारे गए हैं, वर्ष 2012 में लगभग 72 मिलिटेंट्स की कीलिंग हुई है। मैं यह भी जानकारी देना चाहूँगा कि वर्ष 2015 में 108 मिलिटेंट्स की कीलिंग हुई है और उसके बाद 2016 में अब तक 86 मिलिटेंट्स की कीलिंग हुई है।

हमारे माननीय सदस्य कल्याण बनर्जी जी, जो शायद अभी यहां नहीं हैं, उन्होंने यह भी कहा था कि बहुत सारे मिलिटेंट्स बांग्लादेश के थ्रू भी प्रवेश करते हैं और वे पश्चिमी बंगाल में आते हैं। यह बात सच है। इंडो-बांग्लादेश की बाउंड्री का जहां तक सवाल है तो वह 4,096.7 किलोमीटर की है। इसमें रिवेराइन बॉर्डर करीब 930 किलोमीटर का है। लैंड बाउंड्री 3,166.7 किलोमीटर की है। इसमें लगभग 2727 किलोमीटर की फेंसिंग पूरी हो चुकी है। 400 किलोमीटर की बाउंड्री ऐसी है जिसकी फेंसिंग अभी तक नहीं हो पाई है। उसका कारण यह है कि फेंसिंग का काम करने के लिए जो लैंड एक्वीजीशन होना चाहिए वह कई एरियाज में नहीं हो पाया है। हम लोगों ने राज्य सरकार से भी अनुरोध किया था। लेकिन, अब मुझे

सदन को यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि अब यह मामला शॉर्ट-आउट हो चुका है और जल्दी ही इंडो-बांग्लादेश का जो शेष भाग बचा हुआ है, उस पर भी हम फेंसिंग का काम पूरा करेंगे।

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर) : मंत्री जी, इंडो-बांग्लादेश की मैरीटाइम बाउंड्री के बारे में ज़रा सोचिए। वह एकदम खाली पड़ा है।

श्री राजनाथ सिंह : उस मामले को भी हम लोग देख रहे हैं।

श्री मोहम्मद सलीम (रायगंज) : आपने स्मगलिंग की बात नहीं की।

श्री राजनाथ सिंह : अभी स्मगलिंग और सारी चीज़ों की चर्चा नहीं करेंगे क्योंकि यहां पर कश्मीर स्पेसिफिक डिस्कशन हो रहा है।

महोदया, मैं इतना कहना चाहता हूं कि कभी-कभी जनमत संग्रह की बात हुई। कल ज्योतिरादित्य ने रायशुमारी की बात कही। मैं यह नहीं समझ पाया कि यह रायशुमारी क्या है?

माननीय अध्यक्ष : नहीं, उन्होंने शब्द बदल दिया है। उन्होंने चर्चा और संवाद के बारे में कहा है।

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया (गुना) : अध्यक्ष महोदया, मैंने आपको क्लैरिफिकेशन दे दिया है। मैंने संवाद और चर्चा की बात की है, रायशुमारी की नहीं।

श्री राजनाथ सिंह : बहुत अच्छा। धन्यवाद। ये सारी चीज़ें पूरी तरह से आउटडेटेड और इर्रिलेवंट हो चुकी हैं।

कुछ माननीय सदस्यों ने कहा कि वहां पर एक पार्लियामेंटरी टीम भेजनी चाहिए ताकि वहां के लोगों के साथ संवाद कर सके और वहां के हालात को सामान्य बनाने की दिशा में वह प्रयास कर सके। मैं सदन को यह जानकारी देना चाहता हूं कि इस संबंध में जम्मू-कश्मीर की मुख्यमंत्री महबूबा जी से भी हमारी बातचीत हुई है। उन्होंने कहा कि थोड़ी स्थिति सामान्य होने के बाद मैं स्वयं दिल्ली आ रही हूं और इस संबंध में बातचीत करूंगी क्योंकि मैंने स्वयं अपनी भी इच्छा व्यक्त की थी कि मैं कश्मीर आना चाहता हूं और कश्मीर में मैं गवर्नर हाउस में नहीं रुकूंगा, बल्कि किसी गेस्ट हाउस में रुक कर कश्मीर के लोगों के साथ मैं सीधा संवाद स्थापित करना चाहता हूं। यह मैंने स्वयं अपनी तरफ से इच्छा व्यक्त की। उनका यही आग्रह था कि मैं कुछ ही दिनों के बाद दिल्ली आ रही हूं। आपसे बातचीत करने के बाद यह अच्छा होगा कि आप कश्मीर आएँ और लोगों के साथ संवाद स्थापित करें। मैं समझता हूं कि दो-तीन दिनों के अंदर उन्हें आना चाहिए। आज आल पार्टी मीटिंग कश्मीर में उन्होंने बुला रखी है। अभी स्थिति धीरे-धीरे वहां पर सामान्य हो रही है।

कुछ लोगों ने कहा कि कर्फ्यू के दौरान इंसेंशियल कमोडिटीज जो लोगों को उपलब्ध होनी चाहिए, वे उपलब्ध नहीं हो पा रही हैं, इसके बारे में भी सोचना चाहिए। ज्यों ही यह कर्फ्यू लगने का सिलसिला

प्रारम्भ हुआ था, वहां के मुख्यमंत्री जी से मैंने बात की थी। उन्होंने शाम के समय, रात्रि के समय कर्फ्यू में ढील देने का भी उस समय आदेश दिया था और कर्फ्यू में अब ढील दी जा रही है। कुछ स्थानों पर इसेंशियल कमोडिटीज भी सरकार की तरफ से लोगों को मुहैया कराई जा रही हैं।

प्रेस पर प्रतिबन्ध का एक सवाल चर्चा के दौरान खड़ा हुआ था। मैं समझता हूं कि सभी को जानकारी यहां के माध्यम से हो गई होगी। वहां की मुख्यमंत्री जी का यह कहना था कि प्रेस पर हमारी तरफ से ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं लगा था, लेकिन थोड़े समय के लिए इंटरनेट वगैरह जैसी चीजों को ब्लॉक किया गया था वहां के हालात को देखते हुए, लेकिन जो कुछ भी प्रतिबन्ध था, जो कुछ भी थोड़ी-बहुत रोक थी, वह पूरी तरह से समाप्त कर दी गई है। यह जानकारी मुझे यहां पर दी गई है। ... (व्यवधान)

श्री तथागत सत्पथी (धेंकानाल) : आज भी इंटरनेट नहीं चल रहा है। ... (व्यवधान)

श्री राजनाथ सिंह : सरकार ने बंद नहीं किया है। साथ ही यह भी कहा गया कि इंटरनेट के ऊपर बहुत सारी चीजें जो इस समय पोस्ट की जा रही हैं, एक चर्चा आई कि पुलिस का कोई व्यक्ति किसी लड़के को पैरों से दबा रहा है, मार रहा है, पीट रहा है, तो मैंने एक को निकालकर देखा, अब यह कहां तक सच है, कहां तक गलत है, मैं नहीं कह सकता हूं। यह तो उत्तर प्रदेश की घटना से संबंधित कोई फोटोग्राफ है। उसको भी वहां पर वायरल कराकर लोगों के अंदर एक उत्तेजना पैदा करने की कोशिश की जा रही है। यह बहुत पहले की कोई घटना है, यह उसका है, क्योंकि उस संबंधित अधिकारी को भी मैं अच्छी तरह पहचान रहा हूं, यह घटना वहीं की है। तरह-तरह की अफवाहें फैलाकर वहां के नौजवानों को लोग बरगलाने की कोशिश कर रहे हैं। मैं सदन को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि आप सभी के सहयोग से जम्मू-कश्मीर के हालात को सामान्य बनाने में हमें निश्चित रूप से कामयाबी हासिल होगी और मैं यह पुनः यकीन दिलाना चाहता हूं कि वहां के हालात को सामान्य बनाने में हम आप सभी का सहयोग प्राप्त करेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद।

HON. SPEAKER: Now, 'Zero Hour'.

... (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : करुणाकरण जी।

... (व्यवधान)

श्री रमेश विधूडी (दक्षिण दिल्ली) : अध्यक्ष जी, ... (व्यवधान)

HON. SPEAKER: No questions. He has replied. It is okay.

... (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : अब शून्य काल।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अब दोबारा प्रश्न नहीं।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अब हो गया न, चर्चा हो गई।

... (व्यवधान)

रसायन और उर्वरक मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री (श्री अनन्तकुमार): यह सदन की परम्परा नहीं है।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप बैठिए।

... (व्यवधान)

HON. SPEAKER: Shri Hari wants to say something.

... (*Interruptions*)

SHRI G. HARI (ARAKKONAM): It is about construction of check dam in Palar River. ... (*Interruptions*)

SHRI P. KARUNAKARAN (KASARGOD): Madam, I would like to raise a very serious issue. ... (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: What is it?

... (*Interruptions*)

SHRI P. KARUNAKARAN : I have given notice for Adjournment Motion but the Chair has allowed me to raise it in 'Zero Hour'. It is a very important matter. ...
(Interruptions)

The Government has decided to bring in 100 per cent FDI in the defence sector. We see that as a news item in every newspaper and also in the electronic media but the Government is not responsible enough to report all these issues in this House. ... (Interruptions) Of course, they have the majority. At the same time, they can report this issue and have the expression of our views in this issue. ... (Interruptions) It is not only in the defence sector but in the retail sector also the Government has changed the FDI percentage. ... (Interruptions) In the medical sector, we know that the prices of medicines have gone up.

At the same time, the Government has not taken any decision to control the price rise. The Government is interested to allow more and more FDI in Defence, retail and medicine sectors of the country. I would like to know the reason for taking such a decision. This decision has to be withdrawn.

HON. SPEAKER: S/Shri Mullapally Ramachandran, M.B. Rajesh, P.K. Biju and Adv. Joice George are permitted to associate with the issue raised by Shri P. Karunakaran.

SHRI G. HARI : Hon. Speaker, Madam, the Government of Andhra Pradesh is attempting to increase the height of the check dam.... (Interruptions)

श्री रमेश बिधुड़ी: अध्यक्ष जी, मुझे भी बोलने का मौका दिया जाए।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपको बाद में बोलने का मौका दूंगी।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : एक मैम्बर के बोलने के बाद ही दूसरे मैम्बर बोलेंगे।

... (व्यवधान)

SHRI G. HARI: The Government of Andhra Pradesh is attempting to increase the height of the check dam from the existing height of 5 feet to 12 feet across Palar river at Perumballam village, in Chittoor district near Andhra Pradesh-Tamil Nadu

border. As per Clause II of Madras-Mysore Agreement, 1892, the upstream States should not build any dam or structure to obstruct, divert or store waters of the river without previous consent of the downstream State of Tamil Nadu.

The Hon. Chief Minister of Tamil Nadu, Puratchi Thalaivi Amma has taken up the matter with the Andhra Pradesh Government seeking reduction of the level of the check dam to its original level and not to store water additionally and ensure natural flows to Tamil Nadu.

Palar river is an inter-State river flowing through the States of Karnataka, Andhra Pradesh and Tamil Nadu. Palar river supports an ayacut of about 4.2 lakh acres in Tamil Nadu. Farmers in the Northern Districts of Tamil Nadu, particularly the districts of Vellore, Kanchipuram and Tiruvallur solely depend upon this river for irrigation. Palar river with its sand strata is the only major source of drinking water supply to several towns and villages in the Northern districts of Tamil Nadu. Further, water from Palar is also supplied to the Atomic Power Station at Kalpakkam near Chennai.

Palar river is already deficient and the farmers in the lower riparian State of Tamil Nadu are dependent on it. Every drop of water from that river is absolutely important and thus cannot be compromised under any circumstances.

Considering the seriousness of the issue, I urge upon the Union Government to immediately intervene in this matter and safeguard the interest of Tamil Nadu.

HON. SPEAKER: S/Shri B. Senguttuvan, V. Elumalai, J.J.T Natterjee, K. Parasuraman, K. Ashok Kumar, P. Nagarajan, R.K. Bharathi Mohan, Shrimati V. Sathyabama and Dr. K. Kamraj are permitted to associate with the issue raised by Shri G. Hari.

श्रीमती मीनाक्षी लेखी (नई दिल्ली) : आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपके सामने एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा उठाना चाहती हूँ। आम आदमी पार्टी की एक महिला कार्यकर्ता में सुसाइड कमिट किया है। उसके पीछे जो कारण है, उसने पहले एफआईआर लिखवाई जिसमें उसने कहा कि किस प्रकार शोषण का मामला था। जब उस व्यक्ति को जमानत मिली तो उसने बताया कि आपको किसी ने, उसे वे नीचे के लैवल पर खत्म

करने का मामला कर रहे हैं। उसमें एक खास लाइन है जिसमें कहा गया है - आपको किसी ने पसंद कर लिया है, आपको कोई चाहता है। एक ऐसी पार्टी आम आदमी को बदनाम करने का काम कर रही है। राजनीतिक दलों में आम औरत की क्या हालत है, उसका व्याख्यान इस महिला ने अपनी एफआईआर में कराया है। जब सैक्सुअल हैरसमेंट एट वर्क प्लेस की बात होती है, इसी संसद ने वह कानून पारित किया। लेकिन उस कानून के पारित होने के बावजूद एक राजनीतिक दल जिसके अंदर वहां के कार्यकर्ता राजनीतिक काम कम और महिला को अपने बॉसेज के लिए प्रोव्क्योर करने का काम ज्यादा कर रहे हैं, ऐसे राजनीतिक दलों को इलेक्शन कमीशन द्वारा डीरिकगनाइज़ किया जाना चाहिए।

वह मुख्य मंत्री से जाकर मिलती है और उसके ऊपर दबाव बनाया जाता है कि तुम कम्प्रोमाइज़ करो। उसको अपनी बेटी और अपनी जान का खतरा रहता है। डिप्रेशन में आकर उस महिला ने वॉट्सएप पर मैसेज किया। सबसे बड़ी बात यह सामने आई है कि एमएलए की पत्नी के मोबाइल फोन से उस महिला को एसएमएस दिए जाते थे। जाहिर तौर पर पत्नी यह मैसेज नहीं दे रही है। इस एमएलए के नीचे जो तीन कार्यकर्ता थे, वे इस तरह की हरकत में उलझे हुए थे जिसमें उस पार्टी के दिल्ली के प्रदेश अध्यक्ष का नाम सामने आता है, लोकल एमएलए का नाम सामने आता है और तीन व्यक्ति उस पर गैर-जिम्मेदार तरीके से प्रेशर बना रहे थे कि वह अपने आपको कम्प्रोमाइज़ करे। शब्दों का चयन यहां तक है कि अगर राजनीति में आगे बढ़ना है तो आपको अपने देश के साथ कम्प्रोमाइज़ करना होगा।

मैं यह कहना चाहती हूं कि यह मामला केवल एक महिला के शोषण करने का नहीं है, एक ऐसा स्ट्रक्चर खड़ा करने का है जहां महिलाओं को शोषित किया जा रहा है। एक ऐसी पार्टी जिसके भीतर ऐसा काम हो रहा है, इलेक्शन कमीशन को इसका संज्ञान लेकर उस पार्टी को डीरिकगनाइज़ करना चाहिए। ... (व्यवधान) यह केस 506 और 509 में दर्ज हुआ है, अब अबेटमेंट टू सुसाइड का केस बनता है जिसके अंदर मुख्यमंत्री से लेकर एम.एल.ए और तीन अन्य लोग पर रिकार्डेड बयान के आधार पर अबेटमेंट टू सुसाइड का केस बनना चाहिए।

माननीय अध्यक्ष : श्री अश्विनी कुमार चौबे, श्री निशिकान्त दुबे, श्री प्रहलाद जोशी, श्री आलोक संजर, श्री देवजी एम. पटेल, श्री सुधीर गुप्ता, श्री रोडमल नागर, श्री भैरों प्रसाद मिश्र, श्रीमती ज्योति धुर्वे, कुमारी शोभा कारान्दलाजे, श्री शिवकुमार उदासि, श्री प्रताप सिन्हा, श्री नलीन कुमार कटील, श्रीमती दर्शना विक्रम जरदोश, श्रीमती जयश्रीबेन पटेल, श्री राजेश रंजन, श्री राघव लखनपाल, कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल, श्री महेश गिरी, श्री मनोज तिवारी, श्री उदित राज, श्री लखन लाल साहू और श्री अभिषेक सिंह को श्रीमती मीनाक्षी लेखी द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

आप सभी एसोसिएट कर सकते हैं। आप अपने-अपने नाम दे दो।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैं समझ रही हूँ, आपसे ज्यादा अच्छे तरीके से समझ रही हूँ।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अनुराग जी, प्लीज बैठिए। आप लोग एसोसिएट कीजिए, ऐसा नहीं होता। उन्होंने इस विषय को अच्छे तरीके से उठाया है।

Nothing will go on record.

... (*Interruptions*)... *

माननीय अध्यक्ष : आप एसोसिएट कीजिए मैं मना नहीं कर रही हूँ।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : चिल्लाते क्यों हो? मुझे कुछ नहीं समझ में आ रहा है। प्लीज बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : जो भी विषय उठाना उसे बहुत अच्छे शब्दों में उठाना, एलिगेशन और चिल्लाना ठीक नहीं है। मीनाक्षी लेखी ने बहुत अच्छे तरीके से उठाया।

* Not recorded.

12.37 hours**SUBMISSION BY MEMBER****Re: Disparaging remarks made by BJP State Vice-President, U.P. against
BSP Leader**

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया (गुना) : अध्यक्ष महोदया, पिछले दो वर्ष में इस सरकार के कार्यकाल में इतनी घटनाएं दलितों के विरुद्ध इस देश में हो रही हैं, चाहे हरियाणा हो, गुजरात हो, ऊना में हो, चाहे रोहित वेमुल्ला का मामला हो या मुंबई का मामला हो। नारी को इस देश में पूजनीय स्थान है भगवान सरस्वती, भगवान दुर्गा का पूजनीय स्थान है, उसकी मान्यता को देश के हर नागरिक को रखने का दायित्व होना चाहिए, लेकिन जब सरकार के जिम्मेदार लोग गैर-जिम्मेदार टिप्पणी करते हैं और उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई न हो तो इससे बड़ी बुरी बात इस देश के अंदर नहीं हो सकती। दयानंद सिंह जी ने उत्तर प्रदेश के उपाध्यक्ष हैं, मायावती जी के विरुद्ध जिन शब्दों का प्रयोग किया है ...(व्यवधान) मायावती जी उत्तर प्रदेश की चार बार मुख्यमंत्री रही हैं। वे संसद में सांसद हैं उनके विरुद्ध जिन शब्दों का प्रयोग हुआ है उसका मैं वाचन नहीं कर सकता हूं। उनके विरुद्ध केवल निंदा और बर्खास्ती नहीं बल्कि उनके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए तभी हम कह पाएंगे कि दलितों को न्याय मिल पाया है। बाबा साहब अम्बेडकर का संकल्प लेकर यह सरकार चल रही है वास्तव में यह सरकार दलित मुक्त भारत चाहती है।

उस शख्स के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए ताकि इस देश में दलितों को न्याय मिल सके। मैं सरकार से मांग करता हूं और मंत्री जी से भी मांग करता हूं ...(व्यवधान) इसका जवाब हम चाहते हैं। इस हाऊस से रिज्यूलेशन पास होना चाहिए कि ऐसी टिप्पणियों के विरुद्ध सरकार द्वारा कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए।

माननीय अध्यक्ष : एडवोकेट जोएस जॉर्ज, श्री एन.के.प्रेमचन्द्रन, श्री डी.के.सुरेश और श्री राजेश रंजन को श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

रसायन और उर्वरक मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री (श्री अनन्तकुमार): अध्यक्ष महोदया, कुमारी मायावती जी के खिलाफ जो टिप्पणी हुई है उसकी हमने घोर निंदा की है और उस बारे में दूसरे सदन में भी हमने खेद प्रकट किया है। जिन्होंने टिप्पणी की है, हम उसके बारे में कार्रवाई की कर चुके हैं और बाकी वहां का

कानून प्रशासन देखेगा। मेरा मानना है कि जो सार्वजनिक डिस्कॉर्स होता है, डिबेट होता है, संवाद होता है वह इतना नीचे स्तर में नहीं जाना चाहिए। उसे हम सभी को मिलकर ठीक रखने की कोशिश करनी चाहिए।

HON. SPEAKER: It cannot happen something like that. Please take your seat.

Shri Subhash Chandra Baheria.

... (Interruptions)

HON. SPEAKER: Let me complete the list now. I am sorry.

... (Interruptions)

HON. SPEAKER: Nothing, except the statement of Shri Subhash Chandra Baheria, will go on record.

...(Interruptions)... *

HON. SPEAKER: I have taken his name. This is not the way.

... (Interruptions)

SHRI JYOTIRADITYA M. SCINDIA: Madam Speaker, we are walking out.

12.51 hours

(At this stage, Shri Jyotiraditya M. Scindia and some other hon. Members left the House.)

श्री सुभाष चन्द्र बहेड़िया (भीलवाड़ा) : माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं बहुत महत्वपूर्ण विषय को सदन में प्रस्तुत करते हुए राजस्थान के ग्रामीण पोस्ट ऑफिसेस में ब्रॉडबैंड की सुविधा की तकलीफ के बारे में आपके माध्यम से सदन को बताना चाहता हूँ। हमारे एरिया राजस्थान में ब्रॉडबैंड की सुविधा 94 पोस्ट ऑफिसेस में नहीं है और इसका कारण भारत संचार निगम लिमिटेड और पोस्ट ऑफिसेस के बीच में हुआ वह करार है जिसके अन्तर्गत ब्रॉडबैंड पोस्ट ऑफिसेस को कॉपर मीडिया के मार्फत दिया जाएगा और कॉपर मीडिया की जो स्ट्रेंथ है, वह तीन किलोमीटर की है। यदि टेलीफोन एक्सचेंज से कोई पोस्ट ऑफिस तीन किलोमीटर

* Not recorded.

से ज्यादा दूर है, तो उसे उस मीडिया के मार्फत ब्रॉडबैंड नहीं मिल सकता है। ऐसी स्थिति में यदि कोई पोस्ट ऑफिस ब्रॉडबैंड की सुविधा चाहता है तो उसके लिए फाइबर मीडिया की जरूरत पड़ेगी।

अध्यक्ष महोदया, मेरा आपके माध्यम से सरकार से निवेदन है कि तुरन्त प्रभाव से ग्रामीण पोस्ट ऑफिसेस को यह परमीशन दी जाए कि वे फाइबर मीडिया से भी कनेक्शन ले सकें, ताकि ग्रामीण पोस्ट ऑफिसेस में सीधे ब्रॉडबैंड की सुविधा चालू हो सके। धन्यवाद।

HON. SPEAKER: Shri Devji Patel, Kunwar Pushpendra Singh Chandel, Shri Rodmal Nagar, Dr. Manoj Rajoria, Shri Bhairon Prasad Mishra are permitted to associate with the issue raised by Shri Subhash Chandra Baheria.

SHRI B.S. YEDIYURAPPA (SHIMOGA): Madam Speaker, thank you very much for giving me this opportunity. In the State of Karnataka, there a feeling amongst the Government officials that they are not safe in the State. There is a sense of anarchy prevailing in the minds of the bureaucrats. The police officers are being subjected to insult, humiliation and ill-treatment and frequent transfers are also being effected. Two police officers in Karnataka of the rank of DOSP, * have committed suicide. Before committing suicide DOSP ... *had given interview to a TV channel and he named ... * the ex-Cabinet Minister of Karnataka and two other higher officials as responsible if anything happened to him. ... * was a young police officer but he committed suicide because he was suspended...
(Interruptions)

HON. SPEAKER: Please do not take names.

SHRI B.S. YEDIYURAPPA : One lady officer ... * DOSP resigned in disgust due to harassment and ill-treatment by the Minister in charge. She was fighting against the *mafias*.

HON. SPEAKER: Names will not go on record.

SHRI B.S. YEDIYURAPPA: One officer ... * tendered resignation due to repeated transfers.

HON. SPEAKER: Names will not go on record.

* Not recorded.

12.53 hours

(At this stage, Shri R. Dhruvanarayana and some other hon. Members came and stood on the floor near the Table.)

SHRI B.S. YEDIYURAPPA: One lady officer, namely, Ms. Reshmi Mahesh was assaulted in Mysore. An IAS officer... * was assaulted, humiliated and insulted by ... * a close confidant of the ... * . The Collector lodged a police complaint. The District Court rejected the bail application but still he is not arrested. One ... * Assistant Commissioner was transferred 24 times in three years. Now he is thinking of taking VRS. Day before yesterday a lady ... * attempted suicide in police station due to threat from senior officials.

HON. SPEAKER: Names are not going on record.

SHRI B.S. YEDIYURAPPA: This shows that the Government of Karnataka does not want efficient, honest and sincere officers to function. I would like the Union Government to issue necessary instructions to safeguard the interest of the officials and handover the suicide cases of ... * to the CBI for enquiry.

** **Madam Speaker, on 4th of July 2015 ... * Dy. Superintendent of Police committed suicide at Madikeri. Prior to that in an interview to a television channel, he talked about his trauma leading to mental stress and persons responsible for the same. However, the Hon. Home Minister of Karnataka in his statement on the floor of the House in the Karnataka Legislative Assembly mentioned that the internal disputes in the family was reason for his death. ... * was very much hurt by such a statement and wrote to the Hon. Prime Minister seeking CBI enquiry into the suicide of her husband ... *. Although ... * committed suicide at 5.00 PM, the information was not made known to anyone except to his father till 8 PM. In the meantime the police recorded the statement of his father and thereafter the news of ... * suicide was made available to the

* Not recorded.

**** English translation of this part of the speech was originally delivered in Kannada.

world. Besides this, there was one more police officer in the same rank, ... * committed suicide at Chikmagalur on 5th July 2015. Apart from this two police officers resigned namely ... * IPS officer and ... * DSP, who joined the service just one and half years ago. ... * IAS officer belonging to Scheduled Caste community, was threatened and harassed by a close confidant of the Hon. Chief Minister of Karnataka. There are number of such incidents taking place in the state.

Therefore I request the Union Government to order CBI enquiry into these incidents. I would like to bring to the notice of the Union Government the law and order in the State of Karnataka is completely derailed. I have also brought this to the notice of the Hon. Prime Minister and the Hon. Home Minister. Let the truth come out from an appropriate enquiry by the CBI. I once again urge upon the Union Government to do justice to the bereaved families of the police officers, who committed suicide in Karnataka by handing over the cases to CBI. Thanking you.

HON. SPEAKER Shri Bhairon Prasad Mishra, Kunwar Pushpendra Singh Chandel, Shri Shivkumar Udasi, Kumari Shobha Karandlaje, Shri P.C. Mohan, Shri Pratap Simha, Shri Bhagwanth Khuba and Shri Pralhad Joshi are permitted to associate with the issue raised by Shri B.S. Yediyurappa.

... (*Interruptions*)

12.56 hours

(At this stage, Shri R. Dhruvanarayana and some other hon. Members went back to their seats.)

DR. P. VENUGOPAL (TIRUVALLUR): Madam, please allow me to speak....
(*Interruptions*)

* Not recorded.

HON. SPEAKER: You can associate. You can give your name for it. You cannot speak on it.

... (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: According to rule, you have to give your name to associate. Now Mohammed. Faizal may speak.

MOHAMMED FAIZAL (LAKSHADWEEP): Madam, the one and only established passage to Lakshadweep is through ship and the sea, except Agatti Island where an air strip is there. I would say that Lakshadweep is the most unsafe area in our country for embarkation and disembarkation on ship. It becomes very worse and it is at its maximum during the monsoon season. We have the history of losing our lives. Some people have permanently become disabled due to unsafe embarkation and disembarkation. I am particularly talking about developing infrastructure for embarkation and disembarkation of passengers to the ship and to the shore.

Taking into consideration this problem, the Administration of Lakshadweep has proposed for construction of eastern jetties and break waters, deepening and widening of entrance channels. All those things are in place.

My only request to the Government, specially to the Ministry of Shipping, is this. Those areas where we have constructed eastern side jetties are not in operation full time because it is in the open sea. The Government has to come out with some solution for effective utilization of these eastern side jetties. Only then people will be able to embark and disembark properly.

Secondly, we can have deepening and widening of entrance channels. This is also a big concern for the islanders where ship can enter inside and berth alongside.

Thirdly, I have a video clip in my mobile, which I can show you, Madam, displaying the hardship when I traveled with my family to attend this Monsoon Session. The people of Lakshadweep are still facing such a hardship.

There is a proposal for construction of break waters in my own island, Andrott, which is of 700 meters and which costs around Rs. 660 crore. This project has been put on the back seat only because of shortage of funds. Now that cost may escalate to Rs. 1000 crore.

If the Government values the lives of the people rather than money, they should take immediate steps in this regard. By God's mercy, I am standing here today. Madam, I will show you the video clipping, if you permit me, in your cabin.

The point is, the break water is the only solution for the people of Andrott to travel to the mainland. If the Government sanctions some additional fund for the construction of break waters and other infrastructure which I have mentioned, it will be very great of the Government.

HON. SPEAKER: Kunwar Pushpendra Singh Chandel is permitted to associate with the issue raised by Mohammed Faizal.

13.00 hours

SHRIMATI MAUSAM NOOR (MALDAH): I would like to draw your kind attention to a very tragic incident in which eight labourers belonging to my constituency in Maldaha, West Bengal were washed away and one labourer was severely injured which they were working on the Amochu bailey suspension bridge over Amochu river in Bhutan which suddenly collapsed.

The deceased labourers were very young. They had gone all the way to Bhutan in search of employment to sustain their poor families. I visited the homes of the deceased and I am at a loss of words in expressing the dismal condition of the families. They are totally shattered by their loss and their future is in peril since the deceased were the sole bread earners of the families.

The Royal Government of Bhutan has announced an *ex-gratia* payment of Bhutanese Ngultrum 10,000 to the family of each deceased worker.

Through you, I urge upon the Government of India to help the families of the deceased labourers by providing monetary help and also their next of kin with

a permanent job so that the future of the family is sound and their children can look forward to a promising life ahead. Thank you.

HON. SPEAKER: Kunwar Pushpendra Singh Chandel is allowed to associate with the matter raised by Shrimati Mausam Noor.

SHRIMATI V. SATHYABAMA (TIRUPPUR): Hon. Speaker, I seek your permission to speak from this seat.

HON. SPEAKER: All right.

SHRIMATI V. SATHYABAMA: Madam, I would like to bring to the notice of the Government the crisis being faced by the garment/dyeing industry of Tirupur in Tamil Nadu where the livelihood of more than five lakh workers are at stake, for it to be remedied.

The CETPs, that is Common Effluent Treatment Plants, of Tirupur are under threat of closure because of the actions taken under SARFAESI Act, whereby all the CETP accounts are classified as NPA.

Having understood this crisis, the Chief Minister of Tamil Nadu, hon. Amma had represented this issue to the hon. Prime Minister of India twice. We have been requesting the Centre to sanction a special grant of Rs. 200 crore to settle the bank dues and also to complete the ZLD project. Even after repeated requests made by the State Government of Tamil Nadu, this request has not found favour with the Centre.

Our proposal was first sent to the Ministry of Textiles which sent it to the Ministry of finance with very strong recommendations, which found its way to NITI Aayog. ... (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Please put your demand. Do not read out all these things.

SHRIMATI V. SATHYABAMA: I will take only half a minute Madam.

After studying the proposal, it also made strong recommendations and sent it to the Ministry of Commerce and Industry for sanction of grant. But ultimately the Ministry of Commerce and Industry sent it back saying 'insufficient funds to consider the proposal favourably'.

If this proposal is not considered favourably and if there is a delay of one more month to sanction Rs. 200 crore, then the assets of CETPs will be taken over by the banks under the SARFAESI Act, and the dyeing industries will face closure and the livelihood of five lakh workers will be affected.

So, I would request the Government of India to consider this and immediately sanction Rs. 200 crore for reviving this industry from the prospect of imminent closure. Thank you.

श्री आर.के.सिंह (आरा) : आदरणीय अध्यक्ष महोदया, आपने मुझे सदन में एक महत्वपूर्ण विषय को उठाने का मौका दिया, उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं एक बहुत ही गंभीर विषय उठाना चाहता हूँ, जो हम सबको कन्सर्न करता है। मेरी बात से सब सहमत होंगे कि मनी पावर और क्रिमिनलाइजेशन के कारण लोकतांत्रिक व्यवस्था अब चरमरा गयी है।

अध्यक्ष महोदया, बिहार में अभी हाल ही में पंचायत चुनाव हुए। एक-एक मुखिया ने चुनाव में 15 लाख रुपये से लेकर 20 लाख रुपये खर्च किये। वहां वोट खरीदने के लिए मतदाताओं को पैसा दिया गया। इससे पहले जब एमएलसी के चुनाव हुए, तब भी हमने देखा कि मतदाताओं से वोट खरीदे गये।

अध्यक्ष महोदया, इसी तरह से हर चुनाव में मनी पावर व्याप्त है। क्रिमिनलाइजेशन की हालत यह है कि प्रायः सभी सदन में आपराधिक पृष्ठभूमि के लोग नजर आ जाते हैं। इसका कारण यह है कि हमारी न्यायिक व्यवस्था चरमरा गयी है। लोगों पर 15-20 आपराधिक केसेज रहते हैं, लेकिन वे स्वच्छन्द घूमते रहते हैं। कालान्तर में एमपी-एमएलए बन जाते हैं और वह दिन दूर नहीं है, जब वे मन्त्री भी बन जाएंगे।

माननीय अध्यक्ष : चुनाव सुधार की बात है।

श्री आर.के.सिंह: अध्यक्ष महोदया, क्रिमिनलाइजेशन और मनी-पावर के कारण लोकतंत्र में लोगों की आस्था समाप्त हो रही है। नेताओं पर से लोगों का विश्वास उठ गया है। यह बात हम सभी को समझना चाहिए और हम लोग इसमें सुधार नहीं करेंगे तो यह व्यवस्था ज्यादा दिन नहीं चल सकती है।

मेरा सभी दलों से अनुरोध है कि सभी पार्टीज मिलकर बैठें और इस पर विचार करें। राजनीति से मनी-पावर, करप्शन और क्रिमिनलाइजेशन को दूर करने पर विचार करें।

माननीय अध्यक्ष : कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल, श्री भैरों प्रसाद मिश्र, श्री अनूप मिश्रा, श्री आलोक संजर, श्री रोडमल नागर, श्री सुधीर गुप्ता, श्री शरद त्रिपाठी, डॉ. मनोज राजोरिया, श्री बलभद्र माझी, एवं श्री रवीन्द्र कुमार जेना को श्री आर.के.सिंह द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

श्रीमती रीती पाठक, आपने कोई विषय दिया है?

श्रीमती रीती पाठक (सीधी) : जी, नहीं।

माननीय अध्यक्ष : क्या आपको मालूम नहीं है? चलो, छोड़ो, बहुत अच्छा है।

कौन डालता है आपका जीरो ऑवर का नोटिस?

डॉ. जे. जयवर्धन।

DR. J. JAYAVARDHAN (CHENNAI SOUTH): Hon. Speaker, the Sri Lankan Government continues to infringe upon the historically enjoyed rights of our fishermen to fish in the traditional waters of the Palk Bay. The Sri Lankan Navy has escalated the frequency and magnitude of incidents of abduction of our fishermen and seizure of boats and fishing equipments, which are going on undeterred in recent days. Our hon. Chief Minister of Tamil Nadu, *Puratchi Thalaiva Amma* had requested the hon. Prime Minister to direct the Ministry of External Affairs to take up this matter with the concerned authorities in Sri Lanka and bring an immediate halt to the apprehension of Tamil Nadu fishermen, and ensure immediate release of precarious boats, which continue to suffer great damage, and secure the immediate release of our 77 fishermen and 102 fishing boats. Unabated apprehension of Tamil Nadu fishermen and seizure of their fishing boats should be brought to an end. Our Katchatheevu Island should be retrieved, which would resolve this vexatious issue.

HON. SPEAKER: Shri Bhairon Prasad Mishra and Shrimati V. Sathyabama are permitted to associate with the issue raised by Dr. J. Jayavardhan.

Hon. Members, you can take one or two minutes only. I will not allow you to read the whole thing. You have to raise the issue. That is all.

SHRIMATI RAKSHATAI KHADSE (RAVER): The Railway Board has constituted a Committee to formulate the policy for recruitment of Course Completed Act Apprentices (CCAA) in Railways. The Committee has recently forwarded its recommendations and accordingly, the Railway Board has decided to provide 20 per cent reservations for these candidates in all the recruitment

drives in the respective discipline and Zones of Railways in the open market in Pay Band 1.

These candidates have completed the course in accordance with the Apprentice Act; trained in various establishments of Railways; appeared for the examinations granted by the National Council of Vocational Training (NCVT); and possesses National Apprenticeship Certificate.

Whenever there is a recruitment drive in the said Pay Band of Railways from open market, these candidates have to appear for the examination again and get qualified to be engaged under the preference reservation of 20 per cent. As many such issues of apprenticeship has been handled prior to this notification, there is a need to go for direct recruitment of all the willing candidates who have completed the said Course with the discretion of the General Manager of the respective Zones of Railways.

माननीय अध्यक्ष : क्या सजेशन है, वह बताइए।

SHRIMATI RAKSHATAI KHADSE: I would take only a couple of minutes more, Madam.

It is a fact that in the Western Railways there are many such Course Completed Apprentices waiting for engagement from batches passed out in the year 2010 onwards.

As these candidates have already cleared and passed out the course and trained in Railways own establishments, it is needless to ask them to appear for the examinations for their own reserved and preference quota of recruitment 20 per cent.

माननीय अध्यक्ष : ठीक है, आपकी बात हो गयी।

मैं पढ़ना एलाऊ करने वाली नहीं हूं। जीरो ऑवर का अर्थ होता है कि जो आपकी मेन समस्या है, उसे उठाना है। लम्बा-चौड़ा भाषण नहीं पढ़ना है। अब सभी को साल-दो साल हो गए हैं।

SHRIMATI RAKSHATAI KHADSE: Through you, Madam, I would like to request the hon. Minister to recruit these candidates as per their merit granted by

the NCVT for the National Apprentice Certificate. I would also request the hon. Minister to increase the preference reservation to 40 per cent instead of 20 per cent so that many of the Apprentices, who complete the course, will be engaged in the Railway Service before they cross the age fixed for recruitment. Also on the same grounds, 40 per cent preferential reservation may be provided for the Ordnance Factory.

HON. SPEAKER: Shri Sharad Tripathi and Kunwar Pushpendra Singh Chandel are permitted to associate with the issue raised by Shrimati Rakshatai Khadse.

श्री देवेन्द्र सिंह भोले (अकबरपुर): माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं सदन के माध्यम से आपको अवगत कराना चाहता हूँ कि माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के तत्वाधान में चलायी जा रही भारत के विकास की दिशा में अत्यन्त तीव्रता प्रदान की जा रही है किंतु खेद के साथ आपको सूचित करना पड़ रहा है कि माननीय प्रधान मंत्री जी के द्वारा वर्ष 2018 तक प्रत्येक गांव में बिजली पहुंचाने की योजना घोषित हुई है। उसमें उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा घोर लापरवाही बरती जा रही है और अब तक मात्र 25 प्रतिशत गांवों का ही विद्युतीकरण हुआ है जिसके उदाहरणस्वरूप हमारे कानपुर नगर के 1792 गांवों में से 255 गांव और कानपुर देहात के 336 गांवों का ही अभी तक विद्युतीकरण हुआ है।

इसके अलावा खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि इसकी जो अंतिम अवधि है, 1 अक्टूबर 2016 तक पूरी हो जानी चाहिए। सितम्बर 2014 से लेकर 2016 तक की अक्टूबर की अवधि दी गई है। विभागीय अधिकारियों की लापरवाही इस हद तक है कि जो बिजली का काम करने वाले स्थानीय ठेकेदार हैं, शासन के लोग हैं, उनके द्वारा जिस गांव का विद्युतीकरण होता है, उसमें पोलों को ले जाने के लिए उनके साथ जबरदस्ती की जाती है जिसके तहत हमारे दो विकास खंडों में भीतर गांव विकास खंड के बृहर गांव में दो लोगों की मौत हो गई और कल्याणपुर विकास खंड के तीन लोगों की मौत हो गई। खेद का विषय है कि अभी तक उन लोगों को प्रदेश सरकार द्वारा पारिवारिक लाभ योजना के अलावा उन्हें कुछ नहीं दिया गया है। अतः मैं आपके माध्यम से मांग करता हूँ कि मृतकों के परिवारों को दस दस लाख रुपये की राशि प्रदान की जाए और काम के जल्दी निस्तारण की व्यवस्था की जाए। लापरवाही बरतने वाले कर्मचारियों के खिलाफ भी विभागीय कार्रवाई की जाए।

माननीय अध्यक्ष : श्री भैरों प्रसाद मिश्र, कुंवर पुष्पेन्द्र सिंह चंदेल और श्री मुकेश राजपूत को श्री देवेन्द्र सिंह भोले द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

डॉ. किरीट सोमैया (मुम्बई उत्तर पूर्व) : माननीय अध्यक्ष जी, कुछ दिन पहले बंगलादेश ढाका में जो हत्याकांड हुआ, जो आतंकवाद का कहर बरपा, उसमें मुम्बई के डॉ. जाकिर नाईक जो एक प्रचारक हैं, उनका नाम आगे आया। उनके द्वारा जो भाषण किये जाते हैं, इललीगल गैर-कानूनी पीस टी.वी. चैनल चलाया जाता है। उसका क्या प्रभाव होता है? इस बारे में अनेक प्रश्न उठे हैं। महाराष्ट्र सरकार और केन्द्र सरकार इसकी जांच कर रही है। आई एंड बी मिनिस्ट्री ने कुछ कार्यवाही की है। मैं आपके द्वारा सरकार से प्रार्थना करूंगा कि डॉ. जाकिर नाईक का क्या स्टेटस है? वह किस प्रकार का भाषण करते हैं? उनके कारण हिन्दुस्तान के नौजवान आतंकवाद के प्रति क्या प्रेरित होते हैं? जो उसकी जांच चल रही है, वह सदन के सामने रखे।

माननीय अध्यक्ष : श्री भैरों प्रसाद मिश्र, कुंवर पुष्पेन्द्र सिंह चंदेल, श्री सुधीर गुप्ता, श्री राजेन्द्र अग्रवाल, श्री रोडमल नागर और श्री आलोक संजर को डॉ. किरीट सोमैया द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

SHRI MUTHAMSETTI SRINIVASA RAO (AVANTHI) (ANAKAPALLI):
Madam Speaker, I thank you for giving me the opportunity to raise a matter of urgent public importance.

Madam, after the Andhra Pradesh Reorganisation Act was enacted by Parliament in 2014, the previous UPA Government had promised to grant Special Category Status to Andhra Pradesh State for five years to offset losses it could suffer because of the State's bifurcation. On the floor of the House the former Prime Minister Dr. Manmohan Singh gave the promise. So I request the present Government to please grant Special Category Status to Andhra Pradesh because if the Prime Minister says something, people believe that, either former Prime Minister or the present Prime Minister. All the political parties, including the BJP, supported granting Special Category Status to Andhra Pradesh. As the House knows, the Seemandhra regions vehemently opposed the split and punished the Congress Party in the General Election as well as in the State Election held simultaneously in Andhra Pradesh.

Madam, the BJP was kind enough to demand in Parliament that Special Category Status should be given to Seemandhra for 10 to 15 years. Already there

is unrest among the people of Andhra Pradesh for not getting Special Category Status. If the decision is delayed further, then it becomes difficult for elected representatives to convince the people. The Central financial assistance to a Special Category Status is calculated in such a manner that 90 per cent of it is deemed as grant and the remaining 10 per cent is considered as loan.

With bifurcation of Andhra Pradesh, Seemandhra has suffered huge financial losses. IT industry, infrastructure industries, educational institutions and public sector undertakings are concentrated only in Telangana State. We have to build everything from scratch. In spite of financial constraints, our hon. Chief Minister Shri N. Chandrababu Naidu has embarked on an ambitious programme of building the new Capital City, inviting FDIs and creating infrastructure. It is a humungous task. If Special Category Status is given to Seemandhra, then these things can be implemented in a smooth way.

There is a demand for grant of a special package for seven districts in Andhra Pradesh. The Government of India had given Rs. 50 crore. It is not enough. We request that the Government of India should give Rs. 200 crore for each district. ... (*Interruptions*)

Therefore, through this House, I urge upon the NDA Government to grant Special Category Status to Andhra Pradesh at the earliest.

HON. SPEAKER: Shri Bhairon Prasad Mishra is permitted to associate with the issue raised by Shri Muthamsetti Srinivasa Rao (Avanthi).

श्री प्रतापराव जाधव (बुलढाणा) : अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से सदन को सूचित करना चाहूंगा कि वित्तीय वर्ष 2015-16 में जालना-खामगाव के बीच 162 किलोमीटर ब्रॉडगेज लाइन निर्माण करने का प्रावधान किया गया था, इसे पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत बनाये जाने का भी उसमें सम्बोधित किया था। इस प्रस्तावित रेलवे लाइन का मराठवाड़ा तथा विदर्भ के लोगों ने जोरदार स्वागत किया। इस रेलवे लाइन के बनने से विदर्भ तथा मराठवाड़ा को जोड़ा जा सकेगा। महाराष्ट्र में एक नया रेलवे नेटवर्क मिलने की आशा की किरण जगी थी, परन्तु एक साल हो गया, लेकिन इस रेलवे लाइन का कोई अता-पता नहीं है। उपरोक्त रेलवे लाइन विदर्भ तथा मराठवाड़ा के पिछड़े क्षेत्रों को विकास करने की एक नई शुरुआत थी।

इस रेलवे लाइन पर काम नहीं शुरू किए जाने से जनता में बहुत रोष है, जनता में काफी आक्रोश है और सरकार के प्रति विरोध पनप रहा है। कुछ संगठन इस के लिए आंदोलन करने का विचार कर रहे हैं। जालना और खामगाव के बीच रेलवे लाइन बिझाने की मांग लगभग 100 साल पुरानी है।

अध्यक्ष महोदया, मैं सदन के माध्यम से सरकार से अनुरोध करता हूं कि रेलवे बजट में प्रावधान होने के अनुसार खामगाव-जालना के बीच नई ब्रॉडगेज रेलवे लाइन बनाने का कार्य शीघ्र किया जाये और प्रस्तावित रेलवे लाइन की वर्तमान स्थिति क्या है, इससे सदन को अवगत कराया जाये। धन्यवाद।

डॉ. मनोज राजोरिया (करौली-धौलपुर): अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान, राजस्थान में इंफॉर्मेशन और टेक्नोलॉजी के संचार सुविधा के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में जो कार्य किये जाने चाहिए, उनके समक्ष क्या चुनातियां आ रही हैं, इसका ध्यान दिलाना चाहता हूं।

महोदया, इंफॉर्मेशन एंड टेक्नोलॉजी विभाग के द्वारा प्रधानमंत्री जी के निर्देश पर बहुत अच्छे कार्य किये जा रहे हैं और प्रधानमंत्री जी का उद्देश्य है कि इंफॉर्मेशन एंड टेक्नोलॉजी का फायदा दूर-दराज के गांव के लोगों को भी मिले। इसी उद्देश्य के लिए उन्होंने विभिन्न प्रकार के पोर्टल्स का निर्माण किया है, ऐप्स का निर्माण किया है और आई.टी. के माध्यम से गांव तक लोगों को सरकार की सुविधाओं का फायदा, शिक्षा के माध्यम से किसानों और छात्रों को फायदा देने का काम किया, लेकिन दुर्भाग्य का विषय है कि राजस्थान में आई.टी. डिपार्टमेंट के द्वारा जो कार्य किया जा रहा है, विशेषतौर पर जो 'डिजिटल लिटरेसी प्रोग्राम' है, उसकी प्रगति बहुत धीमी है। आज प्रधानमंत्री जी का सपना है कि प्रत्येक ग्राम पंचायत में ब्रॉडबैंड की सुविधा दी जाए।

अध्यक्ष महोदया, मैं आपको ध्यान दिलाना चाहता हूं कि राजस्थान का, विशेषतौर से मेरे संसदीय क्षेत्र करौली-धौलपुर के प्रत्येक ग्राम पंचायत में जो ब्रॉडबैंड की सुविधा होनी चाहिए, वह सुविधा अभी तक नहीं पहुंच पाई है, उसका कार्य बहुत धीमा है। मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि वह कार्य तीव्र गति से किया जाये ताकि जनता को लाभ मिल सके।

माननीय अध्यक्ष: श्री भैरों प्रसाद मिश्र और कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल को डॉ. मनोज राजोरिया द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

श्री संतोख सिंह चौधरी (जालंधर) : अध्यक्ष महोदया, भारत देश के संविधान के अनुसार हमारा देश धर्मनिरपेक्ष देश है, यहां सभी धर्मों का सम्मान किया जाता है, लेकिन दुःख की बात है कि पिछले समय से पंजाब में हमारे महान गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी हो रही है। पिछले साल गुरु ग्रंथ साहिब की मोगा, फरीदकोट और तरणतारण में बेअदबी हुई है, प्रोटेस्ट हुए और बहुत सारी मौतें भी हुई, लेकिन अब यह

दोबारा शुरू हुई है, जो आम आदमी पार्टी है, उसके लीडर्स ने, उसके लोगों ने अपने इलेक्शन का जो मैनिफेस्टो बनाया है, उसमें दरबार साहिब की तस्वीर लगा कर अपने इलेक्शन का सिम्बल झाड़ू लगाया है। इससे हमारे सिख जाति के जो लोग हैं, गुरु ग्रंथ साहिब को मानने वाले जो लोग हैं, उनमें बड़ी भारी रोष है, उनकी भावनाओं को ठेस पहुंची है।

इसके अलावा अभी एक और बड़ी इन्सिडेंट हुई है, अभी कश्मीर की भी बात हुई है, मलेरकोटला पंजाब का एक शहर है, जहां तमाम आबादी मुस्लिम भाईचारे की आबादी है और वहां हमेशा शांति रही है। इवन, जब देश का बंटवारा हुआ, तब भी यह शहर शांत रहा, इसमें कोई इन्सिडेंट नहीं हुई, लेकिन दुःख की बात है कि पिछले दिनों कुरान-शरीफ की वहां बेअदबी की गई और तीन मुल्जिम पकड़े गये। उनमें से एक मुल्जिम ने बयान दिया कि उसे दिल्ली के महारौली विधान सभा क्षेत्र के एमएलए ने एक करोड़ रुपया यह काम करने के लिए दिया है। मैं समझता हूं कि इससे गंभीर बात नहीं हो सकती है कि एक पार्टी का विधान सभा का सदस्य एक करोड़ रुपया देकर कुरान शरीफ की बेअदबी कराए। इस बात से पंजाब और पंजाब के आस पास के क्षेत्रों में मुस्लिम भाईचारे में बहुत भारी रोष है। पंजाब में पहले ही लॉ एंड आर्डर तथा शांति की व्यवस्था काफी कमजोर है। वहां 300 से ज्यादा गैंगस्टर अपने गैंग ओपरेट कर रहे हैं। ऐसे समय में अगर ऐसी घटनाएं होंगी तो पंजाब में अमन-शांति को भारी खतरा होगा। मेरा अनुरोध है कि मरेलकोटला की घटना में भारत सरकार इंटरवीन करे और सी.बी.आई. की इंक्वायरी हो तथा जो लोग दोषी हैं, उन पर तुरंत कार्यवाही की जाए।

माननीय अध्यक्ष: कुंवर पुष्पेंद्र सिंह चंदेल को श्री संतोख सिंह चौधरी द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

श्री राम चरित्र निषाद (मछलीशहर): महोदया, मेरे लोक सभा क्षेत्र मछलीशहर में किसानों की जमीन के मुआवजे से संबंधित विषय की तरफ आपका ध्यान आकर्षित कराते हुए मदद चाहता हूं। उत्तर प्रदेश सरकार वाराणसी से सुल्तानपुर और वाराणसी से आजमगढ़ हमारे लोक सभा क्षेत्र से दो नई सड़कें जा रही हैं। भारत सरकार ट्रांसपोर्ट मंत्रालय ने राज्य सरकार को पैसा दे दिया है। वर्ष 2011 में जमीन का अधिग्रहण कर लिया गया लेकिन आज तक हमारी लोक सभा में कराकट विधान सभा क्षेत्र की चंदवक मार्केट में किसान रोड़ पर रोज धरना प्रदर्शन कर रहे हैं। चूंकि आजमगढ़ क्षेत्र मुख्यमंत्री के पिताजी का क्षेत्र है, वहां किसानों ने जो रेट मांगा उन्हें मिल गया लेकिन उसके साथ में हमारा लोक सभा क्षेत्र में आज तक किसानों को रोज धरना प्रदर्शन करने के बावजूद भी उचित रेट का मुआवजा नहीं मिल रहा है।

मैं आपके माध्यम से मदद चाहता हूँ कि मेरी लोक सभा के किसानों को आजमगढ़ और सुल्तानपुर के रेट पर मुआवजा दिया जाए।

माननीय अध्यक्ष: श्री भैरों प्रसाद मिश्र और कुंवर पुष्पेंद्र सिंह चंदेल को श्री राम चरित्र निषाद द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

श्री रवनीत सिंह (लुधियाना) : महोदया, चौधरी साहब ने भी संबंधित मुद्दा उठाया है। मैं भी कहना चाहता हूँ कि धर्म और गुरुओं से ऊपर हमारे लिए और कुछ नहीं है। एक पार्टी यह बात कहती थी कि राजनीति से धर्म को अलग रखेंगे, जात-पात को अलग रखेंगे। उनमें इतनी ज्यादा हड़बड़ाहट है कि कैसे पंजाब को लूटा जाए। चूंकि पंजाब में चुनाव होने वाले हैं, वे सोच रहे हैं कि कैसे पंजाब पर कब्जा किया जाए। वे रोज कोई न कोई नई बात, किसी न किसी बहाने कहते हैं। मैं किसी का नाम नहीं लूंगा। वह मुख्यमंत्री बहाना ढूंढते हैं कि कुछ न कुछ कहते रहना चाहिए। वे या तो यहां से काम करते हुए थक जाते हैं और पंजाब में छुट्टियां बिताना चाहते हैं या धार्मिक यात्रा करने जाते हैं। वे कभी अपने साथ साफ बर्तन ले जाते हैं, दरबार साहब में सेवा करने लग जाते हैं। दिल्ली में भी बहुत-से गुरुद्वारे हैं जहां सेवा की जा सकती है। विडियो कैमरे के सामने या जर्नलिस्ट बुलाकर सेवा नहीं की जाती है।

अध्यक्ष महोदया सबसे बड़ी बात यह है कि देश में और विदेशों में भी जो लाखों लोग रोजाना टीवी चैनल्स पर दरबार साहब का दर्शन सुबह उठ कर करते हैं, इन्होंने दरबार साहब के आगे झाड़ू दिखाया है। इससे बड़ी बेइज्जती खासकर पंजाबियों की और गुरु नानक नाम लेने वाले जो लोग हैं, उनके लिए क्या हो सकती है। यह यूथ मैनिफेस्टो है। अच्छा होता अगर इस यूथ मैनिफेस्टो में फौजियों की फोटो, पंजाब के खिलाड़ियों की फोटो, कालेज के लड़कों की फोटो दिखाते। मुझे मालूम नहीं है कि कौन-सी साजिश का हिस्सा है कि इन्होंने जानबूझ कर दरबार साहब के आगे झाड़ू रखा है। मैं कहना चाहूंगा कि यहां भी उस पार्टी के सांसद हैं। उन दोनों सदस्यों को सदन में माफी मांगनी चाहिए और पंजाबियों तथा सिक्खों से भी माफी मांगनी चाहिए क्योंकि यह बहुत गलत बात है।

महोदया, मैं आपके माध्यम से सरकार से गुजारिश करूंगा कि इनकी पार्टी को इलेक्शन कमीशन को बैन करना चाहिए। यहां के सी.एम. पंजाब में जाकर दंगे भड़काते हैं, होम मिनिस्ट्री को उन्हें रोकना चाहिए कि वे वहां न जाएं। इनके द्वारा पंजाब में कोई न कोई धार्मिक भावना भड़क सकती है। ये अंजान लोग हैं और हर चीज को मजाक में करना चाहते हैं। इन मजाकिया लोगों को, जो सीरियस लोग नहीं हैं, इन रिजेक्टिड लोगों को रोकना चाहिए। पंजाब बहुत ही सेंसिटिव स्टेट है।

माननीय अध्यक्ष: श्री भैरों प्रसाद मिश्र और कुंवर पुष्पेंद्र सिंह चंदेल को श्री रवनीत सिंह द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

SHRIMATI R. VANAROJA (TIRUVANNAMALAI): Respected Madam, Tamil Nadu under the dynamic leadership of hon. Chief Minister Puratchi Thalaivi Amma is one of the best performing States under the Pradhan Mantri Gram Sadak Yojana since its inception. Tamil Nadu State has so far completed 6,284 road works covering a length of 13,018 kms. at a cost of Rs. 2,925 crore. The State has completed more than 90 per cent of the works sanctioned by the Government of India.

Tamil Nadu has submitted a proposal under PMGSY Phase X for taking up 595 road and bridge works at an estimated cost of Rs. 795.01 crore to the Ministry of Rural Development. The hon. Chief Minister of Tamil Nadu Puratchi Thalaivi Amma in the memorandum submitted personally to the hon. Prime Minister has requested him to direct the Ministry of Rural Development, Government of India to accord early approval for these proposals under PMGSY.

I urge the Union Government to approve and expedite the sanction of Rs. 795.01 crore for the PMGSY Phase X in Tamil Nadu.

Thank you, Madam.

HON. SPEAKER: Kunwar Pushpendra Singh Chandel is permitted to associate with the issue raised by Shrimati R. Vanaroja.

श्री गणेश सिंह (सतना) : माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने किसानों की लगातार प्राकृतिक आपदाओं से बर्बाद होती फसलों को देखते हुए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की शुरुआत की। इससे किसानों में बड़ा उत्साह है। इसकी जो प्रिमियम राशि तय की गयी है, उसमें भी किसानों को कोई शिकायत नहीं है। किन्तु प्रिमियम राशि लागत खर्च के आधार पर बीमा कंपनियों द्वारा जमा कराया जा रहा है जबकि इसकी आवश्यकता फसल के कुल उत्पादन के आधार पर होनी चाहिए। अभी हाल ही में प्राकृतिक आपदाओं में जो केन्द्र सरकार से राहत देने का प्रावधान था, उसे डेढ़ गुना बढ़ाया था। मध्य प्रदेश सहित कई राज्य सरकारों ने भी आर.बी.सी. ऐक्ट में

संशोधन कर राहत राशि बढ़ाई है, जिससे किसानों की लागत राशि के नुकसान होने पर किसी न किसी रूप में राहत की भरपाई हो जाती थी। नयी फसल बीमा योजना का लाभ यदि किसानों को शत-प्रतिशत दिलाना है, तो जो प्रावधान अभी लागत खर्च बीमा का है, उसके साथ-साथ कुल उत्पादित फसल की बीमा का भी प्रावधान किया जाना आवश्यक है, तभी सही मायने में किसानों के फसल के नुकसान की सही भरपाई की जा सकती है।

माननीय अध्यक्ष : सर्वश्री आलोक संजर, अनूप मिश्र, रोडमल नागर, कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल, भैरो प्रसाद मिश्र को श्री गणेश सिंह द्वारा उठाये गये विषय से संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

SHRIMATI BUTTA RENUKA (KURNOOL): Madam Speaker, I would like to draw the attention of the august House to the matter of payment of wages issue of Central Government's flagship programme MGNREGA.

This ambitious programme of Government of India is lacking proper implementation. The funds are not reaching the targeted workers. It is inflicted with mismanagement and delayed payments. Third party involvement is at its height. This is causing migration from rural area in search of wages.

For instance, in my Parliamentary Constituency Kurnool, the workers are not getting 100-150 days of employment as per the norms of the Act. There are many irregularities surfaced in disbursement of wages of the workers. Pattikonda, Krishnagiri, Maddikera villages are mostly affected with wrongdoing, middlemen and mismanagement in payment of wages.

I raised the matter in the District level Vigilance and Monitoring Committee meeting, and it was accepted by the officials.

Keeping in view of the above, I urge upon the hon. Minister for Rural Development, Government of India to take concrete measures to plug the loopholes in the system with regard to payment of wages and providing 150 days employment as per the norms to achieve its desired results.

Thank you, Madam.

HON. SPEAKER: Mohammed Faizal and Kunwar Pushpendra Singh Chandel are permitted to associate with the issue raised by Shrimati Butta Renuka.

श्री राजेन्द्र अग्रवाल (मेरठ): माननीय अध्यक्ष महोदया, मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया के मानक के अनुसार हड्डी वार्ड में शरीर में हड्डियों की सही स्थिति का तत्काल पता लगाने वाली कम से कम दो सी.आर्म मशीन होनी चाहिए। इन मशीनों में से एक इलेक्ट्रिक ओ.टी. तथा दूसरी मशीन इमर्जेंसी वार्ड में रखी जानी चाहिए।

मेरे क्षेत्र मेरठ में लाला लाजपत राय मेडिकल कॉलेज के साथ जुड़े हुए सरदार वल्लभभाई पटेल अस्पताल के हड्डी वार्ड में पिछले एक साल से सी.आर्म मशीन के खराब पड़े रहने से बड़े ऑपरेशन करने में समस्या आ रही है। इसके परिणामस्वरूप कुछ मरीजों को बाहर प्राइवेट अस्पतालों में अत्यधिक खर्च पर ऑपरेशन कराने पड़ रहे हैं जबकि गरीब मरीजों का पुरानी विधि से ही ऑपरेशन किया जा रहा है। सी.आर्म मशीन के अभाव में नर्स कटने और मरीज के विकलांग होने का खतरा बना रहता है। एमसीआई के मानकों के अनुसार इमर्जेंसी वार्ड में सी.टी. स्कैन होना भी जरूरी है परंतु वहाँ इसकी उपलब्धता भी नहीं है।

मेरा आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध है कि इस अति आवश्यक सी.आर्म मशीन के खराब होने व मानकों के अनुरूप हॉस्पिटल में संसाधनों की उपलब्धता न होने से आम जन को रही समस्या का संज्ञान लेते हुए हॉस्पिटल प्रक्रियाओं के तुरन्त सतत सुचारू संचालन करने हेतु जिम्मेदार प्राधिकारियों को तुरन्त निर्देशित करने का कष्ट करें तथा यह भी सुनिश्चित करने की व्यवस्था करें कि प्रशासनिक लापरवाही तथा आपसी तालमेल का खामियाजा आम आदमी को न उठाना पड़े।

माननीय अध्यक्ष : श्री भैरों प्रसाद मिश्र और कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल को श्री राजेन्द्र अग्रवाल द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

श्री जय प्रकाश नारायण यादव (बाँका) : अध्यक्ष महोदया, बहुत-बहुत धन्यवाद आपने मुझे बोलने का मौका दिया। बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिया जाए यह सवाल हमेशा उठता रहा है। बिहार से मांग उठ रही है, बिहार की राज्य सरकार की तरफ से मांग उठ रही है, हमारी पार्टी के द्वारा मांग उठायी जा रही है और चारों तरफ से, जो आर्थिक रूप से पिछड़ा इलाका है, उसके समेकित विकास के लिए धनराशि जाए और विकास की धारा और बदे, इसीलिए हम मांग करते हैं कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिया जाए। उलटे वहाँ दी जाने वाली केन्द्रीय राशि में कटौती की जा रही है, केन्द्र प्रायोजित परियोजनाओं में राशि नहीं दी जा रही है, राशि रोकी जा रही है और वहाँ की सरकार अपने बलबूते काम कर रही है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने 1 लाख 67 हजार करोड़ रुपये का पैकेज देने की बात कही थी, लेकिन उस पैकेज से क्या काम किए जाएंगे, इसका कोई लेखा-जोखा नहीं है। हमारे यहाँ विश्व प्रसिद्ध कमरिया मेला है जो 107 किलोमीटर है, जो बाँका और सुल्तानगंज से होकर जाता है। यह अद्भुत मेला है, जिसके लिए 50 करोड़

कहा गया था। मंदार पर्यटक क्षेत्र जो बांका का इलाका है, उसको विकसित करने के लिए 50 करोड़ कहा गया था। साथ ही साथ भागलपुर, मुंगेर और जम्मुई के लिए भी पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकसित करने के लिए कहा गया था। इसीलिए मेरी केन्द्र से मांग है कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिया जाए और जिस पैकेज की घोषणा की गयी है, उस को जल्दी से जल्दी लागू किया जाए। धन्यवाद।

श्रीमती रंजीत रंजन (सुपौल) : धन्यवाद अध्यक्ष जी, मैं इस मामले को पिछले दो दिन से उठाना चाह रही थी, क्योंकि मेरे क्षेत्र में ही बाढ़ है। कोसी नदी मेरे ही क्षेत्र से होकर गुजरती है। सप्लीमेंटरी प्रश्न के तौर पर मैं माननीय उमा भारती जी से मैं इस बारे में जानना चाह रही थी।

महोदया, मेरे ही क्षेत्र में मरौना, सुपोल और भभटियाही में काफी पानी है और लगभग दो सौ परिवारों को रेस्क्यू करवाया गया है। जो काम स्टेट कर सकती है, वह कर रही है, लेकिन मैं यहां इसलिए उठाना चाह रही थी कि हर साल पूर्व और पश्चिम के बीच में जो बांध है, जो आठ किलोमीटर का एरिया है, हम लोग चाहते हैं कि तीन सोल्यूशन वहां हो। जब एनएच-57 बन रहा था तो सुरक्षा बांध है, उसको लगभग 10 से 15 किलोमीटर पूर्व और पश्चिम में बनना चाहिए था, लेकिन मात्र 750 मीटर बनाकर छोड़ दिया गया। अभी जो गांव रोगडिया, मरौना, सिसोनी और बेला डूबे हुए हैं, इसका कारण यह है कि वहां सुरक्षा बांध प्रापर-वे से नहीं बनाया गया है। आपकी टीम भी गयी थी तो गडकरी साहब ने कहा कि अब गैमन नहीं, ईरीगेशन उमा भारती जी बनाएंगी। मेरी सरकार से रिक्वेस्ट है कि वहां तीन प्रॉब्लम हैं। एक, पूर्व-पश्चिम में लगभग 10-12 किलोमीटर तक सुरक्षा बांध को बनाने की आवश्यकता है, जिससे बांध की सुरक्षा बढ़ेगी और डबल बांध हो जाएगा। दूसरा, कोसी नदी बालू लेकर आती है। सिलटेशन एक मैजर प्रॉब्लम है। हम लोग नेपाल तक पूरा विजिट करके आए और बांध का 2688 नंबर प्वाइंट है और कुसा का जो बांध वर्ष 2008 में टूटा था, जिसके कारण भीषण बाढ़ आयी थी और लाखों लोग वहां से विस्थापित हुए थे। वहां नदी फिर से बांध से टच हो रही है, काम हो रहा है, लेकिन पानी अगर बढ़ता है तो वह बांध भगवान भरोसे है। नदी बांध को टच न करे, लेकिन सिलटेशन के कारण पानी एक तरफ अपनी धार को लेता है, जिसके कारण कोसी नदी में बार-बार कटाव होता है। एक, कटाव का स्थायी सोल्यूशन, दूसरा, सिलटेशन का स्थायी सोल्यूशन, तीसरा, सुरक्षा बांध, जिसको आपको ही करना है। मैंने रेलवे मिनिस्टर से भी कहा था, वीरपुर-प्रतापगंज, वीरपुर-भतनाहा...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपकी बात रिकार्ड में आ गयी है।

अश्विनी कुमार चौबे।

श्री अश्विनी कुमार चौबे (बक्सर) : अध्यक्ष महोदया, मैं आपको बहुत-बहुत साधुवाद देना चाहता हूँ।

महोदया, विगत 15 जुलाई, 2016 को बिहार की राजधानी पटना की मुख्य सड़क अशोक राजपथ से शहीद करगिल चौक गांधी मैदान तक कुछ राष्ट्र विरोधी ताकतों ने पाकिस्तानी झंडों के साथ तीन घंटे तक तीन-तीन थानों को पार करते हुए जुलूस की शकल में देश विरोधी नारे, जैसे- 'पाकिस्तान जिंदाबाद, भारत-हिन्दुस्तान मुरदाबाद' के नारे लगाते रहे। राज्य सरकार एवं स्थानीय पुलिस प्रशासन ने मूक दर्शक बनकर देशद्रोही जुलूस को रोकने की बजाय छुट्टे सांड की तरह सड़क पर खुलेआम गुजरने दिया तथा हाथ पर हाथ धरे बैठी रही। ये नारे जाकिर नाईक, ओवैसी तथा पाकिस्तान के समर्थन में कुछ मुठ्ठी भर देशद्रोहियों द्वारा पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया के बैनर तले जुलूस निकालकर वहां के पुलिस प्रशासन के सामने लगाये जा रहे थे। जो अत्यंत शर्मनाक एवं निंदनीय है। इसे देखकर लोगों का खून खौल रहा था। वहां बहुत बड़ी हिंसक घटना घट सकती थी। लेकिन आम लोगों ने संयम का परिचय दिया। यह घटना कोई अचानक नहीं घटी, बल्कि श्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार में सत्तासीन महागठबंधन ... * की सरकार की ... * पर तथा उनके नेतृत्व में बिहार में विरोधी शक्ति के ...* देने के अलावा और कुछ नहीं है।

HON. SPEAKER : I am sorry. No allegation will go on record.

...(Interruptions)...

श्री अश्विनी कुमार चौबे: राज्य सरकार के मुखिया द्वारा जे.एन.यू. के कन्हैया को गले लगाना तथा वैसे लोगों को इशरत जहां को बिहार की बेटा कहने के परिणामस्वरूप ये सारी घिनौनी घटनाएं घट रही हैं।

* Not recorded.

अतएव केन्द्र सरकार एवं महामहिम राष्ट्रपति महोदय से आग्रह है कि ऐसे राष्ट्रद्रोही पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया एवं मोमिन फ्रंट पर अविलम्ब प्रतिबंध लगाते हुए उन सबों को देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार करें तथा राज्य सरकार को तलब कर कठोर कार्रवाई करें। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : श्री भैरो प्रसाद मिश्र एवं कुंवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल को श्री अश्विनी कुमार चौबे द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

The House stands adjourned to meet again at 2.35 p.m.

13.36 hours

The Lok Sabha then adjourned till Thirty Five Minutes past Fourteen of the Clock.

14.35 hours

*The Lok Sabha re-assembled at Thirty-Five Minutes
past Fourteen of the Clock.*

(Hon. Deputy-Speaker *in the Chair*)

MATTERS UNDER RULE 377 *

HON. DEPUTY-SPEAKER: Hon. Members, the Matters under Rule 377 shall be laid on the Table of the House. Members, who have been permitted to raise Matters under Rule 377 today and are desirous of laying them, may personally hand over slips at the Table of the House immediately. Only those matters shall be treated as laid for which slips have been received at the Table within the stipulated time. The rest will be treated as lapsed.

* Treated as laid on the Table.

(i) Need to ensure regular meeting of district committees for monitoring the progress of rural electrification in the States particularly in Sant Kabir Nagar district, Uttar Pradesh.

श्री शरद त्रिपाठी (संत कबीर नगर) : दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना के तहत ग्रामीण विद्युतीकरण के तहत हो रहे प्रगति कार्यों की पर्याप्त सूचनाएं सांसदों को नहीं दी जा रही है। इसके लिए विद्युत वितरण निगमों की तरफ से कोई पहल नहीं की जा रही है, जो अत्यंत चिंता का विषय है। यहां इस बात का उल्लेख करना अत्यंत आवश्यक हो गया है कि सांसद जिला विद्युतीकरण समिति का अध्यक्ष होता है लेकिन बड़े खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि मेरे अपने क्षेत्र की संत कबीर नगर जिले की विद्युतीकरण समिति की कोई बैठक बुलाई नहीं गई है, जबकि वास्तविकता यह है कि अब तक जिलों को केंद्र सरकार द्वारा बीस करोड़ रुपये आवंटित किये जा चुके हैं लेकिन इससे संबंधित प्रगति की जानकारी बतौर सांसद नहीं दी गई है। इस संबंध में मैं सरकार से मांग करता हूँ कि यह व्यवस्था सुनिश्चित की जाये कि जिला विद्युतीकरण समिति की नियमित बैठक हो और सांसदों को मासिक रिपोर्ट प्रेषित की जाये।

(ii) Need to implement scheme of labour-material ratio to 49:51 under Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Scheme (MGNREGS) and also include fencing work in the list of works approved under MGNREGS.

श्री ओम बिरला (कोटा) : मैं माननीय ग्रामीण विकास मंत्री का ध्यान दिनांक 30 जुलाई, 2014 को सदन में तत्कालीन ग्रामीण विकास मंत्री द्वारा मनरेगा के अंतर्गत श्रम और सामग्री का अनुपात 49:51 करने की घोषणा की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। हमारे देश की ग्रामीण, कृषि क्षेत्र और रोज़गार के साथ जुड़ी बहुत महत्वपूर्ण योजना महात्मा गांधी नरेगा में सुधार और परिवर्तन करके जिला स्तर पर श्रम और सामग्री का अनुपात 49:51 करने के निर्णय को पूरे देश में प्रभावी तरीके से लागू करने की आवश्यकता है। कई श्रम संगठनों के विरोध के चलते यह नीति अब तक लागू नहीं हो पाई है। इस नीति के लागू होने से परिसम्पत्तियों का निर्माण होगा, जिससे ग्रामीण इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास होगा। मेरा माननीय मंत्री से आग्रह है कि इस नीति को शीघ्र ही देश में प्रभावी तरीके से लागू किया जाये।

इसके अलावा, फसलों को जंगली जानवरों से बचाने के लिए मनरेगा के अंतर्गत कृषि के व्यक्तिगत कार्यों की मद में पत्थर गढ़ी के कार्य की अनुमति दी गई है। मेरा सरकार से आग्रह है कि तारबंदी/बाड़बंदी के कार्य को भी मनरेगा की कृषि कार्यों की व्यक्तिगत मद में शामिल किया जाये।

(iii) Need to appoint teachers in 'Zila School'- the alma mater of the first President of India in Chapra district of Bihar and develop it as a model school.

श्री ओम प्रकाश यादव (सीवान) : बिहार के छपरा जिला में स्थित "जिला स्कूल" का गौरवशाली इतिहास रहा है। इस स्कूल ने देश को पहला राष्ट्रपति दिया। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने नौवीं और दसवीं कक्षा की पढ़ाई इसी विद्यालय से की थी। लेकिन आज इस विद्यालय की स्थिति दयनीय है। आज इस विद्यालय में कक्षाओं में पढ़ाने के लिए कोई शिक्षक नहीं है। अतः मैं केंद्र सरकार से मांग करता हूँ कि राज्य सरकार को आवश्यक दिशा-निर्देश दें ताकि इस विद्यालय में अविलंब शिक्षकों की तैनाती की जा सके। इस विद्यालय को आदर्श विद्यालय बनाने के लिए केंद्रीय सहायता की भी मांग करता हूँ। मैं माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री से मांग करता हूँ कि वे समय निकाल कर इस विद्यालय का दौरा करें और अनिवार्य आर्थिक सहायता प्रदान करें।

(iv) Need to introduce online system of booking appointment with doctors and also provide online medical facilities in state and district hospitals.

डॉ. मनोज राजोरिया (करौली-धौलपुर) : जैसा कि हमने हाल ही में देखा है कि दिल्ली के एम्स चिकित्सालय में केंद्र सरकार ने ऑनलाइन अपॉइंटमेंट चालू किया है जिससे मरीज़ घर बैठे ही अपनी अपॉइंटमेंट बुक करा सकता है और साथ ही डॉक्टर की उपलब्धता पता लगा सकता है। ठीक इसी तरह देश के राज्य चिकित्सालयों एवं जिला चिकित्सालयों में भी ऑनलाइन अपॉइंटमेंट की शुरुआत की जानी चाहिए इसके लिए एक चिकित्सालय का "मोबाइल एप" होना चाहिए जिसमें मरीज अपनी जानकारी डालते ही अपॉइंटमेंट और डॉक्टर की उपलब्धता जान सके। इसी मोबाइल एप में दवाइयों की जानकारी भी उपलब्ध होनी चाहिए ताकि मरीज जरूरत की दवाई की जानकारी उसमें डालकर उपलब्धता पता लगा सके। इससे मरीजों को लंबी लाईनों की झंझट से निज़ात मिलेगी साथ ही निःशुल्क दी जाने वाली दवाइयों की निगरानी हो सकेगी। हाल ही में दवाओं की उपलब्धता में कुछ गड़बड़ियां सामने आई हैं और खुले बाज़ारों में बिक्री के मामले भी सामने आए हैं। इन पर रोक लगाने के लिए ऑनलाइन सिस्टम कारगर होगा। इसके अलावा, डॉक्टर के चिकित्सालय न आने और मौजूद न रहने की घटनाओं में भी कमी आएगी। इससे हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी का "डिजिटल इंडिया" का सपना साकार होगा और मरीजों को आसानी भी होगी। इससे दवाओं की ट्रैकिंग से सरकार के अनावश्यक खर्चों में बचत होगी।

अतः मेरा केंद्र सरकार से अनुरोध है कि इस प्रकार की सुविधा देश के सभी राज्य चिकित्सालयों एवं जिला चिकित्सालयों में अति शीघ्र शुरु की जाए।

(v) Need to run-Muzaffarpur-Anand Vihar Garib Rath Express train on daily basis.

श्री सतीश चंद्र दुबे (बाल्मीकि नगर) : मैं माननीय रेल मंत्री जी को बधाई देना चाहता हूँ कि मेरे द्वारा लगातार उठाये जा रहे गरीब रथ ट्रेन का मेरे संसदीय क्षेत्र के बगहा स्टेशन पर ठहराव की मांग को स्वीकार किया इसके लिए मैं दिल से धन्यवाद देना चाहता हूँ। परंतु मैं मंत्री जी के ध्यान में यह भी लाना चाहता हूँ कि यह ट्रेन सप्ताह में केवल एक ही दिन चलती है। हमारे क्षेत्र से दिल्ली आने के लिए ट्रेनों का घोर अभाव है। केवल सत्याग्रह एक्सप्रेस व सप्तक्रांति ही ऐसी ट्रेन हैं जो प्रतिदिन चलती हैं, जिसमें कभी भी लोगों को सीट नहीं मिल पाती है। पूरे वर्ष इन दोनों ट्रेनों में नो रूम अथवा बहुत ज्यादा वेटिंग की स्थिति बनी रहती है, जिसके कारण लोगों को काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। हमारे संसदीय क्षेत्र बाल्मीकि नगर के पढ़ने वाले छात्र पढ़ाई हेतु, बीमार व्यक्ति अपने ईलाज हेतु और व्यवसायी वर्ग के लोगों का दिल्ली आना-जाना बराबर होता है। परंतु ट्रेन के अभाव में उन्हें भीषण संकट का सामना करना पड़ता है।

अतः मैं रेल मंत्री से आग्रह करना चाहता हूँ कि हमारे संसदीय क्षेत्र की जनहित की समस्या को ध्यान में रखते हुए मुजफ्फरपुर-आनंद विहार गरीब रथ का परिचालन सप्ताह में एक दिन के बजाए प्रतिदिन करने के साथ-साथ इसके समय में परिवर्तन करने का कष्ट करें जिससे कि लोगों को समस्याओं से निजात मिल सके।

(vi) Need to impress upon Government of Uttar Pradesh to provide irrigation facilities to farmers in Nanauta block in Saharanpur district of the state.

श्री राघव लखनपाल (सहारनपुर) : मैं सरकार का ध्यान उत्तर प्रदेश के जनपद सहारनपुर में नानोता विकास खण्ड क्षेत्र के दर्जनों गांवों के किसानों के समक्ष आ रही सिंचाई की समस्या की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ।

जनपद सहारनपुर में पूर्वी यमुना नगर से निकल कर एक रजवाहा नानोता विकास खण्ड के बालू माजरा, उमरी मजबता, जड़ौदा पांडा, किशनपुर, शेरपुर, जयापुर, नया गांव, सिसौनी, मौरा आदि दर्जनों गांवों में जाता है किन्तु इस रजवाहे का एक बूंद पानी भी इन गांवों तक नहीं पहुंचता है जिस कारण इस क्षेत्र के हजारों किसानों की कृषि भूमि सिंचाई से वंचित रह जाती है।

इस ज्वलन्त समस्या के समाधान के लिए समस्त प्रभावित किसान पिछले कई वर्षों से प्रयत्नशील हैं। उत्तर प्रदेश के सिंचाई विभाग में विभिन्न स्तर पर और उत्तर प्रदेश सरकार में भी विभिन्न स्तर पर निरन्तर आग्रह किया जाता रहा है लेकिन अफसोस की बात है कि इन किसानों की पीड़ा को सुना नहीं गया और पूरी तरह से नाउम्मीद हो चुके इन किसानों ने अभी हाल ही में हुए सम्बन्धित विधानसभा देवबंद के उप चुनाव में मतदान का बहिष्कार करके अपने रोष का इजहार किया।

अतः, मैं सरकार से मांग करता हूँ कि केंद्र सरकार उत्तर प्रदेश की सरकार को निर्देशित करे कि इन हजारों किसानों की पीड़ा को सुनते हुए प्रदेश सरकार अपने सिंचाई विभाग को उपरोक्त रजवाहे में सिंचाई हेतु पर्याप्त पानी की मात्रा सुनिश्चित करने का प्रबंध करे।

(vii) Need to ensure payment of compensation to farmers who lost their crops to hailstorms and excess rain in Bundelkhand region of Uttar Pradesh particularly in Jalaun Parliamentary Constituency.

श्री भानु प्रताप सिंह वर्मा (जालौन) : मेरे संसदीय क्षेत्र अंतर्गत जालौन गरौठा भोगनीपुर में ओलावृष्टि एवं अतिवृष्टि से तबाह हुई फसलों का जो मुआवजा केंद्र सरकार ने किसानों की राहत के लिए भेजा था वह अभी तक किसानों तक नहीं पहुंचा है। इसके अलावा, मेरे संसदीय क्षेत्र की कोंच तहसील में प्रशासन की लापरवाही के कारण किसानों के मुआवजे की लगभग 30 लाख रुपये की राशि फर्जी चैकों के माध्यम से बेनामी खातों में जमा कर निकाल ली गई जबकि पात्र किसान सहायता राशि पाने के लिए अभी भी विभागों के चक्कर लगा रहे हैं।

बुंदेलखण्ड के अधिकतर निवासियों का मुख्य रोजगार कृषि ही है और बुंदेलखण्ड का किसान पिछले कई वर्षों से प्राकृतिक आपदाओं के कारण भारी नुकसान झेल रहा है। ऐसे समय में मुआवजे की राशि में की गई अनियमितताएं एक गंभीर अपराध है। अगर एक छोटी सी तहसील में इतनी बड़ी अनियमितताएँ हुई हैं तो पूरे बुंदेलखण्ड में यह आंकड़ा क्या होगा।

अतः मेरी मांग है कि एक केंद्रीय जांच समिति का गठन करके वर्ष 2015 में बुंदेलखण्ड के किसानों को जो सहायता राशि भेजी गई थी उसके आवंटन में हुई अनियमितताओं की जांच कराई जाये तथा जिन किसानों को अभी तक मुआवजा नहीं मिला है उन्हें किसानों की सहायता के लिए एक वेब पोर्टल बनाया जाये जिसके माध्यम से उनका मुआवजा सीधे उनके खाते में पहुंचाया जाये।

(viii) Need to provide clean and safe drinking water to people in Kairana Parliamentary Constituency, Uttar Pradesh.

श्री हुकुम सिंह (कैराना) : देश की राजधानी दिल्ली के सभी प्रमुख चिकित्सालयों में रोगियों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि कोई भी चिकित्सालय समुचित उपचार देने में समर्थ नहीं हो पा रहा है। यही स्थिति देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित चिकित्सालयों की है। मिलावटी खान-पान व दूषित पेयजल के उपयोग के कारण हैपेटाइटिस बी, सी, कैंसर, गुर्दे व हृदय रोग जैसी भयंकर बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं। प्रमुख नदियाँ हों या स्थानीय जलाशय सभी का पानी पूर्ण रूप से जहरीला हो चुका है। उद्योगों द्वारा भी जहरीले रसायन सीधे नदियों में प्रवाहित किए जा रहे हैं। निजी नलों के द्वारा उपलब्ध ऊपरी स्तर का पानी पूर्णतः जहरीले रसायनों से युक्त हो चुका है। मेरे लोक सभा क्षेत्र कैराना जनपद शामली के अंतर्गत 3 विधान सभा जनपद शामली में है तथा 2 विधान सभा (नकुड़ व गंगोह) जनपद सहारनपुर में है। इन पांचों विधान सभाओं में विशेष रूप से ग्रामीण आंचलों में स्वच्छ जल न मिलने की वजह से बीमारियों ने महामारी का रूप धारण कर लिया है। एक भी गाँव ऐसा नहीं है जहाँ कैंसर, हैपेटाइटिस-सी, हृदय रोग के मरीज न हो एवं रोगग्रस्त मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है। जनपद सहारनपुर में ननौता विकास खण्ड के पास कृष्णा नदी के तट पर बसे गाँव भनेडा खेमचन्द की स्थिति तो यह हो चुकी है कि नदी प्रदूषण के परिणामस्वरूप गाँव के दर्जनों लोग कैंसर व अन्य रोगों से ग्रसित होकर अपने प्राण त्याग चुके हैं। नदी की स्थिति यह है कि सामान्य व्यक्ति के लिए किनारे पर खड़ा होना भी संभव नहीं है। निरंतर स्थानीय स्तर पर प्रयास करने के बावजूद अभी तक कोई समाधान नहीं हो सका है।

मैं सरकार से मांग करता हूँ कि इन पांचों विधान सभाओं को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने हेतु सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर पानी की टंकी स्थापित की जाये तथा नदी को प्रदूषित करने वाले समस्त औद्योगिक प्रतिष्ठानों पर कड़ी कार्यवाही की जाये।

(ix) Need to set up a procurement centre of FCI at Farrukhabad in Uttar Pradesh.

श्री मुकेश राजपूत (फर्रुखाबाद) : मैं सरकार का ध्यान मध्य उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद लोक सभा क्षेत्र की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। कृषि उत्पादों से भरपूर इस क्षेत्र पर एफ.सी.आई. समर्थित खरीद सेंटर की नितांत आवश्यकता है। इसके अभाव में जो किसान अपने माल को मंडी तक लेकर जाते हैं बिचौलियों में फंसकर औने-पौने दामों पर अपनी फसल को बेचने पर मजबूर होते हैं। इससे उन्हें फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है और यदि किसान अपने उत्पाद को देश की अन्य मंडियों में ले जाता है तो स्थानीय मंडी के अधिकारीगण उसका शोषण करते हैं, जाने नहीं देते हैं, ट्रैक्टर खड़ा रखते हैं जिससे कृषि उत्पाद कभी-कभी खराब भी हो जाता है।

मेरा सरकार से निवेदन है कि फर्रुखाबाद में एफ.सी.आई. समर्थित कृषि उत्पाद खरीद केंद्र की शीघ्र स्थापना करें जिससे किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य मिल सके।

(x) Need to frame a comprehensive policy for education and rehabilitation of child labour in the country.

डॉ. वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़) : देश के शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के मुताबिक निर्धारित आयु सीमा के अंतर्गत शिक्षा पूरी किए बिना बच्चों से किसी भी प्रकार की बाल मजदूरी कराए जाने पर पूर्ण प्रतिबंध लागू है। परंतु इसके बावजूद देश के असंख्य नौनिहालों को बाल मजदूरी करने के लिए गरीबी, अशिक्षा आदि कारणों से मजबूर होना पड़ रहा है। किशोर न्याय अधिनियम 2000 के प्रावधानों के अनुसार भी बच्चों को किसी भी प्रकार के खतरनाक व अस्वास्थ्यकर उद्योग एवं उत्पादन प्रक्रिया से दूर रखा जाना चाहिए। उक्त कानूनों के आलोक में बाल मजदूरों की शिक्षा एवं पुनर्वास के लिए एक ऐसी समग्र एवं राष्ट्रीय कार्य योजना लागू की जाए तथा उसके क्रियान्वयन हेतु निगरानी की प्रक्रिया एवं समयबद्ध जवाबदेही सुनिश्चित की जाए।

(xi) Need to launch a special drive for recruitment of youth of Jammu and Kashmir in Defence and para-military forces of the country.

श्री जुगल किशोर (जम्मू) : मैं सरकार का ध्यान जम्मू-कश्मीर राज्य की ओर दिलाना चाहता हूँ। वह स्थान जहाँ भारत-पाकिस्तान की सीमा है। वहाँ रोजाना गोलाबारी की वजह से सीमा पर रहने वाले भारतीयों को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बड़ी संख्या में लोगों और पशुओं की जान चली जाती है जिसकी वजह से वहाँ के लोगों को बार-बार पलायन करना पड़ता है। इसका एक बुरा प्रभाव सीधा उनके बच्चों की शिक्षा पर पड़ता है। इसकी वजह से सीमा के भारतीय किसानों की जमीन और फसल दोनों खराब हो जाती है।

इसके बावजूद भी इन लोगों में देशभक्ति का जज्बा कम नहीं होता। बिना किसी हथियार के ये लोग भारतीय सेना के साथ सीमा की सुरक्षा में तत्पर रहते हैं।

मैं गृह मंत्रालय एवं सरकार से कहना चाहता हूँ कि सीमा पर रहने वाले भारतीयों के लिए विशेष तौर पर भर्ती योजना के तहत वहाँ के नौजवानों को हमारी भारतीय सेना/अर्द्धसैनिक बलों में भर्ती किया जाये ताकि इन लोगों को स्थायी रोज़गार प्राप्त हो सके जिससे कि ये लोग अपने परिवारों का भरण-पोषण कर सकें। इनका देशभक्ति का जज्बा बरकरार रहे और हौसले और बुलंद हो सकें।

(xii)Need to extend Shivganga Express upto Singrauli via Robertsganj and Prayagraj express upto Daltonganj.

श्री छोटेलाल (राबट्सगंज) : उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में मात्र एक संसदीय क्षेत्र ऐसा है जहां चार प्रदेशों- मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड तथा बिहार के बॉर्डर लगते हैं। मेरे ही संसदीय क्षेत्र में राबट्सगंज, चोपन, ओबरा, रेणुकूट आदि रेलवे स्टेशन हैं। इन स्टेशनों से कई मेल एक्सप्रेस गाड़ियाँ गुजरती हैं। मगर किसी भी ट्रेन का ठहराव इन स्टेशनों पर नहीं है जिसके कारण वहां के आस-पास के गाँवों एवं शहरों के लाखों लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। प्रयागराज एक्सप्रेस एवं शिवगंगा एक्सप्रेस इलाहाबाद एवं वाराणसी तक जाती हैं। शिवगंगा एक्सप्रेस को वाराणसी से बढ़ाकर राबट्सगंज तथा सभी स्टेशनों से होते हुए सिंगरौली तक किया जाए तथा प्रयागराज एक्सप्रेस को राबट्सगंज, चोपन, ओबरा, रेणुकूट, शक्तिनगर, विंधमगंज होते हुए गढ़वा तथा डाल्टनगंज तक चलाने से वहां की आम जनता के लिए बहुत अच्छी सुविधा हो जाएगी। वाराणसी से एक लोकल पैसेंजर ट्रेन सोनभद्र के सभी स्टेशनों से होते हुए विंधमगंज तक चलाई जाए। यह बहुत गंभीर मामला है। सोनभद्र एक बहुत ही पिछड़ा इलाका है।

अतः मैं रेल मंत्री जी से मांग करता हूं कि उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए उचित कार्यवाही करने की कृपा करें।

(xiii) Need to provide compensation to farmers who lost their crops to drought in Uttar Pradesh.

श्री भैरों प्रसाद मिश्र (बांदा) : मेरे संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत बांदा एवं चित्रकूट जनपद में बड़ी संख्या में किसानों का सूखे की राहत राशि की एक किस्त भी नहीं मिली है। बांदा जिले में भी यही हाल है। प्रदेश के मंत्रीगण व जिलों के अधिकारी धनाभाव को इसका कारण बताते हैं। किसान बहुत ही निराश व हताश है। लगातार कई वर्ष के सूखे से उसकी हालत बहुत ही खराब है। किसानों को पहनने के लिए कपड़े एव दवा के लिए पैसा नहीं है। खाने के अनाज वितरण में भी भेदभाव हो रहा है। अस्तु सरकार से अनुरोध है कि इस विषय पर शीघ्र आवश्यक कार्यवाही करने की कृपा करें।

(xiv) Need to solve the problems relating to establishment of Railway Junction at Oorukere in Tumakuru taluk of Karnataka

SHRI S.P. MUDDAHANUME GOWDA (TUMKUR): Indian Railways process a lot of landed properties which is required for development of railway projects. Tumakuru-Rayadurga railway project in Karnataka is an ongoing project connecting both Karnataka and Andhra Pradesh. Acquisition of land for the purpose of laying Railway line as well as creating junction is in process.

Process has been made for the purpose of a Railway Junction near Ooruker in Tumakuru taluk in Karnataka under the Tumakuru-Rayadurga Railway Project. This junction is very important since it is proposed at Chennai-Bangalore industrial Corridor and Tumakuru-Davanagere Railway line. It is also abutting N.H.-4 running between Bangalore-Mumbai. Today 171.93 acres of land have been acquired for this purpose. At this stage allegedly some vested interested are making attempts to get these lands denotified to the tune of 144.31 acres out of 171.93 acres of lands acquired for the purpose of Railway Junction at Oorukere in Tumakuru taluk, Karnataka. It is astonishing that the denotification attempt is not at the request of the original land owners but at the behest of real estate persons. It is very unfortunate that South Western Railway has recommended for denotification of land stating that the land is not required for Railway Junction.

I urge the Hon'ble Minister of Railways to take immediate steps to desist from denotifying any land acquired at Oorukere and other villages in Tumakuru taluk and to establish the Railway Junction at Oorukere in Tumakuru taluk which is very essential in the interest of general public.

(xv) Need to establish a Division Level Post Office at Chamarajanagar district headquarters in Karnataka

SHRI R. DHRUVANARAYANA (CHAMARAJANAGAR): I would like to bring the kind attention of the Government that as per guidelines, Division Level Post Office should be established at District Headquarters only. In Karnataka all District Headquarters are having "Divisional Level Post Office" except Davanagere and Chamarajanagar Districts which are newly formed Districts. Chamarajanagar District Headquarters is in my Lok Sabha Constituency and this District was bifurcated from Mysore District and declared as "New District" during 1997. Previously Division Level Post Office was established at Nanjangud Taluk Headquarters (Mysore District) and since inception it has continued there only. For the last 19 years, no action has been taken to establish Division Level Post Office at Chamarajanagar District Headquarters.

Chamarajanagar District have four Taluks and there are 23 Sub Post-Office, 13 Branch Post Office and 12 GDs. At present in Chamarajanagar District Headquarters Post Office Only 6 persons are working out of 10 sanctioned post whereas in Nanjangud Divisional Post Office 24 persons are working.

Hence for the purpose of having easy transaction and to facilitate the use of Post Office schemes to the people of Chamarajanagar District, I hereby urge the Union Government to establish Division Level Post Office at Chamarajanagar District Headquarters immediately.

(xvi) Need to construct a new dam at the site of Mullaperiyar dam

SHRI ANTO ANTONY (PATHANAMTHITTA) : I request the Government to save the lives of 35 lakh people in Kerala who are in fear of the impending burst of 121 year-old Mullaperiyar Dam. The Mullaperiyar Dam was built by the British in 1895 and at present is operated by the Government of Tamil Nadu, based on a 999-year lease agreement. The Dam has developed many cracks and leaks due to seismic activities since 2000. According to the experts, the area where Mullaperiyar Dam is located comes in Zone 3 seismic category, therefore, vulnerable to earthquakes of magnitude upto six on the Richer scale. Experts also warn that even a mild tremor within a radius of 16 km of the Dam may burst it. Kerala is not against ceding water to Tamil Nadu but our concern is about the safety of people in case of the collapse of the Mullaperiyar Dam. Therefore, I request the Government to kindly take urgent steps to build a new dam at the site of Mullaperiyar Dam.

(xvii) Need to ensure adequate availability of water in Palar River in Tamil Nadu and also expedite Pennayar - Palar Link Canal Project

SHRI B. SENGUTTUVAN (VELLORE): River Palar, an inter-State river, originating in Karnataka, runs to a distance of 53 kms in Karnataka, 30 kms in Andhra Pradesh and 222 kms in Tamil Nadu. The river is covered under Schedule-A of the Madras-Mysore Agreement. As per Clause II of Agreement upstream State cannot construct any dam or reservoir without consent of the downstream State. During the monsoons, where adequate rainfall is received, the waters of the river replenish more than one thousand tanks, ponds and lakes on either side of its banks, which are the sources of water of drinking and irrigation in Vellore and Kancheepuram Districts. The Palar ayacut supports cultivation of roughly 4.2 lakh acres of lands. However, due to the construction of Check-dams across the river by neighbouring States of Karnataka and Andhra Pradesh, the water flow in the river has completely ceased leaving the land parched, dry and drought-stricken. To compound the problems, the Andhra Pradesh Government is raising the height of check dam in Perumpallam village on the very border of Tamil Nadu State to a height of 12 feet and more with a view to converting it into a reservoir. This would seriously impede water flow in the Palar and deprive Tamil Nadu of the much needed Palar water. In order to protect the ayacutdars, the inter-state Palar River has to be nationalised removing all dams and barriers constructed across it and the 52 km long Pennayar-Palar Link Canal Project has to be implemented expeditiously. Our Hon'ble Chief Minister has already voiced her opinion regarding interlinking of rivers and nationalisation of interstate rivers which alone would assure equitable distribution of scarce water resources to all stakeholders. I call on the Ministry of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation to take all steps to rejuvenate Palar River.

(xviii) Regarding holding of Jallikattu events in Tamil Nadu

SHRI R. PARTHIPAN (THENI): Hon'ble Chief Minister of Tamil Nadu in January, 2015, had requested the Union Government to enable to State of hold Jallikattu events in Tamil Nadu by denotifying bulls from the list of performing animals and had requested to lift the ban on Jallikattu. In December, 2015, she had again requested the promulgation an Ordinance to enable to the holding of Jallikattu during Pongal Festival.

Based on the request, the Government of India, Ministry of Environment, Forest and Climate Change had issued a Notification, but the Supreme Court of India issued an interim stay on 12.01.2016 on the notification and as a result Jallikattu could not be conducted during Pongal 2016. On 12.01.2016, the Chief Minister had strongly reiterated her requests to the Government of India to promulgate an Ordinance to enable the holding of Jallikattu.

The Government of India has filed a common counter affidavit before the Supreme Court of India on 8.3.2016 indicating the historical, cultural and religious significance for the holding of Jallikattu. I request the Government of India to strongly support the Government of Tamil Nadu's stand which would eventually pave the way for holding of Jallikattu events in Tamil Nadu in the coming years during Pongal festival.

(xix) Regarding evolving a mechanism for sharing cess on coal with the coal bearing State

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB (CUTTACK) : The Union Government has enhanced the levy of 'Clean Environment Cess' on coal from Rs. 200 per tonne to Rs. 400 per tonne in the Union Budget 2016-17 despite the fact that the rate of royalty on coal remained unrevised for more than four years. As a result, the coal bearing States are not getting adequate revenue contribution from coal mining sector which they deserve on account of adverse effects of mining such as displacement of people, reduction in forest area, greater risks of environmental pollution and strain on water resources and infrastructure. Thus, the Government of Odisha has requested the Union Government time and again for sharing of at least sixty per cent cess on coal with the coal bearing States. Further, the Government of Odisha has also requested the Union Government that the contribution to District Mineral Foundations (DMF) for coal should be made payable w.e.f 12th January, 2015, the date of enforcement of MMDR Amendment Act, 2015 instead of 20th October, 2015 to ensure that coal bearing States realise full benefits of DMF contribution. I , therefore, urge the Union Government to evolve a mechanism for sharing cess on coal with the coal bearing States to make good their losses on account of adverse effects from the mining sector.

**(xx) Need to look into the implementation of Modified Flexible
Complementing Scheme in Indian Meteorological Department**

SHRI ARVIND SAWANT (MUMBAI SOUTH) : I would like to bring the kind notice of the Government to the gross misuse of the administrative and discretionary power vested with the officers of Indian Meteorological Department (IMD) administration.

To facilitate the officers for innovation and invention and to dedicate their services for the research, Modified Flexible Complementing Scheme (MFCS) was brought. This scheme was amended by 6th CPC to facilitate the scientist of the nation and to remove frustration that was building due to lack of promotional avenues.

Unfortunately not a single officer in IMD till date has come up with any invention. In IMD 90% of the scientists were involved in arranging duty roasters, administrative work, purchasing and installation of instruments and in real time forecasting using the tools developed by other agencies.

Therefore, they do not qualify as per the guidelines framed by DOP&T for modified flexible complementing scheme (MECS), however being at the policy makers position they have allegedly misused the powers conferred by the Government and amended the recruitment rules and corresponding designations to fit themselves within the guidelines of MFCS and enjoy the benefits of time bound promotions. FCS rules clearly mention that Group A Officers with degrees such as M.Sc (Mathematics and Statistics) are not eligible for MFCS mode of promotion. Still MFCS mode of promotion is extended to all. The FCS rules also mention that those involved in the administrative work too are not eligible for FCS benefits. In IMD officers from the post of Scientist C to Scientist G are by and large involved only in administrative work.

For example, the satellites are made, launched and maintained by ISRO, however it is used by IMD to read the product and interpret the product. Similarly

the weather radars are purchased from the market and installed at various centers. They too are used by IMD for interpretation.

It is noticed that Group A officers are holding double nomenclature, one for promotional avenues (Scientist) and second for administrative and financial powers (Director, Deputy Director General etc.). Hardly any group A is undertaking the research work in its true spirit. Most of the Group A officers are involved in issuing forecast and maintenance of instruments which cannot be classified as scientific and drawing the huge salaries and promotion, causing huge expenditure to the tune of crores of rupees to the exchequer of the IMD. I therefore request the Hon'ble Minister to investigate the matter promptly and appoint true researchers of IMD and prevent misuse of Government money.

(xxi) Need to honour K.D. Jadhav, the renowned Olympic wrestler with Padma Award.

श्री राजू शेटी (हातकणंगले) : देश के पदम पुरस्कार से सम्मानित होना हर भारतीय के लिए गौरवपूर्ण बात होती है। किंतु ऐसे काफी लोग होंगे जिन्होंने देश के लिए अच्छा काम किया और देश का नाम जिन्होंने पूरे विश्व में रोशन किया। परंतु अपने देश हित में किए गए महत्वपूर्ण कार्य पूरा होने के बाद इनमें से काफी कम लोग सरकार को आवेदन पेश करके अपना खुद का नाम पदम पुरस्कार की सूची में सम्मिलित कराने का प्रयास करते होंगे। किंतु इन लोगों का देश के प्रति समर्पण, उचित सम्मान करना सरकार का ही नहीं बल्कि हर भारतीय का कर्तव्य है। कभी-कभी ऐसे व्यक्ति पूरी जिंदगी में किसी भी पुरस्कार से सम्मानित नहीं किये जाते और दुर्भाग्यवश उनका अतुलनीय कार्य नई पीढ़ी भूल जाती है। इसलिए यदि ऐसे महान व्यक्तियों को जिनको हम उनके जीते जी उनके महान कार्यों के लिए पुरस्कृत नहीं कर सके उनको मरणोपरांत पदम पुरस्कार से सम्मानित करने की जिम्मेदारी इस संसद पर यानि कि सदन पर है। पदम पुरस्कारों के लिए जो नियम बनाये गये थे, उसके अनुसार मरणोपरांत पदम पुरस्कार से उसी को ही सम्मानित किया जाता है, जिसके मरणोपरांत उसका परिवार या जनप्रतिनिधि एक वर्ष के अंदर पदम पुरस्कार की घोषणा होने के पहले सरकार को सूचित करें, उन पर ही विचार हो सकता है, ऐसा स्पष्ट लिखा है। किंतु इस चयन प्रक्रिया में चालू वर्ष उद्योगपति स्व. धीररूभाई अंबानी जी का नाम पदम पुरस्कार के लिए शामिल किया गया। हम सबको उनके कार्य पर गर्व है लेकिन इसके साथ-साथ इसी संबंध में देश के जाने-माने रेसलर, महाराष्ट्र सुपुत्र स्व. के.डी. (खाशाबा) जाधव, जिन्होंने रेसलिंग के लिए 1952 में हेलसिंकी में भारत को पहला ब्रांज पदक प्राप्त करके भारत का सिर विश्व में ऊँचा किया था, उनको भी मरणोपरांत पदम पुरस्कार से सम्मानित किया जाए, ऐसी मैं केंद्र सरकार से विनती करता हूँ।

14.38 hours**NATIONAL INSTITUTES OF TECHNOLOGY, SCIENCE EDUCATION AND RESEARCH (AMENDMENT) BILL, 2016**

HON. DEPUTY-SPEAKER: Now, we will take up Item No.11.

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRI PRAKASH JAVADEKAR): I beg to move:

“That the Bill further to amend the National Institutes of Technology, Science Education and Research Act, 2007, be taken into consideration.”

I want to give a brief outline of what the Bill is. देश में शिक्षा में सबको आस्था है। इस सदन के इस ओर से ले कर यहां तक हरेक का एक विषय में अगर इंटेरेस्ट है तो वह शिक्षा में है, क्योंकि हर घर को छूने वाला, हर व्यक्ति को छूने वाला शिक्षा एक विषय है। इसलिए प्रधान मंत्री जी की नीति है कि सबको शिक्षा और अच्छी शिक्षा मिले, that is, education accessibility, quality, affordability and accountability – all four. उसके लिए नैशनल इंस्टीट्यूट्स की बहुत मांग है। They represent everything, all that we stand for. They are quality educational institutes. They are regarded as the best. The result is 100 per cent placement. Not only that, it is affordable also. एकचुअली हर किसी का दिल चाहता है कि सभी को इतनी एफोर्डेबल शिक्षा मिले, लेकिन अपना देश भी बड़ा है तो निजी संस्थान और फी का स्ट्रक्चर भी आता है।

Today, what we are introducing is an amendment to the National Institutes of Technology, Science Education and Research Act, 2007 in which 20 institutes were recognised as National Institutes of Technology, Science Education and Research. All these three things are important things – technology, science education and research. We cannot just create only technocrats with application sciences. We must learn basic science also. We must also promote research.

Sir, may I mention where India lacks? It lacks in innovation. It is because we do not allow inquisitiveness from childhood. हम बच्चे को स्कूल में कहते हैं कि चुप बैठो, प्रश्न मत पूछो। Actually he or she should ask question. When they ask a question, they are challenging what is there and then only, they can find something new.

So, innovation is the product of research. Therefore, the basic sciences and basic research has to be the thrust of higher education. These national institutes – they are popularly called NITs – like IITs and ISCERs have all become institutes of national importance and national excellence. That is what we have created through last 70 years. These kinds of institutes actually make the country a prosperous country.

Countries can prosper by four ways. One such way is the European way, the way they prospered through colonial exploitation. It was one part of the story. The second way is like that of the Middle East. They have been given tremendous natural bounties. Anywhere you dig and you have the oil. That is another way. The third way is what India and China adopted. They mastered in adaptation, reverse engineering and cost competitiveness, and they flourished. But the real prosperity comes through innovation.

We have a mobile with us, whatever brand it may be of. As a Chairman of IT Task Force of my State, I was with Steve Jobs for two days. At that time, in 1998, iPhone was not there. He was telling us about his dream project of iPhone where he would put all utilities, all applications in a hand-held device. Earlier, computers used to be so big and people were using different applications. For different utilities, different applications were being used. But he combined all into one. That is the power of innovation. That is the way to wealth creation as well. The cost of the material which goes into it may be Rs. 5,000, but it becomes worth Rs. 50,000 because of the innovation put into it. So, we must promote innovation, we must promote research. That is a major task of, and challenge before, our higher education system. Therefore, these national institutes are really important.

Today, what I am bringing to you is, in a way, a part of completion of an assurance which was given to the newly carved out State of Andhra Pradesh because an NIT was already there in the erstwhile Andhra Pradesh, which is now a part of Telangana. The new State of Andhra Pradesh also requires an NIT. That was our promise. We are fulfilling it through this Bill.

The Bill, when it was envisaged in 2007, had 20 national institutes; then in 2012, five Indian Institutes of Science Education and Research (IISERs); and 10 new NITs were added to it. In 2014, there was one amendment for one institute, namely, the Bengal Engineering Science University, Shibpur and that was added to it. So, they became 36, and today, we are adding one more and that makes it 37 national important universities out of which 31 will be NITs; five will be IISERs; and one will be the Indian Institute of Engineering Science and Technology, Shibpur. So, all this is put together.

In a way, this NIT is already operational, but it is working in the campus of Sri Vasavi Engineering College in Tadepalligudem in West Godavari District of Andhra Pradesh. Already there are 900 students, which are part of the story as this is the second year. But now after there is a four year course, it will be a big institute of 2,000. We will have a separate campus for it where 140 acres of land has already been handed over by the Andhra Pradesh State Government and the DPR is in finalisation stage. We have already budgeted Rs. 40 crore. Shri Haribabu is here and he has been following it. In two months time we will come to a decision on that DPR and we will release the sanctioned funds. Already, we have released Rs. 10 crore, but we will release Rs. 40 crore. Let me assure at this point of time that there will be no dearth of expenditure or funds for this programme because this is a very prestigious programme. Therefore, we will do it.

When Andhra Pradesh and Telangana were formed, the Government led by Shri Narendra Modi ji has taken many decisions. I was till two weeks ago heading the Ministry of Environment, Forests and Climate Change. There was an issue of formation of the State Capital for the new State of Andhra Pradesh. They have decided to form it at Amravati, which is a place between Vijayawada and Guntur where forest land was involved. Our Forest Diversion Act says that you cannot divert forest land for any non-forest purpose, which is not site-specific. But we took a policy decision and not an arbitrary action. We took a policy decision that for a newly carved-out State if the Capital is to be created because that is an

important issue, then we must give land there and they are giving additional compensatory land. I must compliment the Andhra Pradesh Government that they have offered alternative land for afforestation in the Tiger Corridor area. This is also one important environmental aspect. Therefore, the Government is committed to fulfil all promises given to both the new States of Telangana and Andhra Pradesh. This is in continuation of that mission to fulfil the promises that this Bill of instituting National Institute of Technology at Tadepalligudem in West Godavari District of Andhra Pradesh has been brought. Thank you.

HON. DEPUTY SPEAKER: Motion moved:

“That the Bill further to amend the National Institutes of Technology, Science Education and Research Act, 2007, be taken into consideration.”

DR. SHASHI THAROOR (THIRUVANANTHAPURAM): Sir, I may be permitted to speak from this place.

HON. DEPUTY SPEAKER: Okay, go ahead.

DR. SHASHI THAROOR : Mr. Deputy-Speaker, Sir, it is always very encouraging for us when new institutions of higher education are established in our country to cater to the growing aspirations, the tremendous potential and the vast needs of our youthful population. The future is theirs and it is for us to help shape it through creating quality institutions such as the IITs and the NITs. To this extent, the amendment to the National Institutes of Technology, Science Education and Research Bill, 2016 to add the NIT in Andhra Pradesh to the schedule of the parent Act of 2007 is something we welcome as a Party, and if I may say so in my personal capacity as a former MoS in Shri Javadekar's Ministry of Human Resource Development.

However, Mr. Deputy-Speaker, Sir, it is also my duty as a parliamentarian to bring to the attention of this House the complete disregard of this Government for the principle of quality in its quest for mere quantity. What, for instance, is the current state of this very NIT in Andhra Pradesh that we are discussing here today? The NIT with 900 students already, as the Minister told us, functions out of a temporary campus. There are no laboratories; there are no libraries; there are no high quality IT or engineering tools for training. Can you imagine an engineering college without a functioning laboratory or library books? The fact is there is an acute shortage of infrastructure in terms of accommodation as well. We have a situation where we have created an institution which was not ready to be launched, but in a haste to put the foundation-stone as announced, they have gone ahead. The result is, even to stay, there is a girls' hostel functioning, but the boys are accommodated in a village somewhere else.

The NIT has been permitted to commence activities, but do we want shells of institutions, Mr. Minister, or path-breaking resource centres that would truly make a difference? I want to contrast this to what we have just seen in my

constituency two weeks ago, when a fully functioning Central Polytechnic, the best known in Kerala, established in 1949, was derecognized by the AICTE in your Ministry for not fulfilling a list of conditions that they deemed had to be fulfilled. If that same list were applied to the new NIT in Andhra Pradesh, it would have been derecognized by the same AICTE.

So, the problem in our system is that our higher education – I said this when I was a Minister as well – is overregulated and under-governed. We really need to focus on what the purpose of education is, how we bring about learning outcomes for our children and not focus irrelevantly on excessive regulation.

There is a larger problem that is hidden behind this Bill, Mr. Deputy-Speaker, Sir. Even our premier IITs are facing today a shortage of trained faculty. According to the Government's own figures, it is about 42 per cent in the IITs, but in the NITs, the shortage is now in the glaring vicinity of 50 per cent of the authorised faculty. There are no teachers, Mr. Deputy-Speaker, and students are being herded into half-built campuses with half the faculty strength to receive an education that can only be called half-baked. Frankly, this is inadequate. We cannot run education like this.

On top of that, employers across the board are complaining about the unemployability of Indian graduates. A recent FICCI survey shows a figure of 62 per cent of employers are dissatisfied with the quality of our engineering graduates. This is a fact. In fact, I have spoken to many CEOs, as I am sure you have done. Infosys and Tatas and so on have set up their own campuses to train the people they have already hired after an engineering degree, not for on-the-job training, but to make up for the deficiencies of the education we are giving them in our engineering colleges. They are getting nine months to one year of new education because our education is not good enough. Of course, they are paying teachers better. So, many teachers are leaving and going to Tatas and Infosys and companies like that, rather than staying in the NITs and coming to the IITs.

Yes, we are proud of our IITs, which is the next Bill that you are bringing up. There is no problem there but these are largely islands of excellence floating in a sea of mediocrity. The truth is we have to be conscious that NITs live up to the standard that their name 'National Institute of Technology' implies. The fact is that in our haste to add more on paper, we must not lose sight of the fact that these institutions are meant to set new and higher standards. If your walls are not solid, and you have no teachers to set the right intellectual standards, it will collapse. It is not just the building that will collapse, but also it will take with it the future and the prospects of the bright young people who are going to build the India of tomorrow.

I looked at your own Ministry's documentation, Javadekar Sahab. A UGC survey of 1471 colleges and 11 universities have found that 73 per cent of the colleges and 68 per cent of the universities have a quality that the HRD/UGC considers to be medium or low quality. Yet, what are we spending in the latest Budget of this Government – 1.2 per cent of our GDP on higher education. Frankly, that compares with 3.1 per cent in the US. Okay, we are not the US. But take South Korea which is not far away. It is 2.4 per cent -- double of what we are spending.

Since we are talking about the NITs, let me stress that a Working Paper on the Quality of Engineering Education in BRICS countries has been released. As you know, India is now going to host the BRICS Summit and all the BRICS Conferences this year. According to that, average spending per year in engineering education is the lowest in India among the BRICS countries. We are spending 1300 dollars a year; China spends 4300 dollars a year per capita; and Brazil spends 5000 dollars a year. Even our fellow BRICS members, companions in the developing world, are leaving us behind. They have policies that focus rightly on quality and not just quantity. While we are on BRICS, let me mention that in terms of higher education and training, Russia is 47th amongst the 148 countries surveyed in the world. We are ranked only at 91. We do not even have complete

campuses, like the NIT that we are just approving today. It is no wonder that statistics are stacked against us. Though I am not going to speak on the next Bill on the IITs, let me again remind you about the Kakodkar Committee reforms. Really we ought to take those into account and implement them. They have been sitting with your Government for two years on the IITs.

In global ranking, we know our IITs will feature in the top two hundred. When we come to the NITs, they do not feature anywhere in the top 500. Why is this the case? Why is it that we are so insistent on increasing the numbers of our institutions without a corresponding interest in ensuring that we improve the quality of our institutions? Governments can exploit sheer numbers for public relations purposes. But what about the hundreds of students who enter these institutions each year in the hope of getting a decent education but are told, upon graduation, that they are unemployable and they need to be trained all over again. The quantum of support that our Government is granting to higher education institutions is simply insignificant in comparison to funding that other countries and other Governments are giving.

I think, Harvard University's research and development funds alone exceed that of the entire HRD Budget that Shri Jaitley has given. All the UGC, all the agencies including the UGC put together will come under one university in America. There are, of course, structural and financial differences between us and the Harvard. I am not comparing them. But the point is this. Can we make fuller, better and wiser use of our resources instead of fragmenting them by spreading them right across this horizon of mediocrity that I described? We should be building big ships that can withstand the ocean and not boats that will capsize at the first wave.

You mentioned, Mr. Minister, in your remarks, the importance of innovation. I agree with you one hundred per cent. When I was there, I would make the same point. But look at what we are doing. India today has 17 per cent of the world's brains, because we have 17 per cent of the world's people. But we are

only producing 3.5 per cent of the world's global research output. There is something wrong there. What are we doing to tap the possibilities of industry-academia collaboration? My Government had accepted the report given by Shri Narayana Murthy to promote more academia-industry interface. I would suggest – I had respectfully suggested when I was there earlier – that we could, for example, allow companies to come directly to our IITs and NITs and say: “here is a research project; if you have students who are prepared to research on this, whatever comes up, we will have an agreement. We will innovate something together and NIT can share the profits with the private companies.” It happens very commonly in the West. But we need a policy decision from you that will allow the NITs and other institutions to have this kind of relationship with companies.

Similarly, why can we not get more private sector money into this? You admit that you do not have enough money in your Budget. Look at the OECD countries. About 75 per cent of research and development funding in the OECD countries comes from the private sector. In our case, it is only 15 per cent from the private sector. Why is everything dependent upon the Government? Having heard our Prime Minister's speeches, we should expect that this Government should be reaching out much more to infuse more funding into our NITs and IITs. Pending, when we lost our position in the Government, was our Research and Innovation Bill which would have allowed the setting up of some 14 universities purely for research and innovation, including in the private sector or funding on a PPP mode, or even on a sole ownership mode.

15.00 hours

Please look at that Bill again and see if we would like to revive it. The honest truth is, your diagnosis is right that we need more innovation, we need more research, but we are yet to see a convincing prescription for that diagnosis. You also need to prescribe a solution that takes into account these ideas.

Considering that the NIT in Andhra Pradesh has already been functioning for one year, I have to say to you, Mr. Minister, that even its website does not

inspire confidence. Please have a look at it. For example, the section on faculty has just two lines which I now quote. “Faculty for the new Institute will be taken initially under *ad hoc* basis. Some senior faculty members superannuated from IITs and NITs also will be taken. In addition to this, faculty members from the mentoring institute NIT Warangal will be taking classes, both theory and lab, on a regular basis”. This is the entire website listing on faculty at NIT that you have just asked us to approve. This, Mr. Deputy Speaker, is where our children’s future is being crafted! This is where tomorrow’s leaders are being told to dream their dreams!

I ask you Mr. Minister, are we doing them justice? Is it any wonder that 82 per cent of our country’s engineering graduates are ending up in professions that do not require an engineering degree? What is the Government doing to align the establishment of educational institutions like this NIT that we are approving today with market research so that we know what employers are looking for before we push our children through an engineering degree? Let us see what they want? Where is the need? What kind of engineers do we want in India, or what do employers want, what does the government want, what does the future want? Is the Government creating NITs within a framework that aligns education with employment and both with the country’s needs? Where is our value addition? What can we do that others are not doing better than us, and with more money than us?

What is happening to our engineering graduates, Sir? Mr. Deputy Speaker, I must tell you, last month the Madhya Pradesh Police Department advertised 14,000 Constable posts. Nine lakh candidates applied for these Madhya Pradesh Police Department posts of which there were 10,000 engineering graduates, a dozen Ph.D. holders, plus another 90,000 graduates and 15,000 postgraduates. They want to be Constables in Madhya Pradesh. Because the fact is we are releasing graduates into an ecosystem that does not know how to use them. We

have talent in our country but we do not know how to mould it, how to put it forward.

We need to change the ecosystem and that includes, Mr. Minister, providing innovation, including incentives. I was very interested to learn from Prof. Mashelkar that he is now giving out of his own money, Government is not doing it, an annual prize for innovation. I know you know him well. Find out about this. The prize in the first year was won by a young man who actually targeted a real need in our country. As you know, we have something like 15 million people who go blind because of preventable blindness. Most of this could be prevented by a simple eye test for glaucoma early on so that they can catch in time. For that you need drops which will dilate your eyes and you cannot see clearly for the rest of the day or for several hours.

Most of these poor Indians are daily wage workers, they cannot afford to lose a day's wage. So, they avoid the test because they cannot afford not to have their eyesight for a day. So, this man invented a test for glaucoma that does not require dilation of the eyes and now poor people can go for the test. Mashelkar sahib said this is where we should give prizes for innovation, innovation that is targeting the needs of our country's people. And I would urge you, Mr. Minister, that the Ministry itself should come up with a national level incentive like this to encourage more innovation in the NITs, IITs and elsewhere.

Finally, Mr. Deputy Speaker, I am not opposing this Bill. My party and I want more higher education institutions to open their door to India's young people who are hungry for education. But we all want these additional institutions to be solid, to be well equipped with teachers and resources, and to produce quality learning outcomes so that their graduates can go confidently into the world where their skills can command good prospects in the employment market. Can we truly say that that is the case today, Mr. Minister? I think in all honesty, even though we are not here to oppose this Bill, we want you to think very seriously about these larger issues that I have raised.

With these words, Mr. Deputy Speaker, let us by all means declare this NIT to be an institution of national importance, but let us also make it an institution of truly national importance. Thank you, Mr. Deputy Speaker.

HON. DEPUTY SPEAKER: As hon. Member spoke, we need more NITs. That is all right. But at the same time, we need more fund allocation. Without funds, we cannot do anything. That is the problem the Ministry is facing. That is very important. That is why they are running institutions on *ad hoc* basis.

... (*Interruptions*)

DR. KAMBHAMPATI HARIBABU (VISAKHAPATNAM): Hon. Deputy Speaker, thank you for giving me this opportunity to speak on this very important Bill concerning the State of Andhra Pradesh. The National Institute of Technology, Science Education and Research (Amendment) Bill 2016 is primarily to include National Institute of Technology, Andhra Pradesh in the list of institutions of national importance. This NIT is situated in Tadepalligudem in the State of Andhra Pradesh. My friend Shri Shashi Tharoor mentioned that it is a hasty decision to start this institution in temporary campus. But I wish to bring to your kind notice that this is not a hasty decision. The State of Andhra Pradesh was divided in 2014 and the feelings of the people of Andhra Pradesh were severely hurt.

When the State was divided, there was not even a single institution of national importance left in the State of divided Andhra Pradesh. The Andhra Pradesh Re-organization Bill also states the establishment of about 11 institutions in Andhra Pradesh. Therefore, to instill the confidence among the people of Andhra Pradesh, the NDA Government led by Shri Narendra Modi has taken a decision to start nine out of 11 institutions that are mentioned in the Andhra Pradesh Re-organization Act and assured the people of Andhra Pradesh that the NDA Government is with them. As part of the assurances given, the NDA Government has taken steps to start the National Institute of Technology in the State of Andhra Pradesh under mentorship of National Institute of Technology in Warangal. NIT, Warangal is a very reputed institution and they are taking all steps to see that this institution also gets national importance in providing quality education in all engineering branches.

When the State was divided, we were not left with any IIT, IIM or even a single NIT or IISER. Therefore, the NDA Government has taken a decision to start NIT, IIM, IIT and IISER etc. I compliment the Government for taking such a bold decision to start nine institutions out of 11 promised in a span of 20 months of time. I think that since the Independence of our country in 1947, no Central

Government has done to any particular State what the NDA Government has done to Andhra Pradesh during the last 20 months.

I also compliment the Minister for providing 480 seats in the very first year of establishment of NIT. Wherever they have started, they have given 240. Since 50 per cent of the seats are meant for domicile students, to safeguard the interest of the students from Andhra Pradesh the number of seats is being given as 480 so that 240 Andhra students can get opportunity. That is a magnanimous decision taken by the Government. The funds were allocated. All steps are being taken to provide basic infrastructure that is required for the NIT established at Tadepalligudem at Andhra Pradesh. Land was identified and handed over to the Government of India for taking up construction of the building. I request the hon. Minister to take steps to see that the construction of the buildings is taken up immediately and finished expeditiously.

Nowadays, when the contract is being given, the construction work is being delayed due to cash flow problems. I have a suggestion for the hon. Minister to consider. There are foreign financial institutions which are coming forward to finance for the projects at LIBOR interest rates or at lesser rates. Therefore, the Ministry of Human Resource Development's contractor who is going to implement the project, the State Government and also the financial institutions can have some sort of a memorandum of understanding and the cash flow problems could be sorted out by taking assistance from the financial institutions and the money taken for construction could be repaid in instalments in three to four years. I would request the hon. Minister to consider this suggestion.

Out of eleven institutions that were promised for Andhra Pradesh in the Andhra Pradesh Reorganisation Act, nine have been established; only two are left over for establishment in Andhra Pradesh: one is the Central University and the other is the Tribal University. These two universities are to be considered for establishment in Andhra Pradesh at the earliest. For that, there is a requirement of passing a Bill or making an Act in Parliament. I would request the hon. Minister to

take steps so that those two institutions can also be started during this academic year or in next academic year and the people of Andhra Pradesh will be thankful and grateful to the Government led by Shri Narendra Modi.

I have two suggestions – one is encouraging quality in education and the other is innovation. I think, the Government led by Shri Narendra Modi is laying emphasis on skill development and innovation. Therefore, every institute of national importance should have a skill development centre and also an innovation centre so that people could be encouraged to improve their skills in these institutions.

I would also like to bring to your kind notice that in engineering education there are four or five tiers of institutions. The first is the Indian Institutes of Technology; the second is the National Institutes of Technology; the third is the engineering colleges organised by the universities or university engineering colleges; and the fourth is the engineering colleges in the private sector, of good quality and also of poor quality. Therefore, I have a request to the Government of India. Since the State Governments are not in a position to deploy more funds for undertaking infrastructure development in the State university colleges, I request the hon. Minister to consider how these university colleges can also be brought on par with NITs and other institutions. I think, if we can take steps for this, the quality of engineering education can improve. There is no doubt that engineering graduates coming out of many of the private poor quality engineering colleges are not having the necessary skills to be employed. I think, we should take care of those people who are coming out of engineering colleges, to impart more skills so that they could be employed by the industries and various organisations.

Thank you very much.

SHRI S. SELVAKUMARA CHINNAIYAN (ERODE): Hon. Deputy-Speaker, Sir, I wish to express my sincere gratitude to our beloved leader hon. Chief Minister of Tamil Nadu Puratchi Thalaivi Amma for giving me an opportunity to speak on this Bill.

The National Institutes of Technology are a group of premier public institutes in India. These institutes of national importance receive special recognition and funding from the Government of India.

Tamil Nadu, under the dynamic leadership of hon. Chief Minister Puratchi Thalaivi Amma, has been the education hub in the country. The National Institute of Technology at Tiruchirappalli, popularly called REC Trichy in earlier days, has produced great personalities who have occupied top positions in Government, public and private sector companies in the past and present. Many of them have reached the pinnacle of success in socio economic world.

On their inception decades ago, all NITs were referred to as Regional Engineering Colleges and were governed by the respective State Governments. In 2002, the then HRD Minister, Shri Murli Manohar Joshi, decided to upgrade all RECs to National Institutes of Technology. The upgrade was designed along the lines of the prestigious Indian Institute of Technology. NITs were found to be promoting regional diversity and multi-cultural understanding in India. Comprising 31 autonomous institutes, each of them is located in one major State or Union Territory of India. In 2007, the Indian Government declared these schools as institutes of national importance.

The NIT Council is the supreme governing body of India's 31 National Institutes of Technology system. Admission to the under-graduate course B.Tech in NITs is through the highly competitive Joint Entrance Examination (JEE) Mains. From 2015, the Joint Seat Allocation Authority conducts common counselling and allocates seats jointly for all the Indian Institutes of Technology, National Institutes of Technology and Indian Institutes of Information

Technology. In 2015, over 13 lakh candidates appeared for the JEE for admission to 28,000 undergraduate engineering seats in 68 centrally-funded technical institutes, that include all 19 IITs (10,000 seats), 31 NITs (15,500 seats) and 18 IIITs (2,500 seats). All NITs are autonomous which enables them to set up their own curriculum. I would request the Government to provide certain number of seats for poor and deserving students recommended by the respective State Governments.

NIT Andhra Pradesh has been set up to cater to the needs of the State of Andhra Pradesh which did not have NITs. NIT, Andhra Pradesh will benefit the State of Andhra Pradesh specifically and the whole country in general. NIT, Andhra Pradesh will be covered under the National Institutes of Technology, Science Education and Research Act, 2007. Declaring it as an institution of national importance, it will ultimately help in addressing the aspirations of people in the main stream of technical education. NIT Andhra Pradesh was established at the temporary campus of West Godavari district of Andhra Pradesh. The State Government of Andhra Pradesh has also provided a land for NIT Andhra Pradesh at West Godavari district.

I would also request the Union Government to allocate more funds for such highly commendable and performing NITs in the country, like the NIT Tiruchirappalli and also suggest to the Government to encourage and generate financial support from the most successful people and form a corpus fund for all the NITs in the country.

Thank you.

PROF. SUGATA BOSE (JADAVPUR): Mr. Deputy Speaker, Sir, may I at the outset express my appreciation to our new hon. Minister for Human Resource Development for felicitating all the teacher MPs on the occasion of 'Guru Purnima' a couple of days ago? That was a very fine symbolic gesture on his part and we on our part wish him all the best in discharging the onerous responsibility that he has been given to improve our educational system for our younger generation.

On the face of it, this is a very simple and straightforward amendment to the NIT Act. It only adds one more NIT in Andhra Pradesh consequent on the bifurcation of the old State between Telangana and Andhra Pradesh. But this apparently small amendment raises some very deep questions about our educational policy and the future direction of the younger generation in our country.

Some of the concerns that I had wished to express have already been anticipated by my colleague, Shri Shashi Tharoor, who, by virtue of belonging to a marginally larger party in this Lok Sabha, has the right to speak before me. I wish he had stayed to listen to at least the next speaker who had his views to express on this important subject.

I agree with many of the concerns about quality that had been expressed by my good friend, Shri Shashi Tharoor, but I think he made one very unfair comparison. Harvard University is a private university in the world and its endowment is larger than the GDP of many countries in this world. So, that comparison should not really be made.

Now what are these National Institutes of Technology, Science Education and Research? We started out with eight regional engineering colleges and now, we have many more but 20 of them are upgradations from the status of regional engineering colleges. Subsequently, 10 more NITs have been added and today, we are about to welcome in this Parliament the birth of a new NIT in Andhra

Pradesh. We will, of course, support that move and we wish the people of Andhra Pradesh all the best for the future.

I would, however, like to raise some questions about the kind of education that we wish to give to our younger generation. Shri Javadekar was absolutely right in saying that even in the nomenclature of these institutes, we have the word 'technology' but also the phrases 'science education and research'.

Now we must have a fine balance between teaching and research in all of our educational institutes including our universities, both central and State, in addition to the IITs, the NITs and the IISERs. Unfortunately, the NIT in Andhra Pradesh and also some of the new NITs that have been approved by this Parliament do not have capacity for carrying out the kind of cutting edge research and innovation that we need in this country.

When we go ahead and announce the establishment of new institutions, first of all, it takes a lot of time to build a new campus. Even this NIT is currently functioning out of a temporary campus but at least when it comes to physical infrastructure, when it comes to bricks and mortar, for a number of years after the announcement of these new institutes, money is spent and many contractors make money but do we give adequate attention to human resources? Do we actually anticipate the faculty requirements for these new institutes? Do we actually make sure that the students who will join these new institutes will, in fact, get the best instruction possible? I think we need to pay very close attention to these issues.

I would also like to add that we have a large number of institutes of national importance which are devoted to technology of one kind or another. The IITs, the NITs and also the Institutes of Information Technology run into scores in terms of the numbers of Institutes of Technology of one kind or another that we have. But do we pay adequate attention to institutes for the Humanities and the Arts? What is happening in our Institutes of Technology, particularly the NITs is that we are not producing well-rounded citizens. Even in Institutes of Technology there should be arrangements to teach subjects in the field of Arts and Humanities.

If you consider the best Institute of Technology in the world today, the Massachusetts Institute of Technology has a very fine Philosophy Department. It has a superb History Department. They are small but the students who are training to be engineers are given an opportunity to also study the Arts and the Humanities. Otherwise, in this craze for Information Technology in particular, we will be creating very one dimensional young citizens of India.

Now, a couple of years ago Shri Anil Madhav Dave had asked a very pertinent question from the Ministry of Human Resource Development. He had asked whether the condition of learning in the subjects of Humanities and Arts is poor and he had also asked whether the Government is making any action plan for new institutes and incentives in the field of Arts, Commerce, Culture and Humanities. I am sorry to have to say that in the written reply that was provided by the Ministry of Human Resource Development there were very misleading statements. I will you why. It was stated that up to 2011 there were 4677 institutions only for science and technology and there were 4315 institutions offering courses only on Arts and Humanities in that same year. But that was not the question. The question was how many institutes of national importance we have in the field of humanities compared to the number of institutes of national importance in the field of science and technology. Two years ago, in his Budget Speech, Shri Arun Jaitley had announced that there was going to be a national institute of Humanities named after none other than our great iconic leader, the late Jaiprakash Narain, in Madhya Pradesh. But this Parliament and the general public in India have not heard very much more since then about the progress in the creation of this one national institute for the Humanities that had been announced by this Government more than two years ago. Even if we are not able to set up very many institutes of national importance in the field of Humanities and Arts, there are other ways in which Humanities and Arts can be supported in our universities and colleges. For example, in the United States of America there is a National Endowment for the Humanities and National Endowment for the Arts

which provide funding for the finest research and new innovation and creativity in the field of Humanities and Arts. So, there are ways in which we can provide a more balanced education for our younger generation.

Sir, there are a few more things to be said about our Educational Policy, but today as you can see we are rather diminished in terms of the benches on this side of the House because in West Bengal we are observing Martyrs Day. Twenty-three years ago 13 young men had been killed in police firing while our leader Ms. Mamata Banerjee led a demonstration for the restoration of democratic rights for the people of West Bengal. I will have an opportunity to speak once more when the Indian Institute of Technology (Amendment) Bill is brought before us.

I will not extend my discourse any further at the moment excepting to say that when this Parliament which has the sole prerogative to assign the nomenclature institutes of national importance takes this momentous decision, let us make sure that these institutes are truly of national importance. Let us set ourselves a goal that in the foreseeable future, say, within the next three to five years, at least a few of our National Institutes of Technology, Science Education and Research will be able to break into the top 500 of world rankings because we should not be satisfied with rankings within our own country. We have a global role to play. We must compete with the rest of the world and make sure that our students and younger generation are getting the best education possible whether in the field of science education or in the field of arts and humanities.

Thank you very much, Mr. Deputy-Speaker Sir.

SHRI BAIJAYANT JAY PANDA (KENDRAPARA): Hon. Deputy-Speaker, Sir, I thank you for giving me this opportunity to speak on this important Bill.

First of all, let me welcome this Bill that is introduced by the hon. Minister for HRD and compliment him as well for bringing the same energy for which he has recently been elevated to this very important Ministry.

Sir, as some of my colleagues have already mentioned, this and the forthcoming Bill on amending the IIT Act will also introduce new institutions in Andhra Pradesh, Kerala, Chhattisgarh, Goa, Karnataka, Jammu and Kashmir and there will also be an upgradation of another institute in Bihar.

I want to touch upon one issue which has been touched upon by a couple of my colleagues and extend the argument that what we are looking is just not extending the quantity of NITs and IITs throughout the country but also the quality. The issue of teacher shortage which some of my colleagues have already referred to is extremely crucial. Sir, this is not that a few of us here are speaking about it. Let me refer you to the last time that the NIT Bill was amended a couple of years ago.

HON. DEPUTY SPEAKER: The shortage is not only in appointments but most of the teachers are going away on some other assignments. If you see the roll of registers, you may find the position of staff recruitment. You may note that most of the teachers are going away abroad on some other assignments or on some other subjects. Therefore, they have to fill up these posts immediately. That is one problem which most of the Government institutions is facing.

SHRI BAIJAYANT JAY PANDA: Sir, I thank you for pointing that out. I will also touch upon it. It is not that just a few Members are mentioning it. I would like to bring to the attention of the hon. Minister's that a couple of years ago, the last time when the NIT Bill was amended, it was to take an institute in West Bengal and upgrade it much like the earlier NITs were upgraded. Now also, in Dhanbad, the Indian Institute of Mines is going to be upgraded to an IIT. Our Parliamentary Committee which looked into it made the exact comment and

pointed out that there is a tremendous dearth of teachers which is going to affect the quality.

Sir, regarding the statistics cited by my hon. colleague from Kerala who is not present in the House just now, I have a little difference in it because I have taken it from the Ministry's website. But even the Ministry's own website points out that in the IITs, there is 39 per cent shortage of teaching staff. In the NITs, shortage is 29 per cent and in the IIITs, shortage is 36 per cent. These are slightly different than what Dr. Tharoor had pointed out. But I have taken your own statistics. So, you cannot quibble with this and as the hon. Deputy-Speaker has pointed out, this must be number one on your agenda to make sure that recruitment of teachers and instructors for these institutes is of utmost priority.

The irony is this that the number of public engineering institutions, including the IITs and NITs, are dwarfed by the number of private institutions that have come up in the whole country. There are between 1.5 and 2 million engineering graduates that are produced every year, but employability is very low. Recently, a Delhi based employment solutions organisation called Aspiring Minds did a survey of 1,50,000 engineering graduates and they found barely seven per cent were employable in core engineering jobs. This should not come as a surprise to us. It is not just some agency that has done a survey.

I would like to cite, perhaps the most famous engineer today living in India, Shri E. Sreedharan, who has built the Delhi Metro among many other projects. He blames the abysmal quality of engineers on the unbridled growth of private engineering colleges with no regulation. The numbers are quite astounding. The number of private engineering colleges in Andhra Pradesh alone where this new Institute is being opened is more than 700. There are something like 5,000 such institutes altogether.

SHRI MUTHAMSETTI SRINIVASA RAO (AVANTHI) (ANAKAPALLI): That was for the united Andhra Pradesh.

SHRI BAIJAYANT JAY PANDA: I stand corrected. That was before bifurcation. But I think the point is made.

Out of the total number of about 5,000 engineering colleges in both public and private sector, barely 1,500 are in the public sector. Let me point out why the public sector, the NITs and the IITs, are important. I am not against the private sector. I am a great votary of encouraging the private sector in many fields of commerce and our economy. But the greatest institutes in the world are those that do not treat teaching as a profitable entity. We have had references to Harvard and other universities of world repute. Some of us had opportunities to visit Yale University, one of the best known universities in the world. We were impressed to learn that although Yale's fee that they charge the students is quite high, it only represents 14 per cent of the actual cost of teaching. Why is it? That is because 86 per cent of the cost of teaching at Yale is subsidised from the endowments.

The hon. colleague was just talking about the very large endowments that Harvard has and that their endowments are larger than the GDP of many countries. This is the reason why our private institutions which are churning out, like an assembly line, lakhs and millions of engineering graduates who are mostly not employable, have to be seen as something of serious concern. This is why the public institutes are very important. Right from the days of our early Republic, from the days of Nehru ji, we gave importance to the highest teaching standards at some of these institutions. But we have actually not kept up. We have actually been left behind as some of our colleagues have pointed out.

Let me point out, in the top 200 universities and institutes in the world, only two of our Indian institutes rank. These two are Indian Institute of Science, Bengaluru at 47th rank and Indian Institute of Technology, Delhi at 197th rank, out of the top 200 in the world. If we look at the other countries, in the top 200 universities of the world, the United States has 49 universities; the UK has 30 universities; the Netherlands has 12 universities; and China has seven universities.

The point that I was trying to make is that while the private engineering institutes treat it like a commodity – they churn out like an assembly line, all these so-called engineering graduates, who mostly are not employable – the difficulty is that because they are treating it with profit motive, they are not investing in research. The name of this Bill is the National Institutes of Technology, Science, Education and Research (Amendment) Bill. The private engineering institutes are doing a much lesser job of providing the opportunities for research because it is not profitable. Research is going to take many years, maybe decades, to pay off and they are not investing in that.

It is clearly evident in the number of Ph.Ds that we have. Let us have a look at some of the statistics. In India, as per the last provisional survey in 2014-15, about 1,13,000 students were registered for Ph.D. study. It sounds like a lot, but it is not. It is only 0.34 per cent of all the students registered only for higher education. I am not counting school students and all. One-third of one per cent of all our students in higher education is registered for Ph.Ds. Let me cite something which is even more worrisome because there are Ph.Ds. and there are Ph.Ds. One of the important criteria we should be looking at how many Ph.Ds. are working in science and technology-related fields because while we must encourage the arts, as hon. Member from West Bengal has pointed out, we do need to provide a well rounded education at the Bachelor's level, at the highest levels of research, if our country is to go forward, we must invest in research. That is what this Bill is all about.

If you look at Ph.D. students in India, less than 20 per cent are enrolled in scientific and technological areas, the rest are all in areas that are of the arts, or arts-related areas. Compared to that, I am sure the hon. Minister is aware of this, 75 per cent of all the Ph.D. students enrolled are in sciences and technology. Compared to that, China has 41 per cent of all the Ph.D. students are doing research in science and technology-related areas. In our case, it is 19 point odd per cent, less than 20 per cent. This is what needs to change dramatically if the quality

of our higher education particularly related to NITs, IITs is to improve and not just the quantity.

I think, the subject has been touched by many of my colleagues, I am sure, the hon. Minister is aware of all these issues. But I think it is important for us, as the temple of democracy in this country, to highlight these issues so that they do not get left behind in the other urgencies that the Government has to deal with. This is very important.

I do support this Bill with the caveats that I have pointed out, and I wish the hon. Minister all the best in all his endeavours to take our higher education in technology to higher levels.

SHRI MUTHAMSETTI SRINIVASA RAO (AVANTHI) (ANAKAPALLI):
Madam Speaker, thank you for giving me an opportunity to speak on the National Institutes of Technology, Science Education and Research (NITSER) (Amendment) Bill, 2016. I rise to support the Bill.

Thanks to the Union Cabinet chaired by the Prime Minister, Shri Narendra Modi, on 25th May, 2016 granted *ex-post facto* approval for establishment of NIT, Andhra Pradesh, registered as a Society under the Andhra Pradesh Societies Registration Act, 2001 with effect from 20th August, 2015.

The Bill seeks to amend the National Institutes of Technology, Science Education and Research Act, 2007 for inclusion of the NIT, Andhra Pradesh in its First Schedule.

The Bill recognizes NIT, Andhra Pradesh as a society under the Societies Registration Act, 2001 and gives a legal entity to it.

As a matter of fact, the bifurcation of State of Andhra Pradesh had an adverse impact on education sector of both the regions. On the one hand, Telangana got three Central Universities, on the other hand, Andhra Pradesh had none.

As per policy of the Government, 50 per cent of the seats in NITs are earmarked for the eligible domicile students of States/districts where the NITs are situated. Sir, NIT, Andhra Pradesh will ensure that the students of Andhra Pradesh will get adequate opportunities to pursue research at undergraduate, postgraduate and doctoral levels, in an inter-disciplinary knowledge regime and research environment. I thank the NDA Government for providing 50 per cent of the seats for domicile students.

15.43 hours

(Shri Hukmdeo Narayan Yadav *in the Chair*)

NIT, Andhra Pradesh was established at a temporary campus of West Godavari district of Andhra Pradesh. The State Government of Andhra Pradesh has also provided land for NIT-Andhra Pradesh at West Godavari district of

Andhra Pradesh. NIT, Warangal would function as the parent college that would look after the functioning of the university.

My friend, Dr. Shashi Tharoor told that the college is situated at a temporary location. For the information of the august House, not only the college, after the bifurcation of our State, but our Chief Minister of Andhra Pradesh, Shri N. Chandrababu Naidu is also staying in a temporary accommodation. He is functioning in a temporary office accommodation and all our Ministers are functioning from a temporary accommodation. Everything is temporary because of the unscientific bifurcation done by the earlier UPA Government. Due to this, five crore people of Andhra Pradesh are suffering a lot.

But at the same time, in the Andhra Pradesh Reorganisation Act many things are mentioned. I thank the former HRD Minister Smriti Irani and Prime Minister Narendra Modi as they have given permission to start nine institutions out of 11. It is a historical step after independence of this country. Now, I would also like to congratulate Javadekarji and I request him to extend all the support. He is giving Rs. 40 crore for this institute. We all know very well as to how much money is required to build a National Institute of Technology. Of course, for the time being, this institute is being run from a temporary location. But I would request the hon. HRD Minister to create the entire infrastructure for the National Institute of Technology, Tadepalligudem before the completion of the first batch and see that the first batch students do not feel inferior as compared to the students of other NITs in the country.

Sir, everybody is speaking about foreign universities and our universities. They are making a comparison. I am very sorry for that. If we see, our great former Prime Ministers Vajpayeeji, P.V. Narasimha Raoji and the present Prime Minister Narendra Modi are not from any foreign university. In fact, our former Prime Minister P.V. Narasimha Raoji was responsible for bringing in liberalisation, privatisation and globalisation.

Many of our Members are speaking about engineering graduates and employment. One of our earlier speakers Shri Haribabu also said that we have four categories of engineering colleges, namely IITs, NITs, University engineering colleges and private engineering colleges. Here, I would like to request the Government of India to provide more and more funds to higher education in our country because providing education is the responsibility of the Government. Even though we are having a lot of private colleges, as one of our friends said, at present there is shortage of teachers in IITs and NITs. There is not only shortage of teachers and also shortage of funds, but I would also request all the political parties that we have to reduce political interference in our higher educational institutions, particularly in Central Universities, IITs and NITs. Due to political interference, many teachers are not willing to work in higher educational institutions like Central Universities, IITs and NITs. Recently we have seen the episode of Hyderabad Central University.

Secondly, even at the University level it is very unfortunate that our post graduate students and research students are quarrelling with each other on issues of caste, religion, local students and non-local students. So, I would request the hon. HRD Minister to focus on this issue; whether this party is in power or that party is in power, we have to reduce the socio-economic imbalances among students.

As far as employment is concerned, our country is a growing country. We have a population of 125 crore people in this country. This country needs a lot more educational institutions. I am not telling this. Our former Prime Minister P.V. Narasimha Raoji said that we need more and more educational institutions because of liberalisation, privatisation and globalisation. He was the man responsible for starting of more and more private educational institutions in this country. Our hon. Chief Minister Shri N. Chandrababu Naidu implemented economic reformed in the then unified State of Andhra Pradesh. Due to the efforts

made by our hon. Chief Minister Shri N. Chandrababu Naidu, a lot of IT and other engineering graduates are working in US and in other countries.

Thirdly, the most important thing is research. Unfortunately, many of our educational institutions, both in the private sector and in the public sector, are failing to get good results in the field of research because our teachers, our government and our society are not focussing on research. We are always crazy and passionate about the higher education and research in other countries. As we all know very well, once upon a time we had a great history on higher education.

Many students from foreign countries used to visit our country to get education specially from Nalanda, Takshashila and Magadha in ancient days. Our HRD Minister, Shri Javadekarji is a visionary person. I wish that during his tenure itself, he should be in a position to place our higher education system on par to compete with the global education system. For that, we would have to create a world-class environment in our educational institutions. Then only, we would be able to attract students around the globe to come to India and get higher education.

Sir, I would give you one small example. In Hyderabad, we have very good hospital and medical facilities. We are attracting a large number of patients and medical students from the Middle East countries to Hyderabad. In a similar way, we can create world class facilities in our education institutions also. If we reduce the political interference and if we reduce socio-economic imbalances, we would definitely be in a position to attract world-class students into our country to get education.

Sir, in India, there is no dearth of intelligence and intellect. The only problem is in coordination and commitment. But I am very much sure that Javadekar Saheb would bring about positive changes in this regard. I am also sure that he would bring the NIT, Tadepalligudem up to the national level.

Sir, we are simply naming the national institutions. I do not know why we are failing to provide the nationality integrity to our students. If you talk to any students or teachers, first, they would tell their surname, and then, caste, religion

and region, etc. Nobody would speak about nationality first; nobody would say that they are Indians first. So, I wish a day will come soon when all our 125 crore Indians will say that they are Indians first; and their name, surname, caste, etc., will come later.

Sir, even the NIT, Warangal, which is one of the famous institutions, now, in Telangana, once upon a time had a severe problem of extremism. Now, they are doing extremely good. Why I am telling all these things is that the educational institutions are like temple, church and *masjid*. So, we should maintain the holistic atmosphere in our educational institutions. Then only, we would be able to provide quality education to our students. Actually, we are building the nation by way of giving quality education to our students. Instead of simply giving a textbook knowledge, teachers and people working in the educational institutions should provide knowledge beyond the textbooks and beyond the classrooms. Then only, our students would be able to face the global competition; then only, we would be in a position to put our educational institutions in the world ranking.

Sir, we have several engineering colleges, and as some of our friends have also said, due to bifurcation of Andhra Pradesh State, some of these institutions are not doing well. Some had to be shut down owing to low student turnouts and quality considerations. The other reason for their getting shut down is that we are merely increasing the number of educational institutions, we are merely increasing the number of students, but industrialization is not increasing on par with education. Just because of this reason, many of the engineering graduates and general graduates are not getting jobs. That is why, I would request that we should concentrate more in bringing industrialization on par with education. Then only, we would be in position to provide more and more jobs to our engineering graduates and other graduates.

Sir, on behalf of the Government of Andhra Pradesh, I convey my sincere thanks to the NDA Government and to our HRD Minister for giving nine institutions in a span of two years. At the same time, I would also request the hon. Minister to increase the budgetary allocation in this regard. Then only, we would be able to create more and more quality institutions.

With these words, I conclude. Thank you very much.

श्री चन्द्रकांत खैरे (औरंगाबाद) : सभापति महोदय, राष्ट्रीय प्रौद्योगिक विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान संशोधन विधेयक, 2016 सदन में प्रस्तुत किया गया है। मैं इसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूँ। वर्तमान में भारत में 29 राज्य और 7 केन्द्र शासित प्रदेश हैं। 31 राष्ट्रीय तकनीकी संस्थान, एन.आई.टी. अब तक खुल चुके हैं और कुछ केन्द्र शासित प्रदेशों को राज्यों के साथ एन.आई.टी. के लिए ज्वाइन किया गया है।

राष्ट्रीय तकनीकी संस्थान, एन.आई.टी., एक राष्ट्रीय महत्व की संस्था है, जो प्रौद्योगिक, प्रबंधन, विज्ञान और इससे जुड़े अन्य विषयों की शिक्षा प्रदान करती है। अभी देश में 31 एन.आई.टी. हैं, और इसकी कुल 15500 सीटें हैं। मेरा ऐसा मानना है कि एन.आई.टी. में सीटों की संख्या बढ़नी चाहिए। मैं मंत्री महोदय से विनती करूंगा कि यह शिक्षा का एक बहुत अच्छा साधन है और यहां ज्यादा से ज्यादा बच्चों की पढ़ाई हो सकती है, क्योंकि यहां गेस्ट हाऊस वगैरह और अन्य सभी सुविधाएं हैं। और भी बच्चे यहां आ कर अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं। जो बड़े राज्य हैं और जहां जनसंख्या ज्यादा होती है, वहां दो या जैसे जनसंख्या होगी, उसके अनुसार एन.आई.टी. होने चाहिए। छात्रों को इंजिनियरिंग की शिक्षा गुणवत्ता एवं मानकों के अनुसार मिल सके, इसके लिए आपको इसमें बदलाव करना चाहिए।

मैं एक उदाहरण देना चाहता हूँ। गोवा की जनसंख्या मेरे जिले से भी कम है और वहां एक एन.आई.टी. है। महाराष्ट्र की जनसंख्या 11 करोड़ से ऊपर है, और वहां भी एक ही एन.आई.टी. है, जो सबसे पुराना है, वह नागपुर में है। अभी माननीय मुख्यमंत्री जी नागपुर में ले कर नहीं जाएंगे, इसलिए अभी मराठवाड़ा क्षेत्र में आप एक एन.आई.टी. खोलिए, अभी विदर्भ में है। मराठवाड़ा के लिए एक एन.आई.टी. की व्यवस्था कीजिए, ऐसी विनती मैं आपसे करता हूँ, क्योंकि आप भी महाराष्ट्र से हैं, इसलिए यह हो सकता है। हमारा क्षेत्र मराठवाड़ा की राजधानी है। सभी एजुकेशन हब वहां पर है। इंडस्ट्रियल हब वहां पर है। सारी इंडस्ट्रीज़ भी वहां आ रही हैं। डीएमआईसी भी वहां पर है। इसलिए उसकी एक शाखा हमारे यहां होनी चाहिए। विदर्भ में पहले से है, एक मराठवाड़ा में भी होना चाहिए। सरकार द्वारा चलाए जा रहे इंजिनियरिंग कॉलेजों की संख्या सीमित है। वर्तमान में 31 राष्ट्रीय तकनीकी संस्थान हैं, 23 भारतीय तकनीकी संस्थान (आई.आई.टी.) हैं, 20 अंतर्राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.आई.टी.), और 18 सरकारी अनुदान प्राप्त इंजिनियरिंग कॉलेज है। सभी कॉलेजों में कुल सीटें 35 हज़ार हैं। छह नए आई.आई.टी. खोले जाने का प्रस्ताव सरकार ने किया है। यह स्वागत योग्य कदम है, परंतु जनसंख्या के आधार पर एन.आई.टी. की संख्या बढ़ाने की विनती मैं आपसे करूंगा।

माननीय मंत्री जी से मैं अनुरोध करूंगा कि छात्रहित में उपरोक्त विषय को शीघ्र संज्ञान में ले कर बड़े राज्यों में पर्याप्त संख्या में एन.आइ.टी. खोलने हेतु पर्याप्त कदम उठाना ही पड़ेगा क्योंकि आज-कल बच्चे इंजीनियरिंग और बाकी उच्चतर शिक्षा में ज्यादा इंट्रेस्ट ले रहे हैं। उसमें मैं कहूंगा कि जैसे नॉर्थ-ईस्ट में जो एन.आइ.टी. है, उसकी स्थिति बहुत कठित होती जा रही है। वहां छात्रों की संख्या भी कम होती जा रही है। वहां आपको सुधार करना पड़ेगा ताकि वहां के बच्चे और भी पढ़ाई कर सकें। वह अच्छी संस्था है, लेकिन उसका नंबर आखरी है। एन.आइ.टी. की जो अच्छी संस्थाएं हैं, उसमें से सबसे टॉप तिरुची में है, वारंगल में है, सुराथकल में है, इलाहबाद में है, कालीकट में है। ये पहली टॉप पांच एन.आइ.टी. हैं। इसमें भी कॉम्पटिशन होता है। कॉम्पटिशन के आधार पर प्राप्त अंकों के अनुसार छात्रों को कहीं भी जाना पड़ता है, जैसा अभी नीट में हुआ है। इसलिए मैं कहूंगा कि नॉर्थ-ईस्ट एन.आइ.टी. को भी उनकी फैकल्टी के लिए, बच्चों के लिए सुधार करना चाहिए।

एन.आइ.टी. में इस वर्ष से बोर्ड ने एडमिशन फीस बढ़ाने का फैसला किया है। फीस वृद्धि 70 हजार रुपये से एक लाख 25 पच्चीस हजार रुपये करने का प्रस्ताव आया है। सभी लोग तो एक लाख 25 हजार रुपये नहीं भर सकते हैं। उसमें आपको इकनॉमिकल बैकवर्ड क्लास आदि को को कुछ सुविधा देनी चाहिए। क्योंकि बहुत से बच्चे ब्रिलिएंट होते हैं, लेकिन उनके घर में कुछ भी नहीं होता है, वे कुछ भी नहीं कर सकते हैं। उनकी आपके माध्यम से मदद हो सकती है। इसलिए फीस उचित रूप से रखी जानी चाहिए।

माननीय मंत्री जी के समक्ष कोटा के कोचिंग सेंटर्स में विद्यार्थियों की बढ़ती आत्महत्या की ओर मैं ध्यान दिलाना चाहता हूँ। यह बहुत ही गंभीर मामला है। कोटा में आत्महत्या की जो भी घटनाएं घट रही हैं, उन पर केंद्र सरकार के विभाग को भी विचार करना चाहिए कि ऐसा क्यों हो रहा है। कोचिंग सेंटर, इंजिनियरिंग और मैडिकल प्रवेश के लिए कक्षा चलाने का यह व्यापार एक लाख करोड़ रुपये से भी अधिक का है।

16.00 hours

छात्रों पर दबाव काफी अधिक होता है, जिससे वे आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इस समस्या का समाधान अवश्य निकाला जाना चाहिए, मैं ऐसा आपसे अनुरोध करता हूँ। इस बिल का समर्थन करते हुए मैं माननीय मंत्री जी से विनती करूंगा और मेरी विनती आप मान्य करेंगे, एनआईटी अभी सिर्फ 31 स्थानों पर हैं, जिन राज्यों में छात्रों की संख्या ज्यादा है। जैसे महाराष्ट्र में एक विदर्भ में हो गया, महाराष्ट्र के मराठवाड़ा के क्षेत्र में भी संभाजी नगर औरंगाबाद में एक एनआईटी होना चाहिए, मैं ऐसी आपसे विनती करता हूँ और बिल का समर्थन करता हूँ। धन्यवाद।

SHRI KONDA VISHWESHWAR REDDY (CHEVELLA): Thank you, Sir, for the opportunity. As per the Andhra Pradesh Reorganization Act, 2014, the Government of India shall take steps to establish institutions of national importance in the 12th and 13th Plan periods in the successor State of Andhra Pradesh. Based on it, the HRD Ministry has decided to set up an NIT. It is a welcome step for Andhra Pradesh, for the country and also for all the people of Telangana. It is because, we want our neighbouring States to prosper and we do not want the poor students there to suffer.

The NIT has been set up to cater to the needs of the State of Andhra Pradesh which does not have NIT. The State of Telangana has an NIT now after the bifurcation. So it is only fair that Andhra Pradesh does have an NIT. But, not only NIT, I think it should have IITs; it should have AIIMS and it should have IIITs. It is because, when our neighbouring States prosper, the country prospers and we prosper. But, the rich people of Andhra Pradesh can go to Mumbai, Delhi or Hyderabad for higher education. Hon. Minister Javadekar *ji* also mentioned that everybody has a right for education right from this end of the House to that end, and here from this end of the House to that end. They have the right for education. So, definitely, this is very much required. Just as NIT is required, IITs, AIIMS and research institutions are required, I think, they also require a High Court. For education, people have to travel very far. The Rich people can travel; the poor people of Andhra Pradesh cannot travel far for education. Similarly the poor people of Andhra Pradesh cannot travel all the way to Hyderabad for justice also. Only the rich who have interest in Hyderabad can come to Hyderabad for justice but the poor in Andhra Pradesh cannot go all the way to Hyderabad for justice. So, I think, I want you to take cognizance of that. It is very well needed.

Not only just to establish NIT, we also want the Central Government to provide us adequate funds. Especially since there is no building, I think, all the required funds should be provided. But, the National Institutes of Technology,

Science Education and Research Act does not define what is an institute of national importance. Do they get more money? If so, how much money do they get? Do they get more land or do they have more posts? That is very important. Just like announcing an institution is not sufficient and just naming it an institute of national importance is not sufficient, we have to articulate what exactly construes an institute of national importance and provide the entire wherewithal to the State of Andhra Pradesh.

Sir, I do not have too much to say about this because everybody in the House, so far, has agreed to this. I am actually going to close hoping you will give more time for my next speech on the IIITs because we are going to discuss deeper aspects of technical education in India which is really falling down. But I would like to take this opportunity to bring it to the attention of the Ministry, just like NIT is very important for Andhra Pradesh, a tribal university in Telangana also is very important. I think, without any delay, you should establish the tribal university in Telangana. The number of seats for the locals also can be considered to be increased because in Telangana we have IIITs, NITs and IITs. So you can even consider it; I do not think anyone in the House will actually go against it.

I would like to end my speech by just touching upon this. When we were young, if we got admission to an engineering college, our life was set. But today, if you get admission in an engineering college, I think 90 per cent of them are unemployable and if you get into engineering with computer science, then definitely, you are going to be 99 per cent unemployable. We need to dwell a little deeper into it when we discuss about IITs. Thank you for the opportunity.

SHRI P.K. BIJU (ALATHUR): Sir, this seems to be a small Bill in the vision but it has far reaching implications for our country. This Bill is to amend the 2007 Act in its first schedule and to incorporate the National Institute of Technology, Andhra Pradesh in place of that.

The financial memorandum of this Bill says:

“For the current financial year, an amount of Rs. 40 crore has been allocated for establishment of National Institute of Technology, Andhra Pradesh. An outlay of Rs. 226 crore (Rs. 94.73 crore as non-recurring towards capital expenditure, Rs. 114.32 crore as recurring expenditure and Rs. 16.72 crore as contingency expenditure) has been made over a period of three years with the stipulation that sanction of funds would be on incremental basis after assessing the requirement as part of the annual budgetary exercise. ”

I want to know after three years, who will take the responsibility of this institute? Will the Central Government again fund it to establish some of our new goals that we have to achieve? Or will the State Government give some share for the further development of such institution?

We are closely associated with Standing Committee on HRD from 2009 - 2014. Since that time itself, in 2013, the same Bill was amended and we have thoroughly discussed it in the Standing Committee meeting and submitted that Standing Committee Report before the Parliament. So, I would request the Minister to go through that Report. We have given so many suggestions. If one institution from the State is getting the benefit of institution of National importance, what is the reservation policy of that institution? If you have any reservation in the State, are the existing reservation norms in our country be applicable to that institution also? But that is not clear. We have suggested our Standing Committee Report itself to take care of the State reservation in such institutions who got the status of institution of national level.

In this discussion, I would like to raise some other questions. Our colleagues have already mentioned some important aspects of the higher education

of our country. We are spending merely two per cent of our Annual Budget for the development of higher education.

From 2009, I have got chance to speak on this particular subject of higher education. I have mentioned this thing to increase our higher education expenditure.

Our neighbouring country, China, is spending more than what our country is. I am not talking of USA, UK, Canada or about capitalist countries. They have spent much more than us. We have established our CSIR laboratory in our country before China. But China established their CSIR laboratory after we established it. But now, they are producing more Ph.Ds than what our country is producing. How can they provide such an atmosphere, like infrastructural facility, in their own country? We are lagging behind. I have raised this matter in Parliament.

What is happening in our institutions of national importance, Central Universities and IITs? We have witnessed one of the things in our Standing Committee meeting itself. The hon. Minister was also there in that Committee. One of the Delhi students approached the Standing Committee Members and even the Chairman of the Standing Committee also. He is from Delhi IIT. They have published a number of papers. They have got national and international credit for that. But even now the faculties in the IIT, Delhi are not ready to sanction and allow him to submit his Ph.D. He belongs to the Dalit community. So, after the intervention of the Standing Committee, finally, they have allowed him to submit his Ph.D.

Sir, I will mention one more thing in this discussion. The Ministry of Human Resource Development has announced to increase the annual fees of IITs from Rs.90,000 to Rs.2 lakh. The previous Government increased it from Rs.50,000 first to Rs.80,000 and then to Rs.90,000. Yesterday, our hon. Minister replied to one of the queries raised on the floor of this House. He replied that the SC/ST and OBC students have got reservation and concession of fees. But the

SC/ST students get only 50 per cent concession. You have increased the fees from Rs.90,000 to Rs.2 lakh. That means, they have to pay Rs.1 lakh. How is it possible? What is happening is that even for getting the fee concession, these students from the deprived section have to deposit the fee at the time of admission and that will be reimbursed later.

I am a victim of this practice. I was a student. I had completed my pre-degree. I joined one degree college. I had got the admission but I could not pay the fees at that time. They had given me one more day. But how can I pay? Today I am coming to Parliament and speaking for the downtrodden people because whatever your Ministry may be, your bureaucrat says, do not do; do not implement it at such level. The students from the deprived section do not have to pay that much of amount from the beginning of their studies. What is going on in the national institutes, in the IITs and in our Central Universities? Some students are getting admission and then they drop out starting from the next year onwards. I have got representation from the students of Roorkee, IIT. Sir, 18 students were disqualified after one year. They have not reached up to the mark. Who will decide the criteria? Who will decide the norms? It is not from your Ministry. It is by some of the faculties.

The hon. Deputy Speaker intervened in some of the matters, especially on the shortage of faculties. We have thoroughly discussed it. This is not only because of some people going abroad, and that is why, the vacancies are still continuing. No. The vacancy of SC/ST teaching faculties is because they are not ready to fill up. I have raised this issue. I have sent a letter to the Ministry of HRD. But till today our higher educational institutions are trying to create their institutions as elite institutions. They are not ready to implement the regulation of this country. They are not implementing the reservation norms we are practising in our country. The intention is not to fill up those vacancies. I am ready to accept it. Some of our eminent scholars have got opportunities from the USA, UK and abroad. Some of the institutions have given them more than what we give. They

have got opportunities. But we have to select some of the good faculty members, give them good salary and good atmosphere for their research and other studies.

Sir, I think the present Minister will take care of these things because he has a lot of ideas in this regard. We have worked together. We just changed the name. That will not resolve the whole issue. We have to reframe and change the entire system. In two days, yesterday and today, we have got a lot of inputs from the Members.

Lakhs of engineering seats are lying vacant in this country. Why is this happening? On the one hand, a lot of students are searching for admission and on the other lakhs of seats are lying vacant. It is because they do not have money to pay what they ask for. That is why these seats are vacant. A huge amount of money is needed for getting admission in the private self-financing institutions. I think that the Government institutes can definitely play a significant role in this regard in our country. I think the hon. HRD Minister will look into this important matter. With these words, I conclude. Thank you very much.

SHRIMATI BUTTA RENUKA (KURNOOL): Thank you, Sir, for giving me this opportunity to speak on the National Institutes of Technology, Science Education and Research (Amendment) Bill, 2016.

I welcome that this Government is fulfilling some of the commitments made at the time of bifurcation of the State of Andhra Pradesh. This Bill is a part of one such provision in the Andhra Pradesh Re-organization Act, 2014, which stipulated that a National Institute of Technology will be set up in the newly created State of Andhra Pradesh. I am happy that it has already been set up and is functional. This is a welcome step in the right direction.

Sir, these institutions have been declared as institutes of national importance alongside the Indian Institutes of Technology. The main objective is to make available facilities for higher education, research and training in various fields of science and technology. Although we can boast of a long history of scientific excellence, science education needs to be implemented across all layers of society and the benefits should be made accessible to the large population of this country.

Despite our impressive economic growth, scientific research continues to lag behind. Our investment in scientific research is very low compared to other developed countries. This must increase for the benefits to reach the poor and the downtrodden. Insufficient scientific research in India's private sector seems to be a part of the problem. The large pharmaceutical sector, for example, remains dominated with the generic products rather than original formations.

Sir, during the last few decades India's large population started benefiting and enjoying the outcome of the progress in technology. Space technology has played a significant role in this regard. It is not an exaggeration to say that there is no household in India which does not have a mobile phone or a television.

The vision of institutes like NITs and IITs is creation of research centres of the highest calibre in which teaching and education in basic sciences will be totally integrated with state-of-the-art research. These institutions are devoted to

undergraduate and postgraduate teaching in technology and make education a career in basic sciences more attractive by providing opportunities in integrated teaching and learning.

Sir, the contribution of technology and science institutions is very significant and the students passed out of these institutions are making their presence felt not only in India but also across the globe. We are proud that many of our Indians are heading global organisations. Thus, we have made progress in setting up institutions of higher learning. They are not able to cope up with the growing population. Through their centralised entrance exam, the NITs and IITs recruit students through a rigorous screening process and these students are educated to a very high standard. However, to be able to lift a population of more than 600 million of poverty and to have them participated in the country's economic development, higher education needs to be a priority. This is where this kind of institutions could have an increasingly important role.

Science in India still has significant potential for further development. Although scientists from the Subcontinent excel on an international level, the huge potential offered by the country's young population is far from being fully leveraged.

Sir, I welcome this Bill considering the fact that it pertains to my State and is a fulfilment of the commitment made at the time of bifurcation. With the bifurcation of the State, the people of Andhra Pradesh have lost many things. Many institutions of national and even global importance - like CCMB, NGRI, Hyderabad Central University, ISB, Survey of India, Nuclear Fuel Complex, ECIL, ICRISAT, NIRD to name a few – have been set up in the erstwhile Andhra Pradesh and they have all been set up in Hyderabad which has gone to Telangana. So, the people of newly created Andhra Pradesh are deprived of the development that has taken place and concentrated in Hyderabad over a period of nearly 60 years when they were united. However, we have not lost hope. We will continue

to strive and work hard to regain a position of eminence and recognition to the newly created State of Andhra Pradesh.

Sir, we only seek the support and guidance from the Central Government. I request the hon. Prime Minister to honour all the commitments made by his predecessor in Parliament, including the special status to the State of Andhra Pradesh, and support the people at this juncture and bring us all out of depression and despondency. I am sure that the hon. Prime Minister will be sympathetic to this cause.

Sir, I sincerely thank you for giving me this opportunity to speak on this important Bill.

श्री जय प्रकाश नारायण यादव (बाँका) : सभापति महोदय, विचार तथा पारित किए जाने के लिए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी विज्ञान, शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (संशोधन) विधेयक, 2016 लाया गया है। मैं इस बिल के बारे में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ।

सबसे पहले माननीय मंत्री जी, जिन्होंने मानव संसाधन विकास मंत्रालय संभाला है, जावड़ेकर साहब को हम बधाई देते हैं। जिस बिल पर बहस हो रही है, यह आंध्र प्रदेश से जुड़ा हुआ है जिसके पक्ष में हम सब खड़े हैं। नए बड़े संस्थान खुलें और उन्हें अधिक से अधिक संसाधन मिलें, ताकि पढ़ाई-लिखाई का बेहतर असर हो। हमें उच्चतर शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए। ज्ञान ही उजाला है, ज्ञान ही पूर्णमासी है, ज्ञान के बिना अमावस्या, काली रात और अनपढ़ता है, इसलिए टेक्नोलॉजी का जितना विकास हो, ज्ञान का जितना विकास हो, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान नीट का जितना विकास हो, यह बेहतर है।

बिहार में कभी नालन्दा विश्वविद्यालय इतिहास में रहा, जिसे आज भी याद किया जाता है और उसकी बेहतरी की चर्चा होती है। बिहार में ही विक्रमशिला विश्वविद्यालय भी रहा। उसकी भी चर्चा होती है। देश के कई कोनों में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान खुले हैं। बिहार में पटना में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया है, यह 18वां राष्ट्रीय संस्थान है, जिसका नया नाम बिहार इंजीनियरिंग कॉलेज पटना है। मैं माननीय मंत्री जी से बिहार पर विशेष ध्यान देने की चर्चा करना चाहता हूँ। हम लोग सवाल उठाते रहते हैं कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दीजिए, बिहार को अधिक से अधिक संसाधन दें, एक मामले में नहीं, बल्कि वह उसके चतुर्दिक विकास के लिए हो, इसकी लगातार चर्चा होते रहती है।

बिहार की आबादी कुल आबादी का लगभग साढ़े आठ से नौ परसेंट है। यह आबादी के हिसाब से हो, राज्यों का कोई बंटवारा नहीं हुआ है, लेकिन हम अपना अधिकार जरूर मांगेंगे, अपना हक जरूर मांगेंगे। हम बिहार के बाबत लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर में अपनी बात रख रहे हैं। बिहार की आबादी के आधार पर इंजीनियरिंग कॉलेज होने चाहिए, वहां पांच होने चाहिए, आबादी के हिसाब से होने चाहिए। हम जिस क्षेत्र से आते हैं वह बाँका का क्षेत्र है, भागलपुर का क्षेत्र है, वहां प्रौद्योगिकी संस्थान खुले, जैसे मुंगेर है, जमुई है, हमारे दूसरे भाई नालन्दा से आते हैं और दूसरे क्षेत्र से आते हैं। शहरी आबादी के कारण ग्रामीण आबादी दब जाती है, वह राख नहीं है, लेकिन जब राख को हटाएंगे तो वहां से ज्ञान की अग्नि प्रज्वलित होगी। शहरी आबादी के कारण गांव की आबादी दब जाती है।

जवाहर नवोदय विद्यालय खोले गए, आज जहां जवाहर नवोदय विद्यालय खुले हैं, उसका असर स्थानीय गांव के स्कूल के बच्चों के ऊपर पड़ रहा है, उनकी संस्कृति पर पड़ रहा है, उनके संस्कार पर पड़

रहा है, उनकी वेशभूषा पर पड़ रही है। उनकी पढ़ाई-लिखाई पर पड़ रहा है। हम इसे कहीं भी खोलेंगे, हमारे भाई जाएंगे, लेकिन हम लोगों का शहर में नजर नहीं रहना चाहिए। जब हम गांव की बात करेंगे, जब गांव बनेगा, तभी भारत बनेगा और ज्ञान के क्षेत्र में हमारी प्रतिष्ठा विश्व में बढ़ेगी। मेरा हमेशा मानना रहा है कि गांव बनाओ, तभी देश बनेगा। इसलिए शहरी आबादी के दबाव को रोकने के लिए गांव की ओर जाना चाहिए। शिक्षा की अच्छी गुणवत्ता हो, उसकी क्वांटिटी भी हो, गांव में गरीब हैं, किसान हैं, बिहार के लड़के बाहर पढ़ने जाते हैं। बड़ी संख्या में जाते हैं जिससे समय की बर्बादी होती है, पैसे की बर्बादी होती है और कई तरह की चर्चाएं हो जाती है।

मैं माननीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर साहब से मांग करता हूं कि बिहार के छात्र बिहार से बाहर न जाए, इसलिए टेक्नीकल एजुकेशन के मामले में अधिक से अधिक संस्थान बिहार में दिए जाएं और इसको बढ़ाया जाए। इसके साथ-साथ जो नॉन-टेक्नीकल संस्थान हैं, अनस्किल्ड किसान हैं, मजदूर हैं, गरीब हैं, गांव के लोग हैं, पिछड़ी आबादी के लोग हैं, आपको उनके लिए भी सोचना चाहिए। उसमें भी हुनर है, उसकी अंगुलियों में भी कमाल है, उनमें भी ज्ञान है, उनमें भी क्षमता है, उनमें भी आभा है, लेकिन उस आभा को प्रकट करने के लिए ग्रामीण प्रवेश में उन किसान के बेटों को और उस धारा में रहने वालों को भी ताकत मिलनी चाहिए, जिससे उनकी स्ट्रैन्थ बन सके, उनका मोर्डनाइजेशन हो सके। जो ट्रेडिशनल काम करते हैं उनको बढ़ावा मिल सके। बिहार के छात्रों या अन्य राज्य के छात्रों के पैसे की बर्बादी न हो। केन्द्र-राज्य का समन्वय होना चाहिए, इस पर बैठकर विचार होना चाहिए। बिहार में एनआईटी अधिक से अधिक खोलने की कार्रवाई की जाए। तकनीकी एजुकेशन है, स्किल डेवलपमेंट की एजुकेशन को ज्यादा विस्तारित किया जाए। हम मांग से बंधे हुए हैं, इस पर चर्चा कर रहे हैं। कई ऐसे संस्थान हैं जो ज्यादा संख्या में खोले जा सकते हैं। कौशल विकास के लिए और क्षेत्रीय क्षमता को बढ़ावा देने के लिए नए-नए इंजीनियरिंग कॉलेज और तकनीकी संस्थान खोले जाएं। मानव शक्ति, मानव ऊर्जा को हम कैसे ज्ञान के क्षेत्र में बढ़ाएंगे, विभिन्न योजनाओं में जोड़ेंगे, विभिन्न क्षेत्रों में जोड़ेंगे इसे और बढ़ाने का काम करेंगे?

बिहार में पांच नए प्रौद्योगिकी संस्थान और अन्य संस्थान खोलने की मांग करते हुए हम माननीय मंत्री जी से निवेदन करते हैं। मैं इन्हीं शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूं।

SHRI NINONG ERING (ARUNACHAL EAST): Mr. Chairman, Sir, I would really thank you and also our Party leader for giving me a chance to speak on this very important Bill – the National Institutes of Technology, Science Education and Research (Amendment) Bill, 2016. While congratulating my very esteemed friend, Mr. Javadekar Ji, I wish to state that he has taken the previous Department leaving aside all party matters and really doing his job. I had an interaction when you were with GLOBE and with other Committees that we had. I know that in this higher education field also, you will stick to your job and will take it to new heights.

Who had started the information technology is what I would like to bring to the attention of this august House. The first Prime Minister of India, the late Pandit Jawaharlal Nehru, with his new vision, had brought up all these institutes and he had a vision that one day India would stand as it is of today. This was followed up, and all of you will know how the mobile came to India and how the information technology came to India. We are now in the Opposition, but at that time we were in the ruling, even then also you have to admit that this was the vision of our great visionary leader, the late Rajiv Gandhi Ji, who took us to the new heights in the field of information technology and research.

I know that I do not have much to say. The previous speakers like Dr. Shashi Tharoor, Dr. Bose and my very good friend, Shri Jay Panda, have already taken up the issues which we really wanted to take up. Already, as you know, we are speaking on the same subject. The people of Andhra Pradesh expect it. I know that most of the students, especially from the North East, go and study in South. We are grateful to them, to the people of Tamil Nadu, Bengaluru (Karnataka) and Andhra Pradesh because most of our children from the North East go and study there. It is like a brain drain that comes out from the North East. Here, in the case of Andhra also, as the previous speaker had spoken, there are so many engineering colleges, but the main issue is we need quality and not just the quantity.

16.32 hours

(Hon. Deputy-Speaker *in the Chair*)

Of course, our hon. Deputy-Speaker was also supporting this cause that it is the quality that we need, and what kind of support we can give to these institutions so that we can make them into state-of-the-art institutions or institutions of national importance. How can we support these institutions?

The NIT, Andhra Pradesh, was established and covered under the National Institutes of Technology, Science Education and Research Act, 2007, to declare it as an institution of national importance, which will ultimately help in addressing the aspirations of the people, and also of the poor students, who are particularly from Andhra Pradesh. It is a very big help. The institution is already there, but because of bifurcation, it is just a formality or legality which is why we have to pass this legislation.

I would also like to put in a point. We were discussing about the important faculties that are to be taken up. There are already subjects like Computer Science, Electrical, etc., but I would demand that subjects like Environment engineering, Climate Change, which is very important now, Eco-System Studies, Agricultural Engineering, Avionics, and there are various other subjects which we have to ponder over and include them in the courses. I would request the hon. Minister to incorporate these subjects not only in Andhra, but in all the other NITs. We were discussing this issue and Mr. Panda was also saying that for 10,000 police posts, so many students, including engineering graduates, are coming forward to apply for the post of a policeman. We have to create avenues for them. Just having in quantity is not the thing of the day. We have to concentrate on the quality education so that the brain drain that is taking place from India to every part of the world is stopped. We would like that these children should come back and they should stay in India so that we can take our country forward in a better way.

I would really congratulate the people of Andhra. We wish them all the luck. We hope that the students there will get this benefit from NIT.

I would also request for one thing. My constituency is spread over 4000 square kilometres in area. I think, no one has such a big constituency. We need more educational institutions like that in Arunachal Pradesh. I would request you to at least take names of places like Tezu, Namsai, Passighat and Roing where these types of establishments are required. It is a peace-loving State. I am sure, you would look into it.

Thank you, Sir.

डॉ. उदित राज (उत्तर-पश्चिम दिल्ली) : माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं मानव संसाधन मंत्री जी का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने आज सदन में नेशनल इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी, साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च (अमेंडमेंट) बिल 2016 मूव किया है। इसमें 2007 के बाद अमेंडमेंट हो रहा है।

हमारे देश में सबसे ज्यादा चिंता रिसर्च के क्षेत्र में है। रिसर्च बहुत पुअर क्वालिटी की है। ऐसा नहीं है कि स्टूडेंट्स अच्छे नहीं हैं, टीचर्स अच्छे नहीं हैं, लेकिन जो आईआईटीज़ या एनआईआईटीज़ में हैं, वे सब या तो सिविल सर्विसेज़ की तरफ भागते हैं या मल्टीनेशनल कंपनीज़ की तरफ भागते हैं। उन्हें लगता है कि रिसर्च करने से न पावर मिलेगी, न डिग्निटी मिलेगी और न मनी मिलेगी। दो-तीन फैक्टर्स हैं, जिन्हें हम पी.डी.एम. कहते हैं, पावर, डिग्निटी और मनी। वे डिप्राइव हो जाते हैं, क्योंकि हमारे देश में रिसर्च अच्छी किस्म की नहीं है। चीन ने अगर तरक्की की है, तो इसमें वहां की युनिवर्सिटीज़ और इंस्टीट्यूट्स का बहुत बड़ा रोल रहा है। उन्होंने फटाफट बाहर की टेक्नोलाजी को डुप्लीकेट किया और अपने तरीके से मोडिफाई किया। हालांकि हम जो टेक्नोलाजी यूज़ कर रहे हैं, 50 परसेंट एज़ इट इज़ यूज़ कर रहे हैं, लगभग 45 परसेंट टेक्नोलाजी को मोडिफाई करते हैं और लगभग पांच परसेंट टेक्नोलाजी ही इन्वेंट करते हैं, इससे ज्यादा नहीं करते हैं। यह बड़े दुख की बात है, इस सत्र में इस पर लंबी चर्चा होनी चाहिए कि इसकी वजह क्या है।

हम इतने ज्यादा बिलियन डालर आर्म्स परचेज पर खर्च करते हैं। इसकी वजह है कि हम टेक्नोलाजी को डैवलप नहीं कर पाए। हम एयरक्राफ्ट कभी नहीं बना पाए, रडार, बम आदि नहीं बना पाते हैं। अगर हमारी रिसर्च अच्छी होती तो हम इन्हें बना पाते। इज़रायल, अमेरिका आदि देशों से हम आर्म्स खरीदते हैं और हजारों लाखों करोड़ रुपए की पेमेंट करते हैं। हम इसे बचा सकते थे और देश की तरक्की कर सकते थे। अभी बोस जी ने कोरपस के बारे में कहा, हार्वर्ड के कोरपस को वहां के प्राइवेट सैक्टर ने बनाया। हमारे यहां का प्राइवेट सैक्टर ऐसा करता नहीं है। बिल गेट्स, वॉरेन बफेट जैसा दिल हम कहां से लाएं, हमारा कारपोरेट सैक्टर तो प्राफिट बनाने में लगा रहता है। बिल गेट्स ने मुनाफे का लगभग 30 बिलियन डॉलर और वारेन बफेट ने लगभग 35 बिलियन डॉलर चैरिटी के लिए दिया, एजुकेशन के लिए दिया। मेरा ख्याल है कि लगभग दो बिलियन डालर भारत में लगा है। लेकिन वह दिल हमारे लोगों में नहीं है, तो क्या किया जा सकता है? उस पर साउथ में चर्चा की जानी चाहिए कि प्राइवेट सैक्टर का रोल इसमें क्यों नहीं आ रहा है? वहां के जो सेंटर ऑफ एक्सीलेंस हैं, उनमें प्राइवेट सैक्टर का रोल बहुत ज्यादा है। हमारे यहां प्राइवेट सैक्टर का रोल बिल्कुल नहीं है। केवल टेक्नोलॉजी बाहर से ले आनी है।

गवर्नमेंट में जो भी ईजाद करते हैं, उससे प्रोडक्ट बनाकर केवल प्रॉफिट कमाना मोटिव रह गया है। मुझे लगता है कि उन्हें भी अपने प्राइवेट सैक्टर के ऊपर सेंसिटाइज करने की आवश्यकता है।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री महोदय का ध्यान इस ओर जरूर आकर्षित करना चाहूंगा कि **why is it not happening?** मैं एक बात और कहना चाहूंगा कि हमारे पास पांच हजार इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट्स हैं, जिनमें से लगभग 1400 या 1500 इंस्टीट्यूट्स गवर्नमेंट में हैं। जो इंस्टीट्यूट प्राइवेट सैक्टर में हैं, वे सीटों की एप्रूवल लेते हैं। ऐसे तमाम लोग मुझे एप्रोच करते थे कि इतना पैसा देने से हमारी इतनी सीटें बढ़ जायेंगी, यानी वे पहले सीटें खरीदते हैं और फिर उन्हें बेचते हैं। वहां के स्टूडेंट्स आज पांच-छः हजार रुपये या दस हजार रुपये मंथली रोजगार के लिए मोहताज हैं। एक तरह से ब्लेटेंट साइन्स और इंजीनियरिंग में हैं। इसके ऊपर कुछ न कुछ विचार किया जाना चाहिए, वर्ना डिटेरियोरेशन बहुत होता चला जायेगा। उसका एक प्रैक्टिकल ओरियंटेशन हमारे यहां नहीं है। यहां प्योर साइंस पर ज्यादा ध्यान है। जैसे हम बाहर के देशों में जाते हैं तो कोशिश करते हैं कि वहां के कैम्पस में जाकर देखें। पिछली बार मैं इंडियाना यूनीवर्सिटी में गया था। इस बार मैंने येल यूनीवर्सिटी में देखा कि वहां प्रैक्टिकल बहुत है। अब प्रैक्टिकल होने से वही लोग आ पाते हैं, जिनका इंटरैस्ट साइंस, टेक्नोलॉजी और कम्प्यूटर में है। यहां पर लोग जॉब की वजह से आते हैं। **What is worse?**

जब मैं जे.एन.यू. में सिविल सर्विसेज की तैयारी कर रहा था, तो बगल में आई.आई.टी. दिल्ली के जो एस्पेरेंट्स थे, वे यहां रिसर्च करने के लिए आये थे, लेकिन वे भी सिविल सर्विसेज की तैयारी करते थे। जब हमें चाय पीने की तलब होती थी, तो माना जाता था कि आई.आई.टी. में चाय का ढाबा चौबीसों घंटे खुला रहता है। सारा होस्टल सिविल सर्विसेज की तैयारी करता रहता था। उनकी फर्स्ट प्रेफरेंस यह होती है कि पहले सिविल सर्वेन्ट बन जायें। अगर वह नहीं हो पाता तो फिर कारपोरेट सैक्टर में जाते हैं। इसके साथ-साथ वहां जो एमटेक में एडमिशन लेते हैं, वे बीटेक वाले नहीं लेते। बीटेक वाले कहीं विदेश चले जाते हैं या सिविल सर्विसेज में चले जाते हैं। वहां दूसरी यूनीवर्सिटी से लोग आकर एमटेक में एडमिशन लेते हैं, जिसकी वजह से रिसर्च की क्वालिटी बहुत ही पुअर है। रेशियो में बताया गया कि **our research is much lower as compared to China and other countries.** इसके ऊपर एक लंबी चर्चा करने की आवश्यकता है। चूंकि यह जी.डी.पी. से भी जुड़ा हुआ है, ग्रोथ से भी जुड़ा हुआ है। हम दुनिया से जो टेक्नोलॉजी उधार लेते रहते हैं, उसका अंत होना चाहिए। यह अंत हो सकता है। मुझे यकीन है कि इसकी शुरुआत होगी, लेकिन यह अवसर नहीं है कि इसके ऊपर चर्चा की जानी चाहिए। अब चाहे जिसकी सरकार हो, हमारी सरकार हो या पहले की सरकार हो, सब सरकारों को दोष देते हैं कि सरकार को एजुकेशन में

यह करना चाहिए, वह करना चाहिए। सरकार स्टूडेंट से जबरदस्ती रिसर्च नहीं करा सकती। अब एन्वयर्नमेंट इस तरह का है कि इसमें पावर नहीं लगती, क्योंकि यह बात सच है कि जो प्रोफेसर्स होते हैं, उन्हें इतनी डिग्नैटी नहीं मिलती, उतनी पावर नहीं मिलती। मनी के टर्म्स में भी **they do not get much money also**. ये सारे फ़ैक्टर्स हैं, जिन्हें हमें देखने की आवश्यकता है।

अंत में, मैं मंत्री महोदय को फिर से धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने आंध्र प्रदेश को एक बहुत अच्छा उपहार दिया। धन्यवाद।

SHRI PREM DAS RAI (SIKKIM): Thank you, Deputy Speaker, Sir, for allowing me to participate in this debate on the National Institutes of Technology, Science Education and Research (Amendment) Bill, 2016. Sir, a lot has already been said on the issues related to our institutes of technology and I do not want to flag those issues all over again. They are related to resource, human resource, faculty, research orientation, etc. I will take just five minutes.

What I would like to say is that today we require multi-disciplinary kind of education and what I find is that we are creating more and more IITs and NITs. The question is whether we are looking into a holistic multi-disciplinary education. Therefore, I think it has been in our scheme of things to create more and more engineers because this great nation requires many more engineers. But are those engineers being trained in social sciences, for instance, or in understanding the history of our country or for that matter in communication? Today, we all know that the cutting edge of science and research is in artificial intelligence or it is in gene splicing or it is in nano-technology and finding solutions for humankind. We are in the forefront even in space science. But wherever human beings are needed, there is a need to understand the holistic way, the way in which society is built, the way in which humans interact with machines or for that matter how our society is built.

Somehow, we have to find a pathway to bring NITs into building better universities. For instance, IITs can also at some stage become greater institutions of higher learning in the university format and this is something which the hon. Minister may like to think about. This is where we need to spend a lot more time thinking. It is because frankly we have seen many of these Bills which were there in 15th Lok Sabha and there is nothing that has changed in terms of thinking when an amendment Bill of this kind comes in the 16th Lok Sabha. Where is the extra thinking that we are doing is the question I would like to pose before the Government.

Having said that, there is a National Institute of Technology even in Sikkim. I am thankful and grateful that we have one such institution in our State. Our Government has also allocated the space but I think we have to request the Director of NIT there to accept the space that we have given. The land that we have given is very close to the new airport that is coming up. So, the faculty can come in and go out and anyone visiting the NIT can come in and go out of the airport. I was talking to the Civil Aviation Minister yesterday and he hopes to complete it within this year. This is something which I would like to bring to your notice.

Research relevant to Sikkim or relevant to that area needs to be done. For instance, NIT can be tasked with the research on mountain railways. We do have a need for building mountain railways, especially if you are taking railways right up to the Nathu La Pass which is almost 14,000 feet. So, they can do the relevant kind of research in places like NIT.

With that, I again support this Bill but with the rider that I think there is a lot more thinking that we need to do to fashion out a much more multi-disciplinary approach in our education process. Of course, the issues of faculty not being there or funds not being there have already been said by previous speakers. So, I do not want to go into those areas. Thank you for allowing me to participate in this debate.

डॉ. अरुण कुमार (जहानाबाद) : माननीय उपाध्यक्ष जी, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन 2016 के इस बिल का समर्थन करते हुए मैं 2-3 बातों की ओर माननीय मानव संसाधन मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। निश्चित तौर से देश में पिछले 25-30 वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में भारी गिरावट आई है और शिक्षा का संबंध रोटी से ज्यादा हुआ है, जबकि शिक्षा का संबंध हजारों वर्षों से इस देश में ज्ञान से रहा है। मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि शिक्षा में बुनियादी परिवर्तन की जरूरत है। अब इसमें कौन कौन से आयाम हैं, जिनकी वजह से इस तरह का वातावरण निर्मित हुआ। हम मानते हैं कि शिक्षकों का सम्मान देश में खेत-खलिहान से लेकर राजधानी तक में गिरा है और ये ही राष्ट्रनिर्माता हैं। जीवन के हर क्षेत्र में जो क्वालिटी जानी चाहिए, वह तभी संभव है जब शिक्षक इस विचार के हों, जिनमें राष्ट्र निर्माण का संकल्प हो, चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो या राजनीति का क्षेत्र हो, चाहे मानवीय सवालों-संवेदनशीलता का क्षेत्र हो, जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, बिना संकल्पित शिक्षक के यह संभव नहीं है।

आन्ध्र प्रदेश को नये राज्य के निर्माण के साथ आपने एक तोहफा हायर एजुकेशन के लिए दिया है, मैं इसके लिए बधाई देना चाहूंगा, लेकिन साथ ही यह कहना चाहूंगा कि जो नेशनल इंस्टीट्यूट्स हैं, पहले के दिनों में सैनिक स्कूल इत्यादि इस तरह की संस्थाएं थीं, जहां से ग्रामीण परिवेश के बच्चे, जो लोअर मिडिल इंकम ग्रुप के बच्चे, जिनमें तेजस्व होता था, उनका संरक्षण वहां होता था। उनकी आय के हिसाब से वहां फीस ली जाती थी।

इसलिए चाहे प्राइमरी एजुकेशन हो, सैकेंडरी एजुकेशन हो या हायर एजुकेशन हो, इसमें भी जो एक प्रयोग हमारे यहां हो चुका है, जिसकी वजह से देश और दुनिया में हमने कंट्रीब्यूट किया है, चाहे वह वशिष्ठ नारायण सिंह हों, जिन्होंने मैथमैटिक्स के क्षेत्र में एक बड़ा कंट्रीब्यूशन दिया, यह बात दुनिया के लोग जानते हैं। आज भी चाहे वह लेट कल्पना चावला हों, राकेश शर्मा हों या डॉ. खुराना हों, मैं कहना चाहता हूं कि हमारे देश में मेधा की कमी नहीं है। आज एक साधारण घर में पैदा हुआ व्यक्ति एक फोर्थ ग्रेड एम्प्लॉई का बेटा आनंद कुमार मैथमैटिकल विज़ार्ड के रूप में केवल अपने जुनून के बलबूते पर, अपने संघर्ष से आज सुपर 30 के नाम से जाना जाता है और जो गरीब बच्चों को शिक्षित करता है तथा वे बच्चे जिनके पिता अंडे बेचते हैं, रिक्शा चलाते हैं, ऐसे 30 मेधावी आई.आई.टियन को वह प्रतिवर्ष पैदा करता है। बिहार के गया में एक छोटी सी पटवा टोली है जहां दस साल पहले मैट्रिक पास लोग नहीं मिलते थे, वहां पर पिछले दस वर्षों में 500 आई.आई.टियन पैदा किये हैं और कुछ बच्चों के संकल्प से यह संभव हो पाया है। गरीबी में भी लोग संघर्ष के रास्ते को ढूंढ़ रहे हैं।

इसलिए हम गुजारिश करना चाहेंगे कि कहीं न कहीं हमारी शिक्षा दिशाभ्रम की शिकार हुई है और शिक्षकों का सम्मान घटा है। यदि शिक्षक को हम सम्मानित करें और गांवों-खेत-खलिहान से जो मेधावी छात्र हैं, डिग्री लेने वाले बहुत लोग हैं, माननीय सदस्य ने ठीक ही कहा, 5000 इंजीनियरिंग कॉलेज हैं और ऐसे भी इंजीनियरिंग कॉलेज हैं, जहां के बच्चे हम लोगों के पास आते हैं और उनको एक मजदूर से भी कम तनखाह पर लोग रखते हैं। वहां ऐसी हालत भी है। इसलिए हमें शिक्षा के डायरेक्शन को एक संकल्प के साथ आगे बढ़ाना चाहिए, ताकि शिक्षा सिर्फ रोटी से न जुड़ कर, ज्ञान से जुड़े, जिसने हमें विश्व गुरु के रूप में स्थापित किया है और आज भी इन विपरीत परिस्थितियों में भी भारत पूरी दुनिया में अपनी मेधा के लिए जाना जाता है, यह 25-30 वर्षों में हुआ है। हमारी सरकार ने एक नये भारत के निर्माण का संकल्प लिया है तो निश्चित तौर से शैक्षणिक वातावरण के निर्माण से विकास के सारे आयाम खुलेंगे। एक ही कुंजी है, जिससे सारे ताले खुल सकते हैं, इसलिए इस दिशा में एक विशेष पहल करने की जरूरत है।

इसी के साथ, मैं इस बिल का समर्थन करता हूं और माननीय उपाध्यक्ष महोदय को धन्यवाद देता हूं।

श्री बदरुद्दीन अजमल (धुबरी): सर, मैं सबसे पहले आपका शुक्रिया अदा करता हूँ कि आपने इस महत्वपूर्ण बिल पर मुझे बोलने का मौका दिया है। मैं इसके सपोर्ट में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ। यह मुल्क की बहुत ही अहम जरूरत है और आंध्र प्रदेश को यह मिलना चाहिए, मैं इसको भी सपोर्ट करता हूँ। इसकी तरक्की होनी चाहिए, मैं इसका भी सपोर्ट करता हूँ और इसको आगे बढ़ाना चाहिए, मैं इसका भी सपोर्ट करता हूँ।

सर, इसी के साथ हमारा कहना है कि हम ऊपर की सतह की बात कर रहे हैं। अभी हमारे साथी जो कह रहे थे कि गांव-देहात के बच्चों को, गरीबों के बच्चों को, जिनके मां-बाप के पास उन्हें फीस देने के लिए पैसा नहीं है, वे फीस अफोर्ड नहीं कर पाते हैं, अच्छे-अच्छे ब्रिलियंट बच्चे ड्रॉप आउट हो जाते हैं या फिर वे पढ़ना छोड़ देते हैं। हम किस तरीके से उन कीमती हीरों को निकाल कर ऊपर लाने की कोशिश कर सकते हैं, इसमें हमारा और सरकार का कितना योगदान हो सकता है, सरकार इसमें कितनी कुर्बानियां दे सकती है। गांव-खेड़ों से ही हमारे किसान के बच्चे निकलते हैं, गांव का लगाव जज्बाती है। जब तक हम गांव के बच्चों को ऊपर नहीं उठाएंगे, उन बच्चों को पढ़ाने की कोशिश नहीं करेंगे, उनको आगे नहीं ले जायेंगे, वे हमारे कीमती हीरे हैं, अगर हम ने उन कीमती हीरों को तराश कर आगे बढ़ा दिया तो वे वाकई मुल्क के लिए कीमती असास हो जाता है, पूरी दुनिया के लिए मिसाल हो जाती है, जिसकी मिसाल अभी हमारे भाई साहब ने दी है, लेकिन इसी के साथ हमारा यह कहना है कि हम उन बच्चों के ऊपर ध्यान दें।

हमारे बहुत-से साथियों ने फीस के बारे में चर्चा की है। हम सिर्फ यह न समझें कि जो बच्चे एन.आई.आई.टी में जाते हैं, वे सिर्फ पैसे वालों के बच्चे होते हैं। फीस जितना मुमकिन हो सके, एजुकेशन फ्री, एजुकेशन फ्रैंकली या एजुकेशन फ्रैंडली जिसको कहते हैं, उस हिसाब से जितना मुमकिन हो, जैसे हम रक्षा विभाग में जितना खर्च कर रहे हैं, उससे कहीं ज्यादा, अगर हमारे बच्चे पढ़-लिख कर आगे बढ़ जायेंगे तो शायद वे देश की हिफाजत उससे ज्यादा कर सकते हैं। हमें रक्षा के क्षेत्र में खर्च करने की जरूरत है, हथियारों में भी खर्च करने की जरूरत है, लेकिन हमारे देश के लोग पढ़े-लिखे हो जायेंगे, संजीदा हो जायेंगे तो शायद उस लाइन में हमें कम खर्च करना पड़ेगा। हम मैन पावर को बनाने की कोशिश करें, क्योंकि इस लाइन में हमें बहुत ज्यादा जरूरत है।

मैं नॉर्थ-ईस्ट की बात कहना चाहूंगा कि आपने नॉर्थ-ईस्ट में दो एन.आई.आई.टीज दिये, इसके लिए हम पहले की सरकार के भी शुक्रगुज़ार हैं और आपके भी शुक्रगुज़ार हैं। आपके आने से कम से कम मुझे बहुत उम्मीद हुई है, क्योंकि आपके साथ मेरा एक पर्सनल रिलेशन है। इसलिए मैं चाहूंगा कि हमारे सिल्वर के एन.आई.आई.टी. और गुवाहाटी ... (व्यवधान) बिल्कुल है, छोटे भाई और बड़े भाई का रिलेशन है। आपके साथ भी मेरा रिलेशन रहा है। मैं आपके अंडर में काम कर चुका हूँ, इसलिए मेरा यह कहना कि

नॉर्थ-ईस्ट में गुवाहाटी और सिल्चर के जो दोनों एन.आई.आई.टीज हैं, उन पर आपकी तवज्जो चाहूंगा। अभी, मैंने कहा कि अरुणाचल प्रदेश में बाकायदा यह होना चाहिए, लेकिन इन दोनों के लिए आप खुद विजिट करें, वहां की समस्या को देखें, वह बहुत-सी चीजें में पीछे है। वैसे भी नॉर्थ-ईस्ट में बच्चे कम आते हैं, इसलिए आप खास कर उसके ऊपर ध्यान देंगे, यह मेरा निवेदन है। इंशा अल्लाह, आपने मुझे इस मामले पर बोलने का मौका दिया। खास कर के, मैं दुआएं देता हूँ, मेरी दुआएं जावड़ेकर साहब के साथ हैं कि आप तरक्की करें और ऊपर जायें और इन चीजों को आगे बढ़ायें, यह मेरी आशा है। बहुत-बहुत शुक्रिया।

17.00 hours

श्री रत्न लाल कटारिया (अम्बाला) : महोदय, मैं आदरणीय जावड़ेकर जी द्वारा लाए गए इस बिल का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूँ। आज से कुछ दिनों पश्चात देश अपनी आजादी की 70वीं वर्षगांठ मनाएगा और इन 70 वर्षों में हमने बहुत सफर तय किया है। जहां वर्ष 1955 में हम केवल 8 रीजनल एन.आई.टी. से शुरू हुए और वर्ष 1991 में हिंदुस्तान के अंदर ग्लोबलाइजेशन एंड लिब्रलाइजेशन का एक युग शुरू हुआ, जिसके अंतर्गत हम 17 एन.आई.टी.ज. को शुरू करने में सफल रहे। इसके पश्चात श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी का युग शुरू हुआ जिन्होंने हिंदुस्तान की तरक्की में नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए और क्वालिटी एजुकेशन की दृष्टि से भी हिंदुस्तान में नए-नए संस्थान खड़े किए। आज फिर जननायक भारत माता के लाल नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में एक के बाद एक क्रांतिकारी निर्णय लेकर भारत को विश्व मंच पर खड़ा करने के लिए दिन-रात मेहनत हो रही है और आंध्र प्रदेश में एन.आई.टी. का जो बिल आ रहा है यह भी उसी दिशा में एक क़दम है।

महोदय, आज इस महान सदन में देश के अंदर हाई क्वालिटी एजुकेशन को लेकर चर्चा हो रही है। कहीं पर यह बात भी आ रही है कि इन 70 वर्षों में हमने क्या पाया है और क्या खोया है। हमारे इस सिस्टम में कहां-कहां कमियां रहीं और यह बात भी आ रही है कि आज हमारा इंजीनियर आठ-नौ हजार रुपए महीने पर नौकरी करने के लिए मजबूर है। इसके साथ एक दूसरा परिदृश्य भी देश में देखने को मिल रहा है कि हमारी टेक्नोलोजी ने, हमारे एन.आई.टी. के केंद्रों ने ऐसे-ऐसे प्रतिभावान लोग भी पैदा किए हैं जिन्होंने आज हिंदुस्तान के अंदर एक मछुआरे के हाथ में भी मोबाइल फोन दिया है और वह मछुआरा बीच समुद्र में अपने माल की मार्केटिंग करने में सक्षम है और जहां उसे माल बेचना है उससे फोन करके पूछता है कि आज कौन-सी किस्म की मछली पकड़ कर भेजूं - झींगा मछली पकड़ूं या सालमन मछली पकड़ूं। आज मोबाइल फोन के माध्यम से श्री-व्हीलर वाला भी अपने दूसरे साथी से संपर्क करता है कि सवारी कहां खड़ी है। यह इंफोर्मेशन एंड टेक्नोलोजी का कमाल हमारे देश में हो रहा है और हमें इस दिशा में आगे बढ़ने की जरूरत है। यह बात ठीक है कि हमारे सामने दूसरे चैलेंजिज भी हैं।

आज हम सदन में बात कर रहे हैं कि क्वालिटी नहीं आ रही है, यह हाल तो तब है कि बिना क्वालिटी के हमारे नवयुवकों ने सारी दुनिया में ऐसी धूम मचाई है कि बराक ओबामा भी मजबूर है अमरीका की यूनिवर्सिटी में जा कर अपने छात्रों को कहने के लिए कि पढ़ने लग जाओ, नहीं तो भारत के विद्यार्थी आने वाले समय में सारी नौकरियां छीन लेंगे, इस तरह का वातावरण भी आज दुनिया में दिखाई पड़ रहा है। यह बात सही है कि चीन के मुकाबले हम थोड़ा कमजोर दिखाई पड़ रहे हैं। रिसर्च के क्षेत्र में

जो बात सामने आई है, उसे हमें और गंभीरता से लेने की जरूरत है और चीन के अंदर भी एक भय का वातावरण है कि जिस तरह से हमारे बच्चे इंग्लिश को पकड़ते हैं, वैसा वातावरण चीन में देखने को नहीं मिलता है। हालांकि वे अपने बच्चों को इंग्लिश पढ़ाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं लेकिन उसके मुकाबले भारतीय बच्चे अंग्रेजी भाषा को बहुत तेजी से पकड़ रहे हैं।

मैं आदरणीय मंत्री जी से प्रार्थना करना चाहूंगा कि देश में और भी सेंटर फार एक्सिलेंस खोल कर हमारे प्रतिभावान बच्चों को आगे बढ़ाने की जरूरत है। मैं मंत्री जी से यह भी प्रार्थना करना चाहूंगा कि आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी ने देश के दलितों के लिए, देश की महिलाओं के लिए स्टार्ट अप एंड स्टैंड अप की एक योजना बनाई है जिसके अंदर 10 हजार करोड़ रुपयों का भी प्रावधान किया गया है। मैं मंत्री जी से यह निवेदन करना चाहूंगा कि इसका फायदा हिंदुस्तान की महिलाओं को, हिंदुस्तान के दलितों को तब तक नहीं मिलेगा जब तक कि उन्हें पढ़ने के अच्छे अवसर नहीं मिलेंगे।

मैं माननीय मंत्री महोदय से यह निवेदन करना चाहूंगा कि इसका फायदा हिन्दुस्तान की महिलाओं और दलितों को तब तक नहीं मिलेगा, जब तक कि उनको पढ़ने के अच्छे अवसर नहीं मिलेंगे, जब तक उन बच्चों को समय पर छात्रवृत्ति की राशि नहीं मिलेगी। ... (व्यवधान) चौटाला जी, जितना मान-सम्मान जननायक श्री नरेन्द्र मोदी जी ने बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी को दिया है, मैं भी 50 साल से एक कार्यकर्ता के रूप में कार्य कर रहा हूँ, उतना सम्मान आज तक हिन्दुस्तान में उनको नहीं मिला है।

आज एनआईटी की बात हो रही है। मैं मंत्री जी से यह भी प्रार्थना करना चाहूंगा कि मैं हरियाणा प्रदेश के अम्बाला लोक सभा क्षेत्र से आता हूँ, जो एक आरक्षित क्षेत्र है और पहाड़ों से लगा हुआ है। इसका 175 किलोमीटर क्षेत्र पहाड़ों से लगा हुआ है। आज यह राष्ट्र बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की 125वीं जयंती मना रहा है। मैं आदरणीय मंत्री महोदय से यह प्रार्थना करता हूँ कि जिस प्रकार आज आन्ध्र प्रदेश में एनआईटी के सेन्टर की स्थापना से संबंधित बिल आज मंजूर होने जा रहा है, मेरी प्रार्थना है, आदरणीय मंत्री जी मेरे बहुत पुराने मित्र भी हैं, लगभग 40 साल पुराने मित्र हैं, इन्होंने हमारा वह क्षेत्र भी देखा है कि किस प्रकार की परिस्थितियों में हम वहाँ पर दलित बस्तियों के बीच में रहते हैं। इसलिए आदरणीय मंत्री जी, मेरे लोक सभा क्षेत्र में भी कोई नैशनल लेवल की इसी प्रकार का कोई इंस्टीट्यूशन खोलने की कृपा करें। इसी के साथ मैं इस बिल का समर्थन करता हूँ।

श्री संतोष कुमार (पूर्णिमा) : उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी, विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (संशोधन) विधेयक, 2016 पर बोलने का मौका दिया है, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

महोदय, सरकार इस विधेयक के माध्यम से एनआईटी, आन्ध्र प्रदेश, जो पहले से ही स्थापित है, उसे अगस्त, 2015 से पंजीकृत करने के लिए कानूनी वैद्यता की व्यवस्था करने जा रही है। साथ ही, इसे पहली सूची में शामिल करने का प्रावधान किया जाएगा। यह अच्छी बात है। इस कानूनी वैद्यता से संस्थान की प्रशासनिक एवं अकादमिक गतिविधियों में जनता के प्रति उच्च स्तरीय जवाबदेही और समस्त हिस्सेदारी की सहभागिता भी सुनिश्चित हो पाएगी। इस संस्था में राज्य के विद्यार्थियों के लिए 50 प्रतिशत सीटें आरक्षित होंगी और मात्र आधी सीटें ही अन्य राज्यों के छात्रों के लिए उपलब्ध होंगी। इससे राज्य को काफी फायदा होगा।

मैं बिहार से आता हूँ। यह राज्य देश के सबसे पिछड़े राज्यों की श्रेणी में है। यहाँ की आबादी के अनुपात में, अन्य राज्यों में स्थापित एनआईटीज़ को ध्यान में रखते हुए बिहार में कम से कम पाँच अतिरिक्त एनआईटीज़ स्थापित करने की दिशा में सरकार कार्य करे ताकि बिहार के स्थानीय विद्यार्थियों को शैक्षणिक लाभ मिल सके। सरकार सभी राज्यों में कम से कम एक एनआईटी की स्थापना को मंजूरी देकर बिहार जैसे अत्यधिक पिछड़ी आबादी वाले राज्य के साथ क्या न्याय कर रही है? बिहार में उच्चतर शिक्षण संस्थाओं की कमी है, इस कारण राज्य से लाखों विद्यार्थी प्रति वर्ष दूसरे राज्यों की ओर पलायन करने को मजबूर हैं। इस क्रम में जिन विद्यार्थियों की पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति अच्छी है वह तो दूसरे राज्य में जाकर शिक्षा ग्रहण कर लेते हैं, किन्तु उन गरीब विद्यार्थियों के बारे में सरकार ने क्या कभी विचार किया है कि उनको अपने ही राज्य में अच्छी शिक्षा किस प्रकार से मिले? विशेषकर दलित, अति पिछड़े और अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों के बच्चे काफी प्रतिभावान होते हैं, लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति नाजुक होने के कारण उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बारे में सोच भी नहीं पाते हैं। जहां तक मुझे जानकारी है बिहार सरकार पिछले कई वर्षों से बिहार में एनआईटी की स्थापना के लिए प्रयासरत है और केन्द्र के पास इसके लिए कई आवेदन कर चुकी है, किन्तु केन्द्र सरकार राज्य के साथ राजनीतिक भेदभाव करती है और इसी का परिणाम है कि बिहार जैसे अति घनी आबादी वाले राज्य में एनआईटी जैसे संस्थानों की कमी है। बिहार में कम से कम पाँच एनआईटी जैसे उच्चतर शिक्षण संस्थान खोले जाने की जरूरत है।

अतः मैं सरकार से निवेदन करता हूँ कि बिहार को उसका हक दिया जाए और वहाँ के प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए उच्चतर शिक्षा ग्रहण करने हेतु पांच नये एनआईटी की स्थापना करने की दिशा में काम किया जाए।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ। धन्यवाद।

श्री दुष्यंत चौटाला (हिसार) : धन्यवाद उपाध्यक्ष महोदय, The National Institutes of technology, Science Education and Research (Amendment) Bill, 2016 पर बोलने के लिए मैं खड़ा हुआ हूँ।

महोदय, हम जब एनआईटी की बात करते हैं तो यह एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा हमारे देश के इंस्टीट्यूशन्स का है। इस देश के बहुत से टैलेंटिड लोग एनआईटी जैसे इंस्टीट्यूट से निकलकर देश ही नहीं, अपितु दुनिया में हिन्दुस्तान के नाम को रोशन करने का काम कर रहे हैं।

महोदय, हमारे आंध्र प्रदेश के साथियों ने इसकी मांग की, क्योंकि जब तेलंगाना और आंध्र प्रदेश को अलग-अलग किया गया तो यह बात रखी गयी थी कि आंध्र प्रदेश में भी एनआईटी खोला जाना चाहिए। यह बहुत जरूरी है कि इस देश के प्रत्येक प्रदेश में, चाहे वह हमारी सेवन सिस्टर्स स्टेट्स हों, चाहे वह लक्षद्वीप और अंडमान निकोबार जैसे आईलैंड्स हों, हमें एनआईटी, आईआईटी और आईआईएम लेवल के इंस्टीट्यूट्स खोलने की जरूरत है ताकि वह हमारी आने वाली भविष्य की जनरेशन को अच्छी शिक्षा और टेक्नोलॉजी के साथ ईक्यूप कर पाएं।

महोदय, हम एक ओर तो नये इंस्टीट्यूट्स बनाने की बात करते हैं, लेकिन दूसरी तरफ हमें यह बहुत गम्भीरता के साथ सोचना पड़ेगा कि क्या हमारे पास आज एजुकेटिड, क्वालीफाइड और ट्रेंड प्रोफेसर्स हैं? क्या हमारे पास इतना इंफ्रास्ट्रक्चर है कि हम ऐसे इंस्टीट्यूट्स को प्रत्येक स्टेट में खोलने का काम कर सकें?

महोदय, हमें अपने भविष्य पर इनवेस्ट करना पड़ेगा। प्रधानमंत्री जी भी मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया और अलग-अलग योजनाओं की बात करते हैं। आज लगभग दो साल से ऊपर का समय इस सरकार को सत्ता में आए हुए हो गया है, लेकिन हम देख रहे हैं कि इन इंस्टीट्यूट्स से जो बच्चे निकल कर आ रहे हैं, पिछले दिनों हमें एनआईटी की प्रज़न्टेशन देखने का मौका मिला और यह पता चला कि एनआईटी इंस्टीट्यूट के अंदर से भी 62-63 परसेंट बच्चे ही जॉब्स में प्लेस हो पा रहे हैं। टॉप टैन जो बच्चे हैं, वह हमारे देश में नौकरी करना पसंद नहीं करते हैं। यह बहुत ही दुखद बात है कि सिलीकॉन वैली, जहां हमारे प्रधानमंत्री जी को पिछले दिनों अमेरिका दौरे पर जाने का मौका मिला था, वहां की कोई भी कम्पनी आप उठाकर देख लीजिए, उस कम्पनी को बनाने और चलाने में किसी का सबसे ज्यादा योगदान है तो वह हमारे देश के प्रोफेसर्स और इंफ्रास्ट्रक्चर का है। आज एनआईटी और आईआईटी इंस्टीट्यूट्स से बच्चे पढ़कर ब्रेन ड्रेन के माध्यम से विदेश जा रहे हैं। मैं सरकार से आग्रह करूंगा कि वह स्किल इंडिया और मुद्रा योजना को एक साथ करके एक योजना बनाए, ताकि आईआईटी और एनआईटी जैसे इंस्टीट्यूट्स से पढ़े

हुए बच्चों को कम इंटरैस्ट पर लोन मिल सके। उन्हें मोटिवेट कर पायें कि हमारे देश के अंदर वे अपने रोजगार के साधन बनाने का काम करें। अगर वे विदेशों में जाते रहेंगे, अमरीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया और अन्य देशों की सिटीजनशिप की तरफ अपना ध्यान लगाकर वहां बसने का काम करेंगे तो हमने इस देश से डाक्टर्स को भागते देखा है, साइंटिस्ट्स को भागते हुए देखा है, आने वाले समय में अगर इंजीनियर्स भी इस देश को छोड़कर जाने का काम करेंगे तो आप मानकर चलिये कि हम कोई भी योजना इस देश में लागू करने का काम करें, इस देश का विकास इतनी आसानी से नहीं होगा।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहूंगा कि आज हमें इन इंस्टीट्यूट्स के ऊपर गवर्नमैन्ट का प्राइमरी फोकस रखना पड़ेगा, तब हम इन इंस्टीट्यूट्स में प्रोपर इंफ्रास्ट्रक्चर दे पायेंगे। माननीय मंत्री जी नये-नये एच.आर.डी. मिनिस्ट्री में आए हैं, मैं इनसे भी आग्रह करूंगा कि आप देश के सभी एन.आई.टीज. की लिस्ट निकालिये और पता करिये कि वहां सबसे बड़ी कमी जो सामने आती है, वह यह है कि हम पूरी तौर पर वहां स्टाफ उपलब्ध नहीं करा पाते। नॉन-टीचिंग और टीचिंग स्टाफ भी पूरी तौर पर एन.आई.टीज. में नहीं है। कई एन.आई.टीज. ऐसे हैं, जहां 50-60 बच्चों की बैड स्ट्रेंथ थी। हमें पहले उन एन.आई.टीज. को डैवलप करना पड़ेगा और जब हम उन्हें डैवलप कर लेंगे, तब मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि हमारे ये इंस्टीट्यूट्स इस देश को आगे ले जाने में कामयाब रहेंगे।

आखिर में मैं एक निवेदन और करूंगा। हमारे प्रदेश के अंदर एक ऐतिहासिक एन.आई.टी. कुरुक्षेत्र की पावन धरती पर स्थित है। मैं मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि उसके विकास पर भी आप थोड़ा ध्यान दें और कुरुक्षेत्र की एक विजिट करने का काम करें। क्योंकि आज तक नॉर्दर्न इंडिया में सबसे अच्छी क्वालिटी के इंजीनियर्स और पढ़े-लिखे बच्चे अगर किसी ने निकालने का काम किया है तो वह कुरुक्षेत्र की धरती ने किया है। जिस तरह आई.आई.टी. रुड़की को जाना जाता है, उसी तरह एन.आई.टी. कुरुक्षेत्र को जाना जाता है। मैं आपसे यही आग्रह करूंगा कि कुरुक्षेत्र के लिए भी एडिशनल ग्रांट, एडिशनल फंड देने का काम करें, जिससे कि एन.आई.टी. कुरुक्षेत्र का भी डैवलपमैन्ट हो पाये।

इसके साथ ही आज जो एन.आई.टी. का बिल मंत्री जी द्वारा सदन में प्रस्तुत किया गया है, मैं इसका समर्थन करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ। धन्यवाद।

श्री राजेश रंजन (मधेपुरा) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का समय दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। मंत्री महोदय मैं आपका ध्यान कुछ पाइंट्स पर आकृष्ट करना चाहूँगा। आज इस देश में शिक्षा का मतलब मुनाफा हो गया है। शिक्षा का मतलब, ज्ञान, विज्ञान और अध्यात्म के मिश्रण से नहीं रहा। शिक्षा के मामले में मैं एक बात कहना चाहूँगा कि हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति और विश्व के जाने-माने वैज्ञानिक डा.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम और पाकिस्तान में अब्दुल कादिर को अगर लिया जाए तो अब्दुल कलाम साहब अध्यात्म और विज्ञान के मिश्रण से मानव निर्माण की कल्पना को लेकर ज्ञान को अपनी जीवन में लाये और पूरे विश्व के मानव कल्याण की राह को प्रशस्त किया तो वह एक पोजिटिव दिशा थी। लेकिन दूसरी तरफ पाकिस्तान में अब्दुल कादिर के विचारों में अध्यात्म और विज्ञान का मिश्रण नहीं था, वहाँ हाई मोरल वैल्यू नहीं थी, आदर्श की स्थापना नहीं थी तो अब्दुल कादिर दुनिया की सबसे वर्स्ट चीज बनाकर अपने ही घर में तनखैय्या घोषित हो गये।

महोदय, हम कश्मीर के एन.आई.टी. में गये थे। जब कहीं हम एन.आई.टी. जाते हैं तो देखते हैं कि एक एन.आई.टी. में 40,60 या 70 विद्यार्थी हुआ करते हैं और उसके टीचर की जो क्वालिटी और क्वांटिटी है, मैं समझता हूँ कि कमजोर तबके का जो विद्यार्थी मेहनत करता है, वह टीचर के मुकाबले ज्यादा बेहतर होता है। वह वहाँ टीचर को गाइड करता है। मैंने स्वयं कई बार इसे देखा और महसूस किया है। मंत्री जी आप यह बिल आंध्र प्रदेश के सवाल पर लाये हैं, इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ और आपको एक बड़ी जिम्मेदारी मिली है, इस जिम्मेदारी के लिए भी मैं आपको बधाई देता हूँ। यह जो परिकल्पना रही है, इस पर राजनीति नहीं की जा सकती है। राजनीति होगी तो श्री राजीव गांधी जी को नहीं भुलाया जा सकता, श्री अटल बिहार वाजपेयी जी को नहीं भुलाया जा सकता तथा देश के अन्य प्रधान मंत्रियों को नहीं भुलाया जा सकता। सवाल यह है कि आप जब तक टीचर में क्वालिटी नहीं लायेंगे और एन.आई.टी. के साथ रोजगार को नहीं जोड़ेंगे तो कुछ लाभ नहीं होगा। आप सिलिकॉन वैली की बात करते हैं, हमारे देश के प्रधान मंत्री वहाँ जाते हैं तो दुनिया में धूम मच जाती है।

लेकिन जब मैं अपने देश में इन बातों को देखता हूँ और खोजता हूँ तो मुझे कुछ नहीं मिलता है। अभी हमारे छोटे भाई बोल रहे थे और बाबा साहब अंबेडकर की बात उन्होंने की तो मुझे आश्चर्य हुआ। बाबा साहब अंबेडकर की बात तो आप करते हैं, लेकिन बाबा साहब अंबेडकर ने कॉमन और कम्पलसरी एजुकेशन की बात की थी। उन्होंने एजुकेशन के निजीकरण और माफियाओं के हाथ में देने की खिलाफत की थी। बाबा साहब अंबेडकर की बात आप तब कीजिए, जब आप दलितों के बारे में, हो रहे अत्याचारों को देखें। दिल्ली विश्वविद्यालय में आप जानते हैं कि 1200, 1300 से 1400 बच्चों का एडमिशन नहीं होता है।

आपको पता है कि एन.आइ.टी. में दलित, अल्पसंख्यक और कमज़ोर तबके के जो बच्चे हैं, आरक्षण के सवाल के बावजूद भी उनके 800-900 एडमिशन कर्नाटक में नहीं होते हैं। 200-300 छात्रों के एडमिशन के बाद थर्ड सेमिस्टर जाते-जाते 80 प्रतिशत दलित बच्चों को बैक कर दिया जाता है, किसी न किसी तरीके से उसको परेशान किया जाता है। मैं आपका ध्यान उन चीजों पर दिलाना चाहूंगा कि समाज में यह जो एक्सप्लॉएटेशन है, इसको आप एन.आइ.टी. से कैसे खत्म करेंगे? चूंकि आइ.आइ.टी. का बिल अभी नहीं है, उस पर मैं आपसे डिटेल में बात करूंगा। अप एन.आइ.टी. की स्थापना कीजिए और मैं चाहूंगा कि एन.आइ.टी. को एक प्रदेश में, खास तौर पर जो नॉर्थ इलाका है, जो हमारे कश्मीर का इलाका है, सबसे ज्यादा जहां पर लोग मिलिटेंसी में जा रहे हैं, जहां बेरोज़गारी अत्यधिक है, आप उस जगह को केंद्रित कीजिए। आप नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, कोहिमा आदि को केंद्रित कीजिए, आप केंद्रित कीजिए झारखण्ड को, आप केंद्रित कीजिए, ओडिशा को, आप केंद्रित कीजिए बिहार को। बिहार को आपने एक एन.आइ.टी. दिया है। लेकिन बिहार की आबादी दस करोड़ है। झारखण्ड से अलग होने के बाद बिहार का एजुकेशन ग्रोथ समाप्त हो चुका है। बिहार के एजुकेशन की स्थिति इतनी खराब है कि दुनिया में निम्नतम स्थिति बन गई है। मेरा आग्रह है कि आप बिहार में कम से कम दो और एन.आइ.टी. की व्यवस्था करें। आप जहां भी दें, जिस भी कोने में दीजिए, चाहे आप मगध में एक एन.आइ.टी. दें, चाहे कोसी, मिथिला या सीमांचल में एक एन.आइ.टी. दें। सामाजिक आधार पर सबसे ज्यादा पलायन कहां से हो रहा है? कोटा में सबसे ज्यादा विद्यार्थी कहां से जाते हैं? आप कोटा की स्थिति देखिएगा तो बिहार से 70 से 80 प्रतिशत बच्चे कोटा जाते हैं। मेरा आपसे आग्रह है कि एन.आइ.टी. की क्वालिटी और क्वांटिटी पर आप ध्यान दें। इनसे रोज़गार से कैसे जोड़ा जाए, ताकि हिंदुस्तान में उसकी गुणवत्ता हो? इस पर सबसे ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। इससे ज्यादा एन.आइ.टी. पर मेरी कोई राजनीति और बहस नहीं है। हम चाहेंगे कि विज्ञान और आध्यात्म के मिश्रण से आदर्श की स्थापना जब तक हमारे लोगों में नहीं होगा और हाई मोरल एजुकेशन की कल्पना आप नहीं करेंगे, तब तक विश्व गुरु या विश्व निर्माण की कल्पना या मानव निर्माण की कल्पना या सुंदर भारत की कल्पना हम नहीं कर सकते हैं। एन.आइ.टी. के माध्यम से यदि हम एक बेहतरीन वैज्ञानिक, आध्यात्मिकता के मिश्रण से व्यक्ति का निर्माण करते हैं तो हमारा देश भी मज़बूत होगा और निश्चित रूप से सामाजिक व्यवस्था भी बदलेगी। मेरा यही आग्रह है, इससे ज्यादा बोलने की आज कोई जरूरत नहीं है। मैं पुनः अगले विधेयक पर आपसे डिटेल में बात करूंगा। लेकिन मैं चाहूंगा कि आप क्वांटिटी और क्वालिटी पर ध्यान दें और रिसर्च पर ध्यान दें।

मेरा अंतिम बिंदु है कि भारत में रिसर्च की कल्पना नहीं है। पॉवर, ग्लैमर और मनी से एजुकेशन को बचाइए। बच्चों में ग्लैमर, पॉवर और मनी की जो भूख जाग गई है, वह सही नहीं है। जीवन जीने के

लिए मनी होनी चाहिए। पॉवर और ग्लैमर की जो भूख है, यह एजुकेशन को चौपट कर रही है। इसीलिए आज इंजिनियरों और टीचर्स की पूछ समाज से समाप्त हो गई है। कल तक एक इंजिनियर की रिस्पैक्ट होती थी, आज गांवों में हज़ारों इंजिनियर्स हैं, लेकिन उनको कोई पूछने को तैयार नहीं है। शिक्षक के घर में कोई शादी करने को तैयार नहीं है, कहता है कि मास्टर है, इसके घर में शादी करने के लिए कौन जाएगा। किसान की जो रिस्पैक्ट थी, वह घट गई है। किसान को भूल-चूक से भी कोई अपनी बेटी या बेटा नहीं देना चाहता है। देश की यह परिस्थिति बनी है, जिसमें आप कैसे इन चीज़ों को करेंगे, यह आवश्यक है, जिससे रिस्पैक्ट डेवल्प हो और उसकी महत्ता के साथ हिंदुस्तान की कल्पना की जा सके। यही मेरा अग्रह है।

श्री हुकुम सिंह (कैराना) : महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपका धन्यवाद। मैं बहुत संक्षेप में अपनी बात कहना चाहूँगा। जब चर्चा शुरू हुई तो सबसे पहले वक्ता ऐसे थे जो बहुत विद्वान भी हैं, उन्हें विदेश का अनुभव भी है और उन्होंने बहुत सुझाव भी दिए। उसके बाद में मेरा सौभाग्य रहा कि ऑनरेबल सुगत बोस साहब, जिनका अपना बहुत बड़ा अनुभव है। *It is always a pleasure to listen to him.* उनके सुझाव भी सुनने का मुझे मौका मिला। अन्य बहुत चर्चाएं हुईं। मैं सोच रहा था कि इतने अच्छे-अच्छे सुझाव हैं और इन्हीं लोगों को दस वर्ष तक यहाँ बैठने का अवसर मिला तो उन सुझावों के अनुरूप ये कार्रवाई कर क्यों नहीं पाए? कहीं न कहीं दिक्कत क्या है, जब हम सब जानते भी हैं, नॉलेज हमें उन बातों की है, हमारे पास अवसर भी है, अवसर मिलने के बाद में फिर पालन न हो पाए और उसके बाद में जब अवसर समाप्त हो जाए तो हम कमी निकालने लगे, यह हमारी समझ से बाहर की बात है।

मैं बहुत संक्षेप में केवल कुछ सुझाव देना चाहूँगा, क्योंकि आज मुझे विश्वास है कि जो माननीय मंत्री जी जिम्मेदारी संभाले हुए हैं, उनमें इच्छाशक्ति भी है और इच्छाशक्ति के साथ-साथ योग्यता भी है। मुझे विश्वास है कि यह अवसर जो उन्हें मिला है, हम निश्चित रूप से इस अवसर का सदुपयोग कर पाएंगे और फायदा उठा पाएंगे। हम चाहते हैं कि विश्व स्तर पर हमारी भी संस्थाएं जाएं। कारणों का पता लग गया है कि क्यों नहीं गई, उन कारणों को दूर कैसे किया जाए? हर तरह के सुझाव आए, लेकिन मैं एक सुझाव आपको देना चाहता हूँ। क्या कभी हमने उन संस्थाओं को यह अवसर दिया कि उनके सामने क्या-क्या कठिनाई आ रही हैं? सम्भवतः वह गैप ऑफ कम्युनिकेशन हमारा हमेशा बना रहता है। हम अपने विचार रखते हैं, सोचते हैं, प्लानिंग करते रहते हैं, लेकिन कभी भी हम उन्हें यह मौका नहीं देते कि जिन संस्थाओं को हम उठाना चाहते हैं और वे उठ नहीं पा रही हैं तो उनके सामने क्या दिक्कत है। उनके पास में रिसर्च का पूरा इंफ्रास्ट्रक्चर है या नहीं है और अगर नहीं है तो कहाँ से वह पूरा होगा। क्या उनके पास पूरी मैन पावर है या नहीं है और नहीं है तो कहाँ से पूरा होगा। आप जिस संस्था के लिए आज यह विधेयक लाए हैं, उस संस्था की भी दिक्कतें सामने आई कि वे कैम्पस में काम कर रहे हैं, कैम्प में काम कर रहे हैं, उनके पास प्रॉपर बिल्डिंग तक भी नहीं है। अगर किसी के पास प्रॉपर बिल्डिंग तक भी नहीं होगी, वहाँ की प्रयोगशाला के पास बिल्डिंग नहीं होगी तो रिसर्च कहाँ से हो जाएगी। इसलिए माननीय मंत्री जी मेरा एक सुझाव है और मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि भले ही मेरा उतना बड़ा अनुभव न हो और भले ही मैंने विदेशों में शिक्षा न पाई हो, क्योंकि मैं तो एक बहुत साधारण गाँव के स्कूल में पढ़कर आया हूँ। मुझे यह अनुभव हुआ कि जो मेरा अपना जनपद है, उसमें न तो कोई गवर्नमेंट का इंजीनियरिंग कॉलेज है, न कोई आई.आई.टी. है, लेकिन मुझे यह कहते हुए गर्व है कि *we have produced the largest number of*

engineers from that district और वे हमारे उत्तर प्रदेश में चीफ इंजीनियर से लेकर नीचे तक डोमिनेट कर रहे हैं। वहाँ सुविधा नहीं है, लेकिन इच्छाशक्ति थी, वे बाहर गए और वहाँ जाकर पढ़े। ऐसे हमारे जो नौजवान थे, जिनको यहाँ सुविधा मिली, वे पढ़े, बाहर गए, वह यह जाहिर करता है, यह सबूत देता है कि उनमें प्रतिभा है, आई.क्यू. है, लेकिन उस प्रतिभा का हम सही इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं। इस्तेमाल इसलिए नहीं कर पा रहे हैं, वह जो मैंने कहा कि कहीं न कहीं गैप ऑफ कम्युनिकेशन हमारे यहाँ है।

मैं आपको एक मिसाल देता हूँ। मैं बहुत कम समय लूँगा। एक इन्टर कॉलेज में मैं देखने के लिए गया, वह कमेटी का इन्टर कॉलेज था, मैंने देखा कि जो प्रिन्सिपल का ऑफिस है, वहाँ पानी टपक रहा है। मैंने उनसे पूछा कि प्रिन्सिपल साहब आपके स्कूल की हालत क्या होगी, जब आपका ऑफिस ही टपक रहा है तो उन्होंने कहा कि पिछले दो साल से यहाँ प्रशासक बैठा हुआ था और प्रशासक को केवल इतनी ही पावर है कि हमारी तनखाह दे दे और उसके बाद में मेन्टिनेंस का एक पैसा नहीं मिलता। अगर किसी ने जाकर के उनकी व्यथा सुनी होती, यह दिक्कत सुनी होती तो दो साल पहले ही उसका समाधान हो गया होता और वही स्थिति मैं बता रहा हूँ। हमारा इलाहाबाद विश्वविद्यालय है, उसका कितना बड़ा नाम था, आज तो वह सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी है। क्या आपके लिए यह सम्भव है कि आप एक वर्ष का पाँच संस्थाओं का अपना टारगेट फिक्स करें, लक्ष्य फिक्स कर लें कि मैं इन पाँच संस्थाओं को एक वर्ष के अन्दर विश्व स्तर पर ले जाकर रहूँगा। उनसे बात भी करूँगा, जो सुविधा उन्हें चाहिए वह सुविधा भी उनको दूँगा और कहीं फैसेलिटी की जरूरत है तो फैसेलिटी भी क्रिएट करूँगा। आप सबको विश्व स्तर पर नहीं ले जा सकते हैं। मेरे ख्याल से कभी भी हमारे यहाँ न तो यह परम्परा बन पाई है, न प्रक्रिया बन पाई है कि हम फेस टू फेस बैठकर किसी से बात कर सकते हैं। ठीक है वाइस चांसलर का सम्मेलन होता है, लेकिन वह औपचारिक है, फार्मेलिटी है, कितना समय उनको मिलता है कहने के लिए और कितना समय आपको समझने के लिए मिलता है। फेस टू फेस बात कीजिए और पूरे देश की पाँच संस्थाओं को आप चुन लीजिए, देश के विभिन्न कोनों से चुन लीजिए और यह जानने की कोशिश करें कि वहाँ क्या कमी है। आपको पता चलेगा कि जिन संस्थाओं की मैं समीक्षा कर रहा हूँ, उन संस्थाओं में अध्यापक भी पूरे नहीं हैं। आपको यह भी पता चलेगा कि वाइस चांसलर जो बनकर के आए, उनका कोई एजुकेशनल बैकग्राउंड भी नहीं है। कोई पुलिस के पद से रिटायर होता है और जाकर वाइस चांसलर बन जाता है। शिक्षा का उसका कोई बैकग्राउंड नहीं है, कोई पृष्ठभूमि नहीं है। आपके सामने जानकारी आएगी तो आपको भी लगेगा कि हाँ, इसमें कमी है और यह कमी दूर होनी चाहिए। आपको लगेगा कि इस संस्था में वेतन नहीं मिल पा रहा है। कितने दिन से वेतन

नहीं मिल पा रहा है, बिल्डिंग की मेनटेनेंस नहीं हो पा रही है, बच्चों के लिए वहाँ पर कोई आकर्षण नहीं है। जो छात्रावास बने हुए हैं, वे भी अच्छे नहीं हैं। अगर आप इसकी तह तक चले जाएँगे तो देखिए कि कितने जोश के साथ वहाँ का मैनेजमेंट चलता है और कितने जोश के साथ जाकर वे लोग काम करते हैं। मुझे विश्वास है कि आपके सफल नेतृत्व में आप और आपके दोनों मंत्री मिलकर काम करेंगे। माननीय मोदी जी का आशीर्वाद आपको मिला हुआ है, और निश्चित रूप से आप इस देश के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं और बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। शायद अगली बार जब हम मिलेंगे तो हम आपको पुनः बधाई देंगे कि जो वायदा आपने किया था, उस वायदे को आपने पूरा करके दिखाया।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं आपको बधाई देते हुए, इस विधेयक का पूर्ण समर्थन करते हुए, अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

HON. DEPUTY SPEAKER: Now, Shri Adhir Ranjan Chowdhury.

... (*Interruptions*)

SHRI K.C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): Sir, the Business Advisory Committee has already allotted two hours for this Bill. There is another Bill also, which is listed in Today's List of Business. Many hon. Members are prepared to speak on that Bill also. So, we would like to know whether the Government is going to pass this Bill today.

HON. DEPUTY SPEAKER: Even though we have allotted two hours, there are still some Members to speak on this Bill. First, let the list of speakers be exhausted.

SHRI K.C. VENUGOPAL: That is good. But we would like to know, as to what is the plan of the Government. Are they going to pass this Bill today? At what time are they going to take up the IIT Bill? That is what we would like to know.

HON. DEPUTY SPEAKER: Venugopalji, let the Members speak on this Bill. There are three-four Members yet to speak on this Bill. Let them complete. Then, we would see.

SHRI K.C. VENUGOPAL: That is the request ... *

HON. DEPUTY SPEAKER: No, no. That is not the thing. Do not cast aspersion...

* I am openly telling, that is ... * left to the House. Even now, if you want to take up the next Bill, I have no objection. But when I have still some Members in the list who are yet to speak, how can I bypass it without giving chance to those Members to speak?

SHRI K.C. VENUGOPAL: We would like to know whether this Bill is getting passed today or not.

HON. DEPUTY SPEAKER: That I do not know.

SHRI K.C. VENUGOPAL: That has to be clarified by the Government.

* Not recorded.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI S.S. AHLUWALIA): About the IIT Bill, may be, we will take it up tomorrow.

SHRI K.C. VENUGOPAL: At what time, Sir?

SHRI S.S. AHLUWALIA: It may be after the Question Hour or Zero Hour.

SHRI K.C. VENUGOPAL : Okay.

HON. DEPUTY-SPEAKER: Now, Shri Adhir Ranjan Chowdhury.

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY (BAHARAMPUR): Hon. Deputy-Speaker, Sir, I rise to support this legislation wholeheartedly, which has been brought forward by the hon. Minister, Shri Javadekarji.

In his initiation, the hon. Minister had exhorted very nicely that we should grow our children with a virtue of inquisitiveness. I strongly support the view expressed by our hon. Minister.

Sir, here, I would like to draw the attention of the House that the Gross Enrolment Ratio is considered as a parameter of growth in education. Mr. Minister, insofar as the GER is concerned, what is the present status of Gross Enrolment Ratio and what is your target? So far as my knowledge goes, now, it is 18 per cent; and you are trying to reach to 30 per cent.

I have also come to learn that RUSA, namely, Rashtriya Uchchatar Shiksha Abhiyan, is aimed to increase the Enrolment Ratio in higher education. On behalf of RUSA, Rs. 4,000 crore was sought after. But how much have you allotted to this RUSA scheme? Also, how much fund was sought after by the UGC and how much allocation was made by you? On each and every aspect, you have been mercilessly slashing the funds that were sought for.

On the one hand you are loudly talking about the ambition of this Government but on the other hand to achieve this, the requisite fund is not being provided. So, it is an eloquent testimony of the dichotomy being persuaded by your Government.

Sir, I had brought forward one amendment and that this why, I got this opportunity to speak for a few minutes as the Minister was condescend enough to allow me to speak. Hon. Minister, so far as NIT is concerned, the projected demand was Rs. 3,000 crore, Rs. 2,000 crore for old institutions and Rs. 1,000 crore for new institutions. But here also you have slashed the funds to the tune of Rs. 1,444.90 crore. So, it is further evident that you are not serious enough in spite of no dearth of rhetoric.

So far as our problem in education is concerned, everybody here pointed out that there is a severe shortage of faculty. The sanctioned posts in various Central universities are 16,600 – 2,376 posts of Professor, 4,708 posts of Associate Professor and 9,521 posts of Assistant Professor. Out of which, 5,928 teaching posts are vacant. Around 1,277 posts of Professor and 2,173 posts of Associate Professor and 2478 Assistant Professor are vacant. So, this is seriously affecting the quality of our education. If the students, who are supposed to be taught, do not have the facility of faculty, then how can we imagine educating our students as we desire? Only six per cent our population between the age of 16 to 23 used to obtain the higher education in spite of the fact that we have developed a lot. In 1950, we did not have so many institutions. Since 1950, we have been able to increase the number our universities by 34 per cent. We have also increased the number of our colleges from 500 to more than 40,000. As my esteemed colleague Shashi Tharoorji has pointed out, still we are spending only 1.12 per cent of our GDP, on higher education however, our Parliamentary Panel on Higher Education has proposed to increase it to 1.5 per cent of the GDP.

We also need that our syllabus should be upgraded. I would also suggest you to explore a symbiotic relation between the production of our engineer or our MBA and their placement in various jobs. About 93 per cent of our Management Bachelors are jobless and 80 per cent of our engineers are jobless. Even 16,000 engineers are jobless in the model State of Gujarat.

Hon. Minister, I know that you are exhausting all your resources in order to develop these institutions that have been entrusted upon you. You should remember that India still has failed to achieve the rank in the top 250 educational institutions in the world. So, if you want to turn our country into a global educational hub, you have to infuse more fund; you have to infuse more energy and innovation in this sector.

I am hailing from a backward district from West Bengal. That district is Murshidabad which is recognised as a district of highest concentration of Muslim

population in our country. The highest concentration of Muslim population in our country is in my district Murshidabad. There is a technological college - Murshidabad Institute of Technology. I would urge upon the hon. Minister that at least the Institute that is situated in Murshidabad should be upgraded as a National Institute of Technology in view of the fact that the largest concentration of Muslim population belongs to that district. I hope that the hon. Minister certainly will look into and consider my proposal sincerely. Tomorrow again, we will be meeting. मंत्री जी का नाम प्रकाश जावड़ेकर, सारा हाउस आपकी जय-जयकार करता है, संघ परिवार आपकी जय-जयकार करता है, लेकिन मैं आपको सलाह देता हूँ - Do not saffronise the educational institutions in our country. Thank you.

डॉ. किरिट पी. सोलंकी (अहमदाबाद) : उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे आंध्र प्रदेश में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलाजी की स्थापना के बारे में बोलने का अवसर दिया है, मैं आपका हृदय से बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ। मैं हमारी सरकार और हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी का बहुत आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने कैबिनेट की बैठक में इस इंस्टीट्यूट की स्थापना के लिए निर्णय किया और इसकी वजह से आज यह बिल सदन में प्रस्तुत हुआ। मैं सदन में इस बिल के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हूँ। मुझे इस बात की खुशी है कि सदन में सभी दल के सदस्यों ने इसका समर्थन किया है। हमारे मानव संसाधन मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर जी का भी मैं बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूँ कि वे इस सदन में इस बिल को लेकर आए हैं।

अभी-अभी गुरु पूर्णिमा का अवसर गया है। मैं इस सदन को आपके माध्यम से अवगत कराना चाहता हूँ कि परसों गुरु पूर्णिमा हुई और हमारे मंत्री जी ने दोनों सदनों के शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हुए जो लोग थे, प्रोफेसर्स थे, आचार्य थे, उन सबको बुलाकर गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया। इसमें भेंट स्वरूप तुलसी का पौधा देकर सबको सम्मानित किया गया। मैं समझता हूँ कि यह बहुत बड़ी बात है। शिक्षकों को, प्रोफेसर्स को जो वंदन करने की बात है, उनको जो एक सम्मान देने की बात है, वह इस सरकार के नजरिए में दिखती है। मैं भी इसमें सम्मिलित था, तो मैं इसके लिए जावड़ेकर जी का बहुत आभार व्यक्त करता हूँ।

भारत देश की अगर परम्परा देखें, तो एक जमाना था जब शिक्षा के क्षेत्र में अलग-अलग देशों से लोग भारत में पढ़ने को आते थे, नालन्दा में आते थे, तक्षशिला विद्यालय में आते थे। ये विद्यालय इतने गरिमापूर्ण थे कि पूरे विश्व के अलग-अलग देशों से लोग भारत में पढ़ने के लिए आते थे। मैं इस सदन को बताना चाहता हूँ कि इस देश में विश्व गुरु की क्षमता थी और समग्र विश्व को इस देश के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी और शिक्षा किसी एक क्षेत्र में नहीं दी जाती थी, शिक्षा अलग-अलग क्षेत्रों में दी जाती थी और पूरे विश्व में भारत की बात बहुत ही आगे होती थी। मुझे इसका गर्व है। आज कम्पीटिशन के जमाने में विश्व के फलक पर भारत कम्पीट कर रहा है। हमारे यहां कई बड़े-बड़े इंस्टीट्यूट्स बने हैं। मैं अहमदाबाद से आता हूँ। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ अहमदाबाद का पूरे विश्व में एक रिकगनिशन है। यहां ऐसी संस्थाएं हैं। लेकिन दुर्भाग्य से मुझे यह भी बोलना पड़ता है कि भारत के आजाद होने के बाद हमारे पास बहुत अवसर थे, लेकिन हमें शिक्षा में जिस तेजी से आगे जाना चाहिए, हम उस तेजी और रफ्तार से आगे नहीं गए। नरेन्द्र भाई मोदी जी की सरकार आने के बाद जिस तरह यह निर्णय लिया गया है, मैं समझता हूँ कि आने वाले समय में यह सरकार शिक्षा को बहुत प्रधानता देगी।

जहां तक हमारे छात्रों का सवाल है, भारत के छात्र हर क्षेत्र में निपुण होते हैं। मैं आपको अपने मेडिकल का उदाहरण देना चाहूंगा। यहां डाक्टर की पढ़ाई करके छात्र विदेश जाते हैं। वहां भारतीय डाक्टरों को बहुत ऊंचे नजरिए से देखा जाता है। जहां तक क्लिनिकल इक्विपमेंट्स का सवाल है, इसका मतलब हिस्ट्री, डॉयग्नोसिस और फिज़िकल ऐग्ज़ाम के जरिए, यानी भारतीय डाक्टर इसमें पूरे विश्व में अब्बल होते हैं। यही भारतीय छात्रों की पहचान है। अगर इंजीनियरिंग छात्रों को देखें, यहां उन्हें कोई अवसर नहीं मिलता था। जब उन्हें विदेश में जाकर अवसर मिला तो उन्होंने नोबल प्राइज़ भी हासिल किया है। मेरा कहने का मतलब है कि भारतीय छात्र और छात्राओं में भरपूर पोटेंशिएलिटी होती है। इसीलिए भारत के छात्र बहुत तेजस्वी भी हैं। अगर उन्हें ऐसे अवसर अपने देश में मिलें तो वे यहां भी नाम कमा सकते हैं।

आज इसरो का उदाहरण देखिए। जिस तरह इसरो संस्था कार्य कर रही है, भारतीय वैज्ञानिक जिस तरह इसरो का नाम रोशन कर रहे हैं, मैं समझता हूं कि अगर उन्हें और हौसला मिले, अगर सरकार की तरफ से बैकिंग मिले तो वे पूरे विश्व में भारत का नाम रोशन कर सकते हैं, खुद की अलग पहचान बना सकते हैं। इसलिए मैं मंत्री जी से विनती करता हूं कि हमें यहां ऐसी सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए। हमारे छात्र विद्या का धन हैं जो विदेश में चला जाता है। वह अपने देश में रहे। अगर उन्हें अवसर प्राप्त होता है तो निश्चित रूप से वे अपने-अपने क्षेत्रों में नाम कमा सकते हैं।

जहां तक क्वालिटी एजुकेशन का सवाल है, आप एनआईटी की स्थापना करने जा रहे हैं, आने वाले दिनों में अलग-अलग इंस्टीट्यूट्स की स्थापना करने जा रहे हैं। मेरा आपसे निवेदन है कि हमारा सलेबस, कोर्स, पढ़ाने का पैटर्न **should be of an international standard**. मैं यह नहीं कहता कि हमें पश्चिमी जगत से सिर्फ लेना है। आप हमारा अलग-अलग आर्कियोलॉजिकल स्ट्रक्चर देखेंगे, तो भारत के लोगों के पास काफी भंडार था। मैं विनती करता हूं कि हमारे सलेबस में भारतीयकरण को भी जोड़ा जाए। इस मिट्टी से जुड़े हुए लोगों की बात को भी जोड़ा जाए, तो वह सही मायने में एक अच्छा इंजीनियर, अच्छा टैक्नीकल व्यक्ति, अच्छा साइंटिस्ट बनेगा। उसमें भारत माता की सुगन्ध आएगी। इस तरह हमारे कोर्स का आयोजन करना चाहिए।

किसी भी इंस्टीट्यूट की आत्मा रिसर्च होती है, संशोधन होती है, शोध होती है। इसलिए मैं मंत्री जी से विनती करता हूं कि हमारे जो फ़ैकल्टीज़ आते हैं, प्रोफ़ेसर्स आते हैं, उनके लिए रिसर्च, शोध और संशोधन करना कम्पलसरी होना चाहिए। मैं निश्चित रूप से आपको कहना चाहता हूं कि आने वाले समय में हर इंस्टीट्यूट अपनी एक अलग पहचान बनाएगी। आप इंस्टीट्यूट की स्थापना करने जा रहे हैं, मैं उपाध्यक्ष जी के माध्यम से मंत्री जी से विनती करना चाहता हूं कि गरीब तबका खासकर अनुसूचित जाति

और अनुसूचित जनजाति के लोगों को शिक्षा में जोड़ा जाए, महंगी फीस की वजह से वे लोग तकनीकी एजुकेशन आर्ट ऑफ इंस्टीट्यूट में दाखिला नहीं ले पाते।

हमें ऐसा मैक्निज्म डेवलप करना चाहिए जिससे सरकार उनको फीस स्ट्रक्चर के बारे में उनको कोई मदद कर सकती है तो उसे करे। बैंको से निःशुल्क यानि बिना इंटेस्ट के लोन की व्यवस्था करें तो वे लोग अपने आप को क्वालिफाई कर सकेंगे। उन लोगों में भरपूर क्षमता होती है लेकिन उनको अवसर प्रदान नहीं होता है, उनको अवसर प्रदान न होने की वजह से वे लोग आगे नहीं जा पाते हैं।

आजकल शिक्षा में रैगिंग जैसी स्थिति हम देखते हैं। समय-समय में वर्तमान समाचार पत्रों में इसकी चर्चा होती है तो बहुत पीड़ा होती है। हमारे युवा छात्र इसकी वजह से बहुत मेंटल टेंशन बढ़ता है जिससे वे कभी-कभी सुसाइड तक भी करते हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं हम शिक्षा के इंस्टीट्यूट स्थापित करने जा रहे हैं, हमें इस बात पर भी गौर करना चाहिए ताकि विद्यार्थियों के ऊपर मेंटल टेंशन का एटमोस्फेयर पैदा न हो। आपने मुझे इस महत्वपूर्ण बिन पर अपने विचार रखने का अवसर इसलिए आपका हृदय से धन्यवाद।

SHRI N.K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Thank you Mr. Deputy Speaker, Sir, for giving me this opportunity to express my views on the Bill, that is, The National Institutes of Technology, Science Education and Research (Amendment) Bill, 2016.

Sir, at the beginning of the debate itself I have made a suggestion that another Bill which is pending before this House is very similar and identical. It is regarding institution or commencement of six IITs plus one IIT, total, seven IITs to be declared as institutions of national importance. That is another Bill. This is also more or less same because this is a National Institute of Technology, Science Education and Research (Amendment) Bill, and the other one is Indian Institutes of Technology Bill. So, these two Bills could be discussed together so as to save the time of this august House.

I would urge upon the Parliamentary Affairs Minister to please see the time of the House because yesterday also for the Indian Trusts (Amendment) Bill, you had allotted two hours for that Bill and we could pass that Bill very well, within 2-3 minutes, because it was passed by the Rajya Sabha. So many other vital issues are pending. Even we are not getting sufficient time to present Matters under Rule 377 before the House because there is no time. But unfortunately, a lot of time—I am not saying it is being wasted—can be very well utilized for other subjects also. No Calling Attention is being allowed. No other Discussion under Rule 193 is being allowed. So, let the Parliamentary Affairs Minister be very serious about the allocation of time for the discussion on the Bills so that we will get an opportunity to submit more issues which are vital for the House.

HON. DEPUTY SPEAKER: Mr. Premachandran, this was discussed in the Business Advisory Committee. In that Committee, we decided to allocate two hours for this Bill and another two hours for that Bill. It was decided there. That is the decision of the Business Advisory Committee and that was also adopted by the House. Therefore, it is not necessary to go into that.

THE MINISTER OF CHEMICALS AND FERTILIZERS AND MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI ANANTHKUMAR): My dear friend, Mr. Premachandran is a very senior Member of the House. I think he knows and appreciates, as you rightly said, Sir, that the business is not allocated by the Parliamentary Affairs Minister. The Business is allocated by the BAC. Whatever other Businesses like Matters under Rule 377 or Calling Attention matter or Discussion under Rule 193—all these things are given and approved by the hon. Chairperson of BAC, who is the Speaker of the House.

There was also a demand from all the leaders in the all-parties meeting that there should be a balance between the Government Business and the Business of the House. Therefore, we will facilitate that. But the onus is directly on BAC. BAC has allocated the time and we are proceeding accordingly.... (*Interruptions*)

SHRI K.C. VENUGOPAL : BAC has allocated two hours' time for discussion on this Bill. ... (*Interruptions*)

SHRI MALLIKARJUN KHARGE (GULBARGA): Sir, the only thing is that they do not have Business. ... (*Interruptions*) Sir, you tell us heartily, I will accept it. ... (*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: No, it is not so.

... (*Interruptions*)

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: When everybody wanted to discuss the MCI Bill, they said that it should be passed today only. There is no time. But what has happened today? Today, you have got two Bills.... (*Interruptions*)

SHRI ANANTHKUMAR: We are ready for it. We have listed both the Bills. There are enough Bills that are pending.... (*Interruptions*)

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: They do not have any Business. That is why, they want to give it more time. Shri Premachandran can also speak as much as he wants. They will allow him. They are very liberal.... (*Interruptions*)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर (हमीरपुर): उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय श्री मल्लिकार्जुन खड्गे साहब से कहना चाहता हूँ कि उनकी पार्टी के सदस्य भी बीएसी में थे और उन्होंने ही इस बिल के लिए जितना समय दिया गया है, उस पर सहमति व्यक्त की थी। आप अपने रिप्रजेंटेटिव से पूछिए। ... (व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड्गे : पहले आप अपनी जगह पर जाइए और वहां से बोलिए।

श्री अनुराग सिंह ठाकुर: जब मुझे उपाध्यक्ष बोलेंगे, तब मैं जाऊंगा। आप मुझे डायरेक्ट नहीं कर सकते कि मैं अपनी जगह पर जाऊँ। ... (व्यवधान)

SHRI MALLIKARJUN KHARGE : Yes, I can point it out. When the Rule is there, I can point it out. If the Rule is not there, I cannot point out. ...
(Interruptions)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर: अभी इस सेशन का पहला सप्ताह ही तो चल रहा है। ... (व्यवधान)

SHRI MALLIKARJUN KHARGE : Sir, you know what happens in BAC. Whatever we say in BAC, they take it as a suggestion. They alter it as they want. They alter even subjects, Calling Attention, Adjournment Motions under Rule 56 and other things.

Hon. Deputy-Speaker, Sir, have you heard any Short Notice Question coming for discussion? Not a single one has come up. You yourself are an expert in that. Many a time you have put questions through that. It has not come only in this Session but in earlier sessions also it has not come. ... (Interruptions)
Anyway, we will cooperate with them. We are ready to do it. That is a different thing. But you should agree that you have ample time but no business....
(Interruptions)

HON. DEPUTY SPEAKER: The hon. Minister for Parliamentary Affairs has already assured that he is ready to take up any other Business also like Discussion Under Rule 193, Calling Attention or whatever. Whatever your request is, it will be considered and discussed once again in BAC and it can be taken up.

Shri Premachandran, please continue.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : Thank you, Deputy-Speaker, Sir. I am also thankful to the hon. Minister for giving me an opportunity to speak on the

National Institutes of Technology, Science Education and Research (Amendment) Bill, 2016.

Sir, we are all bound by BAC but I would like to say only one point. ... *(Interruptions)* I am not a Member of BAC. The House is bound by the BAC decision. I fully agree with it. ... *(Interruptions)*

HON. DEPUTY SPEAKER: Please speak only about the Bill.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : I am coming to the Bill.

The amendment to the present Bill is with the purpose to amend the National Institutes of Technology, Science Education and Research Act, 2007 so as to commence a National Institute of Technology in Andhra Pradesh due to the bifurcation of the State of Andhra Pradesh into Telangana and Andhra Pradesh.

Sir, the first point which I would like to make is that the National Institute of Technology was established by virtue of an enactment of Parliament and it started in the year 2007. The Institute of Technology Act was enacted by Parliament in the year 1961. So, what is the difference between the National Institute of Technology, Science Education and Research and the Institute of Technology and the Indian Institute of Technology? We are having multiplicity of organisations and academic councils and we are passing so many legislations.

According to my information and belief, syllabus and curriculum as well as level of standard is more or less same in respect of the National Institute of Technology and the Indian Institute of Technology. These centres have to be made as centres of excellence in professional education especially the technical education. These should be declared as centres of excellence.

Coming to the point of National Institute of Technology, I do agree with the Government that this new institute is being given to the State of Andhra Pradesh. Their emotions and genuine demand have been accepted by the Government. I fully agree with the Bill and there is nothing controversial in respect of this Bill.

18.00 hours

Coming to the issue of IIT, Sir, I am thankful to the Government for commencing an IIT in the Palakkad District of Kerala.

HON. DEPUTY SPEAKER: Please stop for a minute.

Now, it is 6 o'clock. If the House decides, we can extend the time of the House by one hour. If the House agrees, the discussion may continue and the Bill may be passed.

If the hon. Members want, after the discussion, the Minister may reply and we may pass the Bill. Therefore, we can extend. Otherwise, we will take it up tomorrow.

SHRI S.S. AHLUWALIA: Sir, let us pass the Bill today. Hon. Minister will give reply and the Bill may be passed.

HON. DEPUTY SPEAKER: Hon. Members may say what they want. If you want one hour extension, we may do it.

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

PROF. SUGATA BOSE (JADAVPUR): Mr. Deputy Speaker, Sir, we have had adequate discussion. I do not know how many speakers are left on your list, but if we can do this efficiently, it would be best to get this Bill passed today so that we can take up the IIT Bill tomorrow.

HON. DEPUTY SPEAKER: Okay. We extend the time of the House by one hour or till the Bill is passed.

Shri Premachandran, you continue now.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN: Sir, we are thankful to the Government for having commenced an IIT in the State of Kerala. It was a long-pending dream of the people of Kerala to have an IIT in the State. We are thankful not only to this Government but also to the then Government which had tried its level best to commence an IIT in the State of Kerala. There was a big contradiction that a State, which is having 100 per cent literacy and is highly educated, did not have an IIT.

Now, that contradiction has been resolved for which also I am thankful to the Government.

Sir, now I come to the objectives of the IITs and NITs. What are the main objectives of these enactments? According to me, our forefathers, even the Nehruvians, thought of starting in the sixties the IITs with an object. The IITs were created by way of a statute passed by Parliament. The establishment of IITs is given a statutory backing by means of a legislation. This means that it is a very important institution of national importance. The significance of an IIT or an NIT is that these are centres of excellence.

I think, there are three aims with which these highly esteemed institutions were established. The first aim was to bring out brilliant professionals in our country. Pandit Jawaharlal Nehru at that time had stated that 'they will be the architects of our modern India' so that we produce brilliant professionals in the professional education who would be brought out through these centres of excellence. The second aim was to improve the quality of higher education in the country so that it would act as an encouragement to other engineering colleges and technology institutes as a result of which the academic standard and standard of education in other institutions will also rise.

Sir, the third aim is very important, but unfortunately, it is being ignored now-a-days. It was to ensure that poor and common people get an opportunity to have quality education in these centres of excellence. The third very important aim of commencing these high level institutions is that the poor and common people of the country should have access to quality education either in IITs or in NITs. These institutions were started with a long-term perspective thinking that professional education imparted in these IITs will be the better way to improve quality of our education.

Sir, even after 55 years of establishment of IITs and ten years of establishment of NITs, have we been able to achieve the goals enunciated in the Act of 1961 or in the Act of 2007? Some time back, Dr. Shashi Tharoor had

pointed out about the global standards and the statistics of higher education. We are not even able to become one among the first 200 colleges of international standard in the world. That is the situation even after 55 years of IITs and ten years of NITs. We are not able to have a single college which will cope up with and have the global or international standards in education. So, we have to review the position of our higher education.

The biggest challenge of Indian education is quality education, particularly, in the field of higher education. Former speakers, Dr. Shashi Tharoor and Prof. Sugata Bose, eminent personalities having international exposure have also expressed their concern in respect of the quality of education prevailing in our country. On this issue, we should rise above politics and join together to have a concerted effort to improve the quality of higher education in our country. But unfortunately, narrow partisan party politics is a hurdle to achieve this objective.

Sir, I will cite recent examples or recent experiences. Firstly, I would like to mention regarding the National Eligibility Test (NET). The University Grants Commission (UGC) has stipulated a mandatory condition that in order to get the appointment of Assistant Professors in universities and colleges the essential required qualification was stipulated as NET and that is a standard test that is prevalent in our country during the last decade. It is a good test, which is well-accepted throughout the country. It is a standard certification, and it was considered as a major step towards bringing quality in the field of teaching and research. But it is now learnt that UGC is going to dilute this standard certification with a new change where a candidate is qualified if he has a Ph.D qualification and two articles or two papers published in papers. According to me, this is dilution of higher education as quality of education is being compromised, which should never be allowed. This is being done on the ground that they are not getting sufficient qualified teachers of NET for thousands and thousands of vacancies of Assistant Professors and Lecturers that are there in the universities and colleges, so they are diluting it. This is not a genuine ground for diluting the NET

qualification or the Assistant Professor qualification. So, kindly review this decision.

As regards faculty, the quality of education is directly related to the faculty. If the faculty is not well-qualified and if there is no sufficient faculty to discharge higher education, then there is no meaning in starting higher educational institutions like NIT and IIT. So, the faculty qualification should be strict; NET qualification should be followed; and it should never be diluted. This is the first point that I would like to make before the hon. Minister.

The second point is regarding the T. S. R. Subramanian Committee Report on Education Policy. We have heard about the T. S. R. Subramanian Committee Report on Education Policy that a Committee was appointed to make a draft document on education policy. I would like to know this from the hon. Minister. What is the fate of this Report? It is being learnt from media / press reports that on 27 May 2016 Shri T. S. R. Subramanian has submitted the 250-page Report to the Government. So far, the Government has not brought the document into the public domain whereas unverified versions of this T. S. R. Subramanian Committee recommendations have already come out in the Press. The then Minister, Shrimati Smriti Irani, has said that these are only recommendations and no policy document has been submitted by Shri T. S. R. Subramanian. So, it was said that they will entrust some other agency so as to make a draft document and that draft document will be brought in the public domain for a discussion to have an education policy.

I would like to know the factual position of the T. S. R. Subramanian Committee Report. Is the Government pursuing that Report? What is the opinion of the Government regarding the T. S. R. Subramanian Committee Report? I am asking this because quality of education is the biggest challenge that the country is facing in this era.

I am now coming to the third point regarding higher education. It is a big danger, which is going to happen, that is, the marginalised section of society is being denied best quality education because the corporate and private agencies are

now concentrating on higher education, especially, medical education, engineering education, technical education, business management, etc. Actually, the corporate entities are concentrating on higher education in almost all the sectors. As I have cited the day before yesterday, it is a lucrative business. Higher education is a very lucrative business. It is the best business which is available in our country. What happens to the school education in our country? The public education system has lost its significance because there is mushroom growth of unaided private institutions throughout the villages and towns, and the resulting effect is that poor students, common people, downtrodden people and marginalised sections of society are not getting good education, and the public education system itself is in a peril. The significance is lost. These private unaided educational institutions are growing like anything. That will be resulting in denial of education to the poor people of our country.

HON. DEPUTY SPEAKER: They have already made 25 per cent reservation to take care of that aspect. For the self-financing or private institutions, it is mandatory for them. They have to give 25 per cent of seats free to meritorious students. There is a provision. What you are pointing out is also correct, but there is also a provision.

SHRI P.K. BIJU (ALATHUR): They are charging lakhs of rupees. If you want to get reservation in private educational institutions, you have to pay that much fee. They have fixed that amount.

HON. DEPUTY SPEAKER: That is free and they cannot charge anything.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN: That also depends on the State legislation.

HON. DEPUTY SPEAKER: What you said is correct that because of privatization, charges or fees is very high, and only highly influential people or well-to-do people are going to those institutions. That is a fact and it is correct. But at the same time, there is a provision that these schools have to provide for 25 per cent reservation. That mandate is there. However, I do not know how they are implementing it.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : Sir, comparing it with the fee structure which is prevailing, even after this 25 per cent reservation, poor people are not able to go there because the system is entirely different. The private unaided educational system is different. My point is that the same is going to happen in higher educational system also. So, please be very careful. My point is the State shall never withdraw from the higher education. In these IITs and NITs, common people and poor people should also get an opportunity to have the best system of education, which is prevailing in our country.

Sir, considering the recent fee hike in IITs, it is also adversely affecting the common man. The recent fee hike in IITs is an abnormal fee hike. The last fee hike was from Rs. 50,000 to Rs. 90,000. Now, it is enhanced to Rs. 2 lakh per annum per student, that is, 120 per cent of increase in the fees. This can never be justified. This is against the concept of the IITs and the National Institutes of Technology. What will be the resulting effect? The resulting effect will be that the National Institute of Technology and the Indian Institute of Technology, the premier educational institutions in the country will also be reserved or will also be available only for the rich class of society. That will be the resulting effect of hike in the fees. I do agree that those who are having the income below one lakh of rupees, there is some concession. For SC/ST students, there is a concession. However, even the common, middle-class people will be suffering. Suppose a Non-Gazetted Officer, who is serving either in the State service or in the Central service, he will be earning above Rs. 1 lakh. Almost all the middle-class people will be earning above Rs. 1 lakh. So, a student from the middle-class has to pay Rs. 2 lakh per annum means it is unaffordable, and it is unjustifiable. I would urge upon the Government to review the unreasonable and unjust fee hike, which was enhanced recently.

The other point, which I have already cited, is the statutory recognition to all these institutions. I am concluding. The statutory recognition given to these institutes...

SHRI ANANTHKUMAR: Sir, my dear friend, Shri Premachandran, said that two hours was sufficient for this NIT Bill and we have taken four hours. We should have passed the Bill by now. Therefore, I was just calculating the time taken. If we had taken only two hours or 120 minutes, my dear friend, Shri Premachandran's Party or he himself would have got three minutes. If we had debated the whole thing for four hours, he should have taken six minutes. I am just putting the timer that he has taken 31 minutes. Therefore, when one party member takes 31 minutes and asks the ruling party and the Treasury Benches to conclude within two hours or four hours... *(Interruptions)*

SHRI K.C. VENUGOPAL: That is because of you only. ... *(Interruptions)*

SHRI ANANTHKUMAR: Shri Venugopalji, let us not go into this. He can conclude. He is a dear friend. He has made his point. He has spoken for 30 minutes and enlightened us.

HON. DEPUTY SPEAKER: That is left to him.

... *(Interruptions)*

SHRI N.K. PREMACHANDRAN: That is totally misleading. The observation that I have made is that I am actually supporting to save the time. The day before yesterday also, two Statutory Resolutions were in my name. I had suggested to the Chair to have joint discussion so that we could save the time. Today also, I have made an observation and a suggestion to discuss both the Bills together so that we can save the time. I have made a positive suggestion. The hon. Minister has totally misled about the observation which I have made. Since the Minister has said that I have to conclude, I am concluding.

Thank you very much.

मानव संसाधन विकास मंत्री (श्री प्रकाश जावड़ेकर): माननीय उपाध्यक्ष जी, सर्वप्रथम मैं सभी माननीय सदस्यों का, जिन्होंने इस चर्चा में भाग लिया और जिन्होंने यह चर्चा अच्छी तरह से सुनी है, उन सबको बहुत बधाई देना चाहता हूँ:- श्री शशि थरूर जी, डॉ. कंभमपति हरिबाबू, श्री एस.सेल्वाकुमार, श्री सुगाता बोस, श्री बैजयंत जे. पांडा, श्री मुथमसेटी श्रीनिवास राव, श्री चंद्रकांत खैरे, श्री कुण्डा विश्वेश्वर रेड्डी, श्री पी.के. बीजू, श्रीमती बुत्ता रेणुका, श्री जय प्रकाश नारायण, श्री निनोंग इरिंग, डॉ. उदित राज, श्री पी.डी. राय, डॉ. अरुण कुमार, श्री बदरुद्दीन अजमल, श्री रत्न लाल कटारिया, श्री संतोष कुमार, श्री दुष्यंत चौटाला, श्री राजेश रंजन, श्री हुकुम सिंह, श्री अधीर रंजन चौधरी, डॉ. किरिट पी. सोलंकी और श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन जी।

My friends, I am very happy about it because one demand that has come out of it is that we must give now quality education. We have achieved expansion in the last seventy years. The credit for that goes to all the Governments who have ruled this country. The Britishers created postal network; they created rail network and they created some other system. But education was not their priority; and taking the education to the last man was not their priority. This is the priority of the independent India. That is what we have achieved in numbers. Now it is the issue of quality. Therefore, our policy is “सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा” education to everyone. Therefore, after assuming charge, I went first to night schools because they are the deprived class. They need education. What are the aspirations of the poor people? यानी मुझे दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि गवर्नमेंट स्कूल से गरीब आदमी भी वहां की स्थानीय स्थिति देखकर, अपना पेट काटकर बच्चे को अच्छी शिक्षा मिले, इसलिए दूसरे इंस्टीट्यूट की भी च्वाइस करता है, जहां मिड-डे-मील स्कीम नहीं है, जहां यूनिफॉर्म नहीं है, जहां फ्री में बुक्स नहीं हैं, जहां 300 रुपये फीस देनी पड़ती है, But even the poorest of the poor wants his kids to be educated well. That is the aspiration of the poor. Education is a national subject. Education is beyond politics. It is the concern of all of us; it is the duty of all of us. Therefore, we must resolve that we will work unitedly to improve the quality of education. I think, that has emerged as a main point of this discussion.

आपने ड्राफ्ट एजुकेशन के बारे में पूछा- Shri Premachandran has raised this point. There were three questions in Rajya Sabha today and I have answered them. Let

me tell you this thing. By Monday, you will receive some salient points and draft points on education policy, which are there in a policy format. They are available on the website. But for the convenience, we will deliver you all the 43 pages for your consideration. Earlier, the time limit was 31st July. As we are now giving you the hard copy, we will give you more time. By 15th of August, I want all Members to study that and come out with suggestions. That is how, we can improve it.

I have found the same passion and the same urge in all the 25 speeches. So, the nation's will is on display today in the debate and I welcome that.

Let me now tell you what we are doing to improve quality. We must do much more, but we are doing some things. There is an initiative called the Technical Education Quality Improvement for Rs.2600 crore which will now be implemented in 190 institutes over the next four years.

Many hon. Members said that there needs to be immediate upgradation of infrastructure, particularly research infrastructure. That is really the need of the hour. Therefore, we are thinking of a Higher Education Funding Initiative which will go to the Cabinet. The central idea of the initiative is, as the Government has already indicated in the Budget, that we will invest Rs.1,000 crore, and there will be a bank or some other body which will monitor it. That will leverage the funds through market and can provide up to Rs.20,000 crore for upgradation of all kinds of infrastructure. I have already mandated that 40 per cent of that money should be invested in improving the research infrastructure. It is not about roads, buildings and staff quarters; it is basically about improving the research infrastructure. That is what we are taking up.

There is the new IMPRINT India Initiative of the Government of India under the Prime Ministership of Narendra Modi-ji under which we are investing Rs.1,000 crore on Research Assistance. In another project on IIT campuses and NIT campuses. Under this initiative, industry can ask for customised research solutions, there will be students-industry interaction, and that will promote research. There will be incubation centres also for young minds. Even after

graduation they can come to the incubation centres and do more research because that is what is needed.

There is a big issue raised by many hon. Members as regards the private engineering colleges and institutes. Some said that some institutes are getting closed and that is correct. What has changed in the last five years is this. Earlier, there used to be admissions in every engineering college all over the country. But now students are empowered with technology. They see the placement record of the institutes. If the placement record of the institute is good, they take admission. If the placement record is not good, they do not take admission. Therefore, there are closures of certain institutes. That is how market operates. If you are not qualitatively good, you will have to face the music; and if you are qualitatively good, people will appreciate you more. That is how things happen. We want qualitative improvement in all respects. To improve quality, first we must fill all the faculty posts. That gives rise to the question whether people are ready to become the faculty.

Last week I was in IIT Delhi interacting with about 200 Ph.D. students for about an hour on many issues. The first question I asked them was who wants to be a teacher, so that I could start a dialogue with them. To my surprise, more than 120 students raised their hands to say that they want to be faculty members. That is the change in atmosphere that is happening and I am very happy with it.

I organised a programme called Gun Gaurav at my residence last Sunday. Many people talked about Guru Purnima. I felicitated all the teaching community in Parliament on that day. That was not a party programme but a national programme. What was this Gun Gaurav? It was for those students of Delhi who secured more than 90 per cent marks in their Plus-2 examination and secured admission in Delhi University in the first cut-off list in spite of adverse conditions like living in one-room accommodation in slum areas, being children of daily wage workers, being a part of big families, etc. I felicitated those students at my house. Many TV channels have also showed it. I interviewed every student. Many

of them have said that they want to become teachers. That gives us great hope that the future generation is also motivated. We should not think that everything has gone. No. They are motivated and they want to become teachers. We have to give three things- dignity, compensation, freedom and we also have to introduce accountability. Then only we can have good teachers and good teachers should be appreciated. I tell you one example. The village which I adopted in Bundelkhand near Chitrakoot is located on the border of Madhya Pradesh and Uttar Pradesh. गांव का नाम पालदेव है। We went there and I first inspected the school. I talked to the students, I talked to the parents. Then I called teachers together. I asked them, “What is the result in 10th standard?” They said that it was 11 percent. I asked, “What is the result of 12th standard?” They said that it was 28 per cent. I asked them how many students were there. They told there were 350. I said this is a village of 3000 people; it means students are coming from outside the village also. They said students come from as far as four, six or eight kilometres. How do they come? The students, including girls, come by cycles. If they are coming by cycles, it means they have the urge to learn. I said that we must now take up the challenge to improve the percentage and I gave them a target of 50 per cent up from 28 per cent.

I sat with them and organised a 10-day special programme for all teachers through DIET and they were sent to Satna and had very good 10-day training. Then we started remediation classes, we motivated students, teachers and the community. Everybody became involved in school education and in seven months, the result of 28 per cent became 82 per cent. That is how things can happen if teachers decide.

अगर प्राध्यापक, अध्यापक मोटिवेट होकर काम करते हैं तो इससे क्या चमत्कार हो सकते हैं, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मैंने वहां देखा। इस साल भी वहां ऐसा ही हुआ है, यह केवल उसी समय का रिवोलूशन नहीं था। यह केवल एक साल का ही चमत्कार नहीं था। इस साल भी उस स्कूल का 12वीं कक्षा का रिजल्ट 78 प्रतिशत आया है। Now it has stabilized to a next level. ऐसा किया जा सकता है।

इस मंत्रालय का कार्यभार संभालने के बाद मैं पूना गया, तब सभी कार्यकर्ता कहने लगे कि हम आपका स्वागत करेंगे। मैंने कहा - नहीं। मेरे कालेज में जो पूना के प्राध्यापक थे, मैं दो साल वहां पढ़ा, इससे पहले मैं देहात में पढ़ा था। मैंने कहा कि मैं गुरुओं को प्रणाम करूंगा। मैंने वहां गुरु प्रणाम का कार्यक्रम किया।

I am saluting even today all the teaching community because I believe that if they take up the cause, they can change the whole scenario. The basic quality at the primary level is where the real problem lies. The ASER report and other reports and even our own Government's report do not augur well for the quality of education at primary level. Students are ready and if we are not complementing, that is the real issue. Therefore, I appeal to all teachers that they can make a difference to the India story. We will give everything that is needed. Vacancies will be filled. There will be quality training. There will be in-service training and pre-service training; all will be there.

मैंने देखा कि आई.आई.टी. में बच्चों में शिक्षक बनने की ललक है तो मुझे अच्छा लगा। So, faculty and quality have a very important co-relation and we must understand it. किसी ने पूछा कि जी.ई.आर. क्या है? 19 परसेंट नहीं है, बल्कि 24 परसेंट है। हमारा लक्ष्य ज्यादा है। दुनिया की एडवांस कंट्रीज में 50 परसेंट है, वह लॉग टर्म गोल है। अभी हम 30 परसेंट तक तो पहुंचें। हमें हर साल इसे इम्प्रूव करना है। That is why we are going ahead with this programme.

मैं एक उदाहरण देना चाहूंगा। रिसर्च एंड इनोवेशन की बात बहुत लोगों ने कही है और यह बात सही भी है। अगर क्वालिटी है तो रिसर्च है। अगर रिसर्च है तो इनोवेशन है। Kharge ji, in 2000 I was made the Chairman of Working Group on IT for Masses of the Government of India. At that time, I was heading IT Task Force of the Government of Maharashtra. Then we went to Massachusetts Institute of Technology and we negotiated successfully MIT Media Lab Asia project which was a good initiative. At that time, Atal ji was Prime Minister and he committed Rs 1,000 crore for that. After return, he asked me, "Why are we investing Rs 1,000 crore? What is that we are importing?" I said, "We are importing the research culture, research freedom, research value system, and the big power of ideas. That is what we are importing." So, he said, "We also have many research institutes." I said, "Yes, we

have and we are proud of our scientists but still when it becomes bureaucratic, it creates problems. It has to be a free and real research.” That is what we now want to bring.

Hon. Members have talked about PhDs. In our country and in the best of the best countries, you are a PhD holder only if you add something new to the existing knowledge. Compilation does not become PhD. That is how PhDs come. We have taken two important initiatives under Shri Narendra Modi. Under IMPRINT, we are contemplating Rs. 1,000 crore investments. What is that investment for Research projects. In another scheme as I said industries will come up with customised demands for their research requirements. The IITs, NITs, IIMs and all other technical institutes will be involved in doing the research. There will be incubation centres also.

Over the last five years IITs have produced 3000 research reports and 10,000 are in progress. We must attract foreign students. मैं छात्र आंदोलन का प्रोडक्ट हूँ। जयप्रकाश नारायण जी के आंदोलन के समय पुणे विश्वविद्यालय में बहुत-से फॉरेन स्टूडेंट्स आते थे। अभी उनकी कितनी संख्या है, यह मुझे चैक करनी है। लेकिन to be a part of the whole global culture is education by itself. मेरे बेटे ने अभी पी.एच.डी किया, वहाँ 17 लोग थे, वे सभी छः साल एक साथ रहे। वे सभी 12 देशों से आए थे। यह जो होता है, उससे व्यक्ति का एक डायवर्स कल्चर तैयार होता है, एक बेस वाइडर होता है। इसीलिए इंडिया फॉरेन स्टूडेंट्स को भी अट्रैक्ट कर सकता है, वे पहले भी आते थे, आज भी आते हैं, लेकिन और ज्यादा आ सकते हैं। वे आने चाहिए। यह एक्सचेंज बहुत ही महत्वपूर्ण है। इनोवेशन, इंडस्ट्री इंटरैक्शन बढ़ना चाहिए, कस्टमाइज भी होगा, स्टार्ट अप भी होगा और इनोवेशन नहीं करेंगे, तो जैसा कि मैंने शुरू में कहा कि जब तक इनोवेशन नहीं है, तब तक हम वेल्थ जेनरेट नहीं करते, हम रीयल प्रोस्पेरिटी के रास्ते पर नहीं जाते हैं। Quality, good faculty, research facilities and innovation are all linked in that scenario and that is the vision of the Government led by Shri Narendra Modi.

There were some issues raised about NITs. आज एनआईटीज में 19 हजार छात्र हैं। नॉर्थ-ईस्ट के केवल दो राज्यों में नहीं हैं, आठ राज्यों में हैं, क्योंकि अभी तक जो पॉलिसी है, इसे पहले की सरकार ने भी किया था, उसे हमने कंटीन्यू किया है। अभी हर राज्य में एक एनआईटी होनी चाहिए। चूँकि

आन्ध्र प्रदेश का पुनर्गठन हुआ है, इसलिए हम आन्ध्र प्रदेश को यह दे रहे हैं। कुछ लोगों ने कहा कि बिहार में चार एनआईटीज होनी चाहिए। चन्द्रकांत खैरे जी ने भी कहा कि महाराष्ट्र में भी होनी चाहिए। ऐसी सबकी इच्छा है। ... (व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : वे कहते हैं कि औरंगाबाद में होना चाहिए। ... (व्यवधान)

श्री प्रकाश जावड़ेकर : वे औरंगाबाद के लिए नहीं, शंभाजीनगर के लिए कहते हैं। ... (व्यवधान) मैं बताता हूँ, सबको मिलेगा। मैं यही कहना चाहता हूँ, सबकी यही इच्छा है कि हमारे यहाँ एनआईटी होनी चाहिए, यही हमारी क्रेडिबिलिटी है। यही क्वालिटी का प्रमाण है कि एक अच्छे स्तर की संस्था आनी चाहिए और यही सबकी इच्छा है। मैं तो कहूँगा कि आपके मुँह में घी-शक्कर, जल्दी ऐसी स्थिति पैदा हो कि हर राज्य को कुछ ज्यादा देने की क्षमता बने। ऐसा होना चाहिए। लेकिन अभी हर राज्य को एक एनआईटी दिया है और आन्ध्र में जो कमी थी, उसे पूरा किया है। इसमें हन्ड्रेड पर्सेंट फंडिंग होती है। लोगों ने कहा कि इसमें फंडिंग कम है, लेकिन इसमें हन्ड्रेड पर्सेंट फंडिंग है। रिजर्वेशन भी संबंधित राज्य के अनुसार ही होता है, जो शैड्यूल सिक्स में दिया गया है और 50 पर्सेंट रिजर्वेशन होम स्टेट को मिलता ही है। इसमें 220 करोड़ रुपये हमने मॉडर्नाइजेशन के लिए रखे हैं। पप्पू यादव जी अभी नहीं हैं। इसके बारे में दुष्यंत जी ने भी बात कही है, वे कमेटी के तहत श्रीनगर के एनआईटी में गये थे, इसलिए श्रीनगर एनआईटी की स्थिति सुधारने के लिए तुरंत सौ करोड़ रुपये हमने दिये हैं। यह जो 20 हजार करोड़ रुपये का हायर एजुकेशन फण्ड तैयार होगा और उस फण्ड से सभी एनआईटीज़ और आईआईटीज़ की रिसर्च एबिलिटीज़ और बाकी इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी दूर हो जाएगी, ताकि जो इंस्टिट्यूट्स हैं, उन्हीं में एक्सपेंशन हो सकता है। हर बार नये इंस्टिट्यूट्स खोलने की बजाय कभी-कभी एक्सपेंशन की ऑप्टीमम पॉसीबिलिटी भी बिल्टअप करना चाहिए।

चौधरी जी ने कहा कि बजट बहुत कम हुआ है। एनआईटी का बजट वर्ष 2013-14 की तुलना में वर्ष 2016-17 में 23 परसेंट बढ़ा है, यह मैं बताना चाहता हूँ। जयप्रकाश नारायण जी का बोस जी ने उल्लेख किया 'Engineering was not about technology. Humanities and basic science research are very important and I appreciate that.' जयप्रकाश नारायण जी के नाम पर होने वाली नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ ह्यूमेनटीज़ मध्य प्रदेश में होगी और वर्ष 2017-18 से उसका काम शुरू हो जाएगा। इसकी मैं घोषणा करना चाहता हूँ।

अफोर्डबिलिटी की बात भी कही गयी है। Four corners of Education Policy have to be accessibility, quality, affordability and accountability. We have to work within that parameter. अफोर्डबिलिटी में सब ने कहा कि दो लाख रुपये किया गया, लेकिन मैं एक बात

बताना चाहता हूँ कि आईआईटी के एक छात्र पर हम हर साल 6 लाख रुपये खर्च करते हैं। जिस गरीब के बच्चे ने कभी आईआईटी नहीं देखा है, वह भी टैक्स देता है। उस गरीब को भी न्याय चाहिए, जिसके लिए हमने चार प्रावधान किए हैं, जिसमें शेड्यूल्ड कास्ट्स, शेड्यूल्ड ट्राइब्स और दिव्यांग में जिनका रिजर्वेशन है, उनको सारी फीस माफ है। बीजू जी ने जो मुद्दा उठाया है, I will take note of it. I will discuss it with my officers. उसको पहले भरकर रिअम्बर्स करने की जगह क्या किया जा सकता है? We will definitely look into it. But, more importantly, एक लाख रुपये से कम की जिनकी इनकम हैं, जो बहुत गरीब हैं...(व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: IIMs and IITs have increased the fees enormously.

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: IIM is different. I am talking about NITs. It is Rs.1.25 lakh for NIT but we are incurring Rs.2,75,000 expenditure per student. यह भी हमें समझना चाहिए, आखिर हम देश के लोगों के नुमाइंदा हैं। We must understand what the actual expenditure is; what is to be recorded and how to record. हमने एक नया निर्णय किया और यह बहुत क्रांतिकारी है। यह मोदी जी की प्रेरणा है कि गरीब को शिक्षा से वंचित नहीं होना पड़े। जिनकी नौ लाख तक की वार्षिक आय है, उनके लिए शिक्षा ऋण भी मिलेगा और यह ऋण उनके लिए इंटरैस्ट फ्री होगा। यानी चार साल के लिए लोन का समय देखें तो उसमें उस लोन से भी ज्यादा पैसा हम एक तरह से इंटरैस्ट फ्री के रूप में दे रहे हैं, लेकिन यह हमेशा चर्चा का मुद्दा रहेगा। टेक्नोलोजी में हम तीन चीजें करना चाहते हैं। टेक्नोलोजी के माध्यम से शिक्षा सभी को जो स्कूल से बाहर गए हैं, जो कालेज से बाहर गए हैं, जो दूर-दराज एरियाज़ में रहते हैं उन्हें कैसे शिक्षा मिलेगी, इसके लिए स्वयं का इनिशिएटिव ओपन लर्निंग का टेक्नोलोजी के द्वारा टीवी के माध्यम से, इंटरनेट के माध्यम से भी, एनी व्हेयर एजुकेशन, एनी टाइम एजुकेशन की दिशा में जाने का प्रयास किया जा रहा है क्योंकि सभी तक शिक्षा पहुंचानी है, क्वालिटी एजुकेशन पहुंचानी है। स्वयंप्रभा का एक कार्यक्रम है, आईआईटी पाल का कार्यक्रम है, जेईई के लिए आठ लाख, पन्द्रह लाख बच्चे बैठते हैं। उनके लिए भी करना है। सभी कोटा में दौड़ते हैं, लाखों छात्र ट्यूशन में जाते हैं उन्हें भी फ्री में अच्छी ट्यूशन मिले, होम वर्क मिले, ट्यूटोरियल मिलें। बहुत बच्चों को कोचिंग सेंटर न जाना पड़े इसके लिए भी नए इनिशिएटिव्स को हम तैयार कर रहे हैं।

लास्ट में मैं इतना कहना चाहूंगा कि हमारे साथी जयप्रकाश नारायण जी ने कहा कि नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय की कितनी बड़ी विरासत हमारे पास है। परसों ही यूनेस्को ने नालंदा को वर्ल्ड्स कल्चरल हेरीटेज के रूप में मान्यता दी है। मैं इतना ही कहना चाहूंगा, yes, India is proud to be a

great knowledge centre in history and we will, all of us, again take pride in making this great nation a knowledge hub.

Thank you.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Sir, only one thing is that SC, ST and OBCs will get free seats. At the time of admission, they have to pay the fees and the Government will reimburse after 8-9 months. That is why, many poor people will not be able to get admission. क्योंकि पहले तो वे कहां से दो-ढाई लाख रुपये लायेंगे, वे नहीं ला सकते। इसीलिए आप उन्हें एडमिशन दीजिए, उन्हें गवर्नमेंट से रीइम्बर्स होने दीजिए। कोई गरीब दो लाख, ढाई लाख या कुछ भी पैसा, जो आप फिक्स करेंगे, वह नहीं दे सकता तो उसकी एडमिशन चली जाती है, फिर बाद में वही सीट जनरल लोगों को दे दी जाती है on the pretext that they have not taken admission, that is why, it goes to general quota. इसलिए एक तरफ रखकर दूसरी तरफ से नहीं निकालना चाहिए। आप एक जेब में दे रहे हैं और दूसरी जेब से निकाल रहे हैं।

इसीलिए मेरी रिक्वेस्ट है कि आप एडमिशन दीजिए, उसे आप गवर्नमेंट से रीइम्बर्स कर लो। You can do it directly.

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: As far as NIT and IITs are concerned, it is a fee waiver and not reimbursement. It is a complete fee waiver for Scheduled Castes, Scheduled Tribes and persons with physical disability or as we call them Divyang and up to the income of Rs.5 lakh, there is two-third waiver. So, they have to pay only Rs.60,000. So, we have graded it. It is a graded fee structure and not a uniform Rs.2 lakh effectively. So, there is no case of reimbursement. Mr. Biju for IIT and NIT, it is fee waiver.

SHRI MOHAMMAD SALIM (RAIGANJ): I am happy. There was a positive discussion and you have replied to that also. You have given much importance to research. Now most of the middle class people refrain from going for research because the scholarship is not distributed on time. For example, Dr. Sarvapalli Radhakrishnan Research Scholarship for post-doctoral is stopped since March and only the day before yesterday, they received it. It is good. I have raised this matter time and again. I pointed it out to your predecessor also. All these

scholarships for the research scholars – Ph.D. and post-doctoral – should be reimbursed timely. Otherwise, those who are going for jobs, are getting monthly salary and those who are going for research, get the money once in six months or one year. So, that backlog should not be there.

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: I will definitely look into it.

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

“That the Bill further to amend the National Institutes of Technology, Science Education and Research Act, 2007, be taken into consideration.”

The motion was adopted.

HON. DEPUTY SPEAKER: Now we will take up clause by clause consideration of the Bill.

**Clause 2 Amendment of First Schedule to
Act 29 of 2007**

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri Adhir Ranjan Chowdhury – not present.

The question is:

“That clause 2 stand part of the Bill.”

The motion was adopted.

Clause 2 was added to the Bill.

Clause 1, the Enacting Formula and the Long Title were added to the Bill.

HON. DEPUTY SPEAKER: The Minister may now move that the Bill be passed.

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: Sir, I beg to move:

“That the Bill be passed.”

HON. DEPUTY SPEAKER: The question is:

“That the Bill be passed.”

The motion was adopted.

HON. DEPUTY SPEAKER: The House stands adjourned to meet tomorrow, the 22nd July, 2016 at 11.00 a.m.

18.45 hours

*The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock
on Friday, July 22, 2016/Ashadha 31, 1938 (Saka).*
